

अगारों की मौत

श्रीधरसुंदरपाल सक्सेना

नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बोकारनेर

पहला संस्करण

प्रकाशक	मनसुग ग्रन्थ बुटीर बीकानेर
मुद्रक	एडुकेशनस प्रेस बीकानेर
मूल्य	४०० मए पीसे

आमुरव

सुना या कन्हाईलाल दत्त ने मुसबिर नरेन्द्र गाछाई को अलीपुर बेल में गोलियों का शिकार बनाया और इस सफलता की खुशी में पंजी पर चढ़ते चढ़ते उनके शरीर में कई पोंड लूट गई गयी । उस अमर शहीद की शव-यात्रा में कलकत्ते की सड़कों पर इतने फूल बिछे थे जितने उन सड़कों ने फिर कभी नहीं देखे ।

वही पुरानी स्मृति उस दिन छाकर हा ठठी जब लाहौर से कलकत्ते तक का संपूर्ण रेलपथ फूलों से ढक गया । अमर शहीद जर्जिनबाघ का शव रेल के एक डिब्बे में लाहौर से कलकत्ता ले जाया जा रहा था । इलाहाबाद स्टेशन पर हम सब ने मरे हुए हड्डियों से अर्धांगलि स्वरूप फूलमालाओं के छाप छाप अगणित अभुहार भी उस मारत माँ के लाल की पवित्र अर्धी का समर्पित किये थे । 'इम्फ़्लाय किन्दाबाद' के नारा से उस दिन भारत का आकाश गूँज उठा था ।

वह समय था जब ब्रिटिश शासन भारत में कई झोर से खतरों का सामना कर रहा था । बोलशेविकों को दबाने के लिए उसने मेरठ पब्लिक का सूत्रपात किया था । क्लिबवादिनों को निमू ल करने के लिए दिल्ली और लाहौर में मार्चे लगाये थे । शक्ति और अहिंसा के सैनिकों से निबटने के लिए भी वह मुर्खी से अपनी शक्ति और सेना का उपयोग कर रहा था ।

उन्हीं दिनों एक मध्यपूर्व का आग की तरह वह समाचार इलाहाबाद के बाठाबरण में फैला कि क्लिबवादिनों के प्रधान सेनापति अमरोत्तर आगाव अफ़कोड पाक में अथेले सुविद्य-दत्त से

मार्च केते-लेते क्यशाही हुए हैं, तो एक हलाकत बन गई । कनता बे-समय पार्क की ओर दौड़ पड़ी परन्तु पुलिस ने सारे गार्ड रोक रखे थे । वहाँ पहुँचना सम्भव नहीं था और तभी सम्भव हुआ जब उस हीराने सेमली की धनुक निरानेबाबी के कोई आशरोप बहाँ रहने नहीं दिये गये । पुलिस ने उस हृद को भी बड़-मूढ़ से ठकाड़ दिया जिसकी क्षाम सखे वह भीर निरनिद्रा में खेना था, परन्तु आषाद को कनता के हृदय से उसाड़ घकने की कुरत किसी पुलिस या सरकार को न हुई । अरुक्त व पार्क की कपा कपा भूमि बतनपरस्तों का तीय बन गई और वह उस दिन से आषादपार्क के गाम से अमर हो गया ।

इस नाटक में इन सारी स्मृतियों का संबोने का प्रकन किञ्च गया है परन्तु नाटकीय सुनिष के लिए भटनाक्रम में, घटमात्स्यों में और पात्रों में भी आवश्यक हेरफेर कर लिया गया है । देश कल और पात्र तीनों के संकसन में वह अन्न बराबर रक्ता गया है कि कल्पना इतिहास पर अथवा इतिहास कल्पना पर एकान्त रूप से हावी न होने पाये और यह इच्छित्य सम्भव हो सका है कि आचार प्रथों में कपावस्तु के लिए प्रचुर धाम्मी प्राप्त है । अरु उन सभी खेलकों का हृदय से आमार प्रवर्तित करना आवश्यक है जिनके बिना इस नाटक में स्वामासिकता की प्राय प्रतिष्ठा किसी तरह इस रूप में सम्भव न होती । यदि कुछ कमिष रही हैं तो उनका उच्छदासित्य छोड़े बिना भी निस्तार नहीं है ।

रघुवा काल
बनवरी १९६१

अगारों की सौत

[नाटक]

नाटक के पात्र

प्रमुख पात्र

नाम	दल का नाम
भगतसिंह	बलवंत रसजीत
सुखदेव	
राजपुत्र	रजुनाथ
बदुकेहरदत्त	मोहन
शंभुशेखर आखाड	पंडितजी
अयबतीचरसु	बाबू भाई, हरी भाई
अयबानदास	कंतास
असपाल	छोहन
बिजयकुमार सिग्हा	बन्धु
बैद्यम्भायन	बचन
अश्व बर्मा	अभय
कंताअपति	कालीचरसु
सुमीला	बीबी
दुर्गा चौहरा	भानी
अयदेव कपूर	हरीअ
महावीर सिंह	टाकुर भाई

ध्वान्तर पात्र

पल्लोहा संकर विद्यार्थी जयगोपाल हंसराज ओहरा धन्वन्तरी
सुरेन्द्र पांडे मया प्रसाद तुलसीदास धर्मबिहारी, मदनगोपाल
मोतीलाल मेहता मदनमोहन मालवीय बामनजी इलास बिन्स शेरार,
आर्ब सुन्दर, पंजाब के यवनेर के उन्नाम आदि आदि

घटनाओं के स्थान

काणपुर, आगरा गाज़ीर कनकता दिल्ली लई बिस्ती
सिमला श्रीर इलाहाबाद

दृश्य दूसरा

कानपुर एक मुन्नाज बस्ती में दुगला सा मकान
साबंकास (स्त्री) सन् १९२६ की ग्रीन बन्धु

('हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ग्रामी' के कार्य को काफ़ी दृढ़
उर्ध्वती के निमन्त्रितों में हुई साधियों की निरपत्तारी से काफ़ी क्षति पहुँची
है । उसे फिर से संवर्धित करने और घागे बढ़ाने पर विचार करने के
लिए बल के तबस्य दूर दूर से घाये हैं । मण्डलसिंह मुन्नाज चन्द्रोत्तर
घागाद भगवती चरण शिबबर्मा बिजयकुमार सिन्हा फलीग्र घोष
शासिगराम बटुकेश्वरदत्त घादि घादि । साथी एक एक कर घाते और
घपना स्वान पहलु करते हैं । अमेरे कमरे में केवल मौमबली का हस्का
प्रकाश है । उपस्थित साधियों के बेहरे साठ साठ पहचाने नहीं जाते ।
एक गहरी घामोघी में कमरे का बाठाबरल हुआ हुआ है ।)

बिजयकुमार : (लड़े होकर) हम समझते हैं अब काम
धारम्भ होना चाहिए ।

चन्द्रोत्तर : अबस्य ।

विजयकुमार : इस कमरे में जैसी सामोथी और तारीकी छाई है वैसे ही आज हमारे जीवन में भी भर गई है। हमारे सबे मुठ का यह एक विश्वान्त्रिकाल है। साथी जो हमसे बिछड़ गये हैं वे फिर मिलेंगे कि नहीं नहीं वह सकते परन्तु देश की आजादी का जो प्रथम हमने लिया है वह अंतिम समय के रूप में हमारे सामने है। उसे हमें पाना है। इस पाने की चेष्टा में हम बहुत से साथी जो चुके हैं बहुत से सोमेंगे परन्तु हमारा मुठ खापी रहेगा। शत्रु का घातबल हम में से हर एक को खरम कर सकता है पर वह उस मुठ को खरम नहीं कर सकता जिसे हमने छेड़ा है। वह जारी रहेगा। देश की आजादी का क्षण आये वह किसी ही दूर हो हमारे करीब था रहा है। इसी प्रयत्न विश्वास को लेकर हम यहाँ इकट्ठा हुए हैं। मुठ के इस बियाति काल में हम भावी मुठ का एक नक्का बना लेना चाहते हैं। उस नक्के की रूपरेखा हम सब साथ यहाँ तय करेंगे।

(वे अपने स्थान पर बैठ जाते हैं ।
 चाणोत्तर बोलने लगे होते हैं ।)

चाणोत्तर मैं अपने आपको आजादी का एक सिपाही
 मर मानता हूँ । युद्ध के जिस मोरचे पर
 सड़ने का आदेश हो मैं तैयार हूँ । उल्लेख
 तिस मर भी सिसकने की बात आप नहीं
 सुनेंगे, चाहे इस शरीर की बोटी बोटी मैदान
 में बिखर जाय । परन्तु युद्ध का नक़्सा तैयार
 करना आप सब साधियों का काम है । आप
 जिन्होंने दुनिया की क्रांतियों के इतिहास
 पढ़े हैं, वही यह सब कर सकते हैं ।

(चाणोत्तर अपना स्थान छोड़ कर खेते हैं ।
 भगतसिंह बोलने के लिए उठते हैं ।)

भगतसिंह साधियो, हास की घटनाओं ने हमारे संगठन
 को भारी क्षति पहुँचाई है । सब तरह के
 प्रभावों से हम बिर गये हैं । बहुत दिनों के
 हमारे प्रयत्न अस्तव्यस्त हो गये हैं परन्तु
 इससे क्या हम हताश हो जायेंगे ? ऐसा होता
 तो हम यहाँ इकट्ठे न हुये होते । हमारे दिम
 और दिमाग जिस पवित्र उद्देश्य के लिए कुछ
 संकल्प हैं वह इतना ऊँचा और मजबूत है कि

हम उसे छोड़ नहीं सकते। इस निश्चय के प्रति हम में से किसी के दो मत नहीं हैं। अब सवास सिर्फ इतना ही रह जाता है कि हम वर्तमान स्थिति में काम का बंटवारा कैसे करें जिससे हमारे कामों में सामंजस्य बना रहे ? हम धीरे धीरे कर भी ऐसा करें कि 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी' का नाम मार्चक हो जाये। धर्म जाति धीरे धीरे प्राप्ति की सीमाएँ हमारे काम में बाधा न पहुँचा सकें।

(अंगारों के बार मुझसे बोलने लगे होते हैं ।)

मुझसे : आपके साथियों हमारी नींव का आधार इतने धीरे धीरे व्यापक संगठन है। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हम अपनी संस्थाओं का जाल बिछा रहे ताकि जबरन पड़ने पर जिस ठार को हम साहौर में झूटें वही दिल्ली, आगरा कानपुर धीरे कलकत्ते में भी मंडूत हो सके। इसके लिए मेरा सुझाव है कि सब साथी अपने अपने प्रदेश में जाते ही

किसी न किसी विशिष्ट नाम से सगठनों का आस बिछा दें । पंजाब का डिम्मा में सेठा है । पाब से छ माह बाद कोई ऐसा कस्बा नहीं मिलेगा जहाँ हमारी गीबवान भारत सभा' का संगठन न होया । हिन्दुस्तान रिपब्लिकन धार्मी से मिला कोई भी नाम रख कर कार्यारंभ किया जा सकता है । हर प्रदेश में असग नाम रखकर भी काम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन धार्मी का ही होगा । इससे हमें सुविधा रहेगी । सभु के सार्वबैधिक धाक्रमण से हम कुछ दिनों तक बचे रहेंगे । एक भविष्यवाणी मैं आप लोगों के सामने कर देना चाहता हूँ कि यदि हमने सफलता पूर्वक इस तरह के खुस सगठन सारे देश में काम्य कर लिये तो हम सोक-सपक के रूप में प्रजेय सखि का संघय कर सेंगे परंतु उस हासत में देश का नेतृवग हमारे विरुद्ध हो सकता है । बहु जनता में हमारे संगठन क प्रति धमारमक प्रचार पर उठर सकता है । इसका साम उठाकर सभु हमारा समन कर

[अंगारों की नीत

सकता है। अतः हमें परायों से डर तो है ही
अपनों से भी डर है। इन सब बातों के प्रति
सजग रह कर ही काम किया जाता है।

(इसके बाद बटुकेश्वरदास बोलते हैं।)

मेरा सुझाव है कि प्रांतीय संगठना के लिए
स्वच्छा से साथी लोग अपने अपने नाम दे
दें और यहाँ से जाते ही काम शुरू हो जाय।
मेरा यह भी सुझाव है कि इन संगठनों में
एक-सूत्रता बनाये रखने के लिए श्री बिजय
कुमार और भगतसिंह समय समय पर सब प्रदेशों
में घाते जाते और परामर्श देते रहें। बंगाल
बिहार में 'अनुशीलन' और 'भुगाम्तर'
समितियाँ अपने लोकप्रिय नामों से ही काम
करेंगी।

(इसके बाद छत्तीसगढ़नाथ सुझाव रखते हैं।)

छत्तीसगढ़नाथ : यह तो संगठनात्मक पहलू की बात हुई।
मेरा सुझाव है कि एक बार एक-एक सीमिक
रूप को सूत्र विकसित किया जाय। इसके
लिए साथी अंदरूनीर आजाद को प्रधान
समापति नियत करके व्यापक अधिकार दिये

नाम । सस्त्रबल का मुकाबला करने की हमें कमी भी जरूरत पड़ सकती है । हर समय सज्जित रहने की आवश्यकता है ।

(इतने प्रस्तावों के बाद समा विचार-विमर्श के लिए जठ जाती है । सभी गणसभ करने के लिए मकान के भिन्न भिन्न भागों में विचार जाते हैं । केवल भगतासिंह मोमबत्ती के प्रकाश में कमरे में टहलते टहलते आत्मनिरीक्षण में वृत्तबिस्त रहते हैं ।)

भगतासिंह

कप्रेस द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस ले जाने से देश में मुर्दनी छा गई थी वह तो कुछ दूर हुई है । काकोरी की घटना जरूर कुछ सुख रंग लायेगी । सामियों को गिरफ्तारी बेकार नहीं जा सकती । इस वक़्त हम एक गहरे संगठन की भीव डाल सकते हैं और जनसंपर्क की दिशा में एच. आर. ए. को से जा सकते हैं । बिना जनसंपर्क के शक्तिशाली संगठन संभव नहीं । जनसहयोग के बिना हम कोई भी महान काम करें उसका मूल्य ही क्या ? इसके प्रस्ताव लोगों को हमारे

[अंधारों की नींव

उद्देश्य के संबंध में भी तो कुछ जानकारी
होनी चाहिए। कोरे धार्तकवाद से बुध्मन
को ही साम है। वह किसी भी वृक्षसत्तापूर्ण
दुष्टत्व के साथ हमारे नाम को जोड़ सकता
है। सोगा में हमारे नाम धीर काम दोनों
प्रति घुणा फैसा सकता है।

राजगुरु : (एक कोने में से) वस रणजीत तुमने मेरे
मन की बात कह दी है।

भगतसिंह (चीककर) धरे रघुनाथ तुम 'तुम बाहर
महीं गये ?

राजगुरु : रणजीत श्रुत न हो। मैं भी तुम्हारी तरह
बिन्ता में जस रहा हूँ।

भगतसिंह (हँसकर) पर फफोस तो नहीं उठे दिखसाई
नहीं पड़ते।

(इधर उधर इधर नीचे बैठने का अभिन
करते हैं।)

राजगुरु : फफोस देखने हैं तो वे भी देखसो।

(अपनी कमीज ऊपर उठाकर धाती खोल
देता है। धाती में तीन बार ताजे
कड़ोने मजूर घासे हैं।)

भगतसिंह (धीकृत होकर) रघुनाथ !

रामगुरु (साधारण स्वर में) रणजीत !

भगतसिंह : मुझे जमा करो माई ।

रामगुरु : किसलिए, तुम्हारा अपराध ?

भगतसिंह मैंने तुम्हारे ऊपर हीन ब्यय किया इसका मुझे पछतावा है ।

रामगुरु : बस छतम हुई बात ।

(भगतसिंह की पीठ बपबपाता है ।)

भगतसिंह और ये फफोले...सब बताना रघुनाथ ।

रामगुरु कोई बात नहीं । क्रांतिकारियों पर पुलिस के जुल्मों को बात चल पड़ी थी । तपे हुए सोहे से असाने में कितना दद होता होगा मही जानने के लिए परीक्षा कर देखी । बस, और कुछ नहीं ।

भगतसिंह तपे हुए सोहे को छाती से लगाकर परीक्षा ~

रामगुरु : हाँ सिर्फ परीक्षा ।

भगतसिंह तीन तीन जगह ?

रामगुरु यह जानने के लिए कि यत्रणा सहने की ताकत भी है इस धरीर में ?

भगतसिंह : किसा ने रोका नहीं तुम्हें ?

राजगुरु : सँडसी को छीन लिया पूरा मजा भी तो नहीं लने दिया ।

भगतसिंह : सहाय्य को बरण करने का तुम्हारा अधिकार मैं मानता हूँ पर इस तरह अपने को हसाक करना बेजा है । लाघो देखूँ । बाबों पर अभी तक कुछ मगाया भी नहीं ?

(कुछ धीरे धीरे से राजगुरु को पकड़ते हैं । उनकी कमोज उठाकर फिर बाबों के बैठते हैं । मरहम लेकर लपकते हैं । शिवबर्मा का प्रवेश ।)

शिवबर्मा : क्यों भाई ?

(राजगुरु तिरस्कृत है ।)

भगतसिंह : देखो इस अपने रखोदये को । छाती को बाग कर घेर्य की पत्थेला करता है ।

शिवबर्मा : मैं जानता हूँ सहाय्य क बेताय घाघि राजगुरु को मदी नहीं रभुताय को ।

राजगुरु : मैं प्रदास्ति मुमने भामा हूँ यहाँ ।

भगतसिंह : मे तो तुम्हारी बेवफूफी पर हँस रहा हूँ और तुम उसे प्रदास्ति समझ रहे हो । बाह क्या बुर ।

(शिव और भगतसिंह हैंते हैं । राजगुरु
बड़ होता है ।)

राजगुरु : बेसो रणजीत खरा सीरिपस बनी ।

भगतसिंह : किस तरह ?

राजगुरु : तुम जो कह रहे थे कि दुश्मन किसी से भी
धार्तकवाद के काम करा कर हम क्रांति-
कारियों के नाम पर जोड़ सकता है ।

शिवबर्मा : हाँ इस तरह वह जनता में हमें बदनाम कर
सकता है ।

भगतसिंह : और हम क्रांतिकारी खुसे रूप में उसका
विरोध नहीं कर सकते । विरोध भी करें तो
कोई हमारा विश्वास नहीं करेगा ।

राजगुरु : विश्वास तो हम अपने कामों से करा देंगे ।

शिवबर्मा : पर हमारे कामों को जनता के धामे बिकृत
करके पेश किया जाता है ।

भगतसिंह : दस के नेता भी हम से भय खाते हैं । वे
नहीं चाहते कि अपने कामों से हम उनके
नेतृत्व को फोड़ा करके पायें ।

शिवबर्मा : हमें बदनाम करन में ये भी दुश्मन से मिस
जाते हैं ।

भगतसिंह : हमें नेताओं की परवाह नहीं पर इससे जनत
गुमराह होती है ।

राजगुरु इसके प्रतिकार के अभियान का नेतृत्व कर
के लिए मैं तैयार हूँ । आप इस के सामने
इस प्रश्न को रखें । बेशक मेरा नाम
से दें ।

(भगतसिंह मुस्कराते हैं । राजगुरु उचककर
भगतसिंह की मुझ-मुझ की बोलते हैं ।)

शिबबर्मा पर वह अभियान क्या हो ?

राजगुरु : दुश्मन से कोई घायी युवा मोर्चा ! घाटो-
मेटिक कोस्ट मेरे हाथ में रहे जो फिर देखो
क्या करामात दिखाता है । इस का नाम छोरे
वेश में राशन कर देता है ।

(इसी समय सब द्वारों से साथी लोग घाला
प्रारंभ करते हैं और अपने अपने स्थान
पर बैठते जाते हैं ।)

भगतसिंह : साथी सुखदेव का सुझाव हमें पसन्द आया
है कि जनसंपर्क के लिए एच. एच. ए. के
साथ गुप्त और व्यापक संगठन की आवश्यकता
है । यह भिन्न भिन्न नामों से भिन्न भिन्न

प्राप्तों में काम करे । लोगों को हमारे उद्देश्यों से अवगत कराये । गसनफहमियाँ दूर करे । क्रांतिकारियों को वे हथपारा न समझें । उनके देश प्रेम उनके बलिदान उनके महान उद्देश्य के यथाय रूप को ठीक ठीक धाँके । अपने उद्देश्य को शिक्षित वर्ग के प्रागे धौर अधिक स्पष्ट करने के लिए मेरा दूसरा सुझाव है कि 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन धार्मी' को प्रागे से 'हिन्दुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन धार्मी' नाम दिया जाय ।

शासिगराम : (बाबा बेकर) यह सुझाव अमाग्य है । इससे जनता में भ्रम फसेगा ।

बाबाबेकर राजाब : एच धार ए के साथ काकोरी के सधियों का इतिहास जुडा हुआ है । उस नाम को हम कैसे बदल सकते हैं ?

भवतसिंह : मैं मानता हूँ परन्तु हम 'सोशलिस्ट' शब्द द्वारा उस पर्व को उठा लेना चाहते हैं जिससे लोगों को शंका हो सकती है ।

शासिगराम : क्या इसके लिए रिपब्लिकन शब्द काफी नहीं है ? लोकतंत्र के सिवा हम अपनी

तानाघाही स्थापित करने के लिए सड़ रहे हैं
ऐसा भ्रम किसी को कभी हुआ है क्या ।

भगवत्सिंह : लोकतंत्र के बहुत से रूप हो सकते हैं ।
और जब शासन प्रणालियाँ बदलती हैं तो
प्रतिक्रियावादी ताकतें इनकलाकी लबाकों में
घाकर सत्ता को अपने हाथों में ले लेती हैं
और 'शक्ति' के महान उद्देश्य को विफल कर
देती हैं । हम इस संघोषित नाम के द्वारा
बता देना चाहते हैं कि हमारा दस
'समाजवादी लोकतंत्र' की स्थापना के लिए
क्रियाशील है । यह बेबस हथारों का गिरोह
नहीं है और न यह कोरे बेकार युवकों का
ही संगठन है जिनके सामने भावी भारत की
आदर्श समाज-व्यवस्था का कोई बिज नहीं
है ।

शत्रुघोष : एक दाय्य जोड़ने में कुछ नहीं है । पर इससे
दस में ओ यश कमाया है वह अपने में न
पड़ जाय ।

सुसोम : हम कोई नया संगठन नहीं बना रहे ।
'समाजवादी' दाय्य जोड़कर उन लोगों के

प्रागे अपना उद्देश्य स्पष्ट कर रहे हैं जो हमारे 'सोकतत्र' के रूप के प्रति संकाशील हैं ।

विजयकुमार : साची रणजीत के सुभाव को मान लेने में कोई ह्म नहीं है ।

शासिगराम : सगठन का नाम जिसके हेतु हमारे अनेक साधियों ने प्राणों का उत्सर्ग किया है हमारे लिए एक पवित्र धरोहर है । उसे बदलने का अधिकार मेरे विचार में किसी को नहीं है ।

बटुकेश्वरदास : जहाँ तक भावुकता का प्रश्न है साची शासिगराम ठीक कहते हैं किन्तु जहाँ यह प्रश्न का सवाल है कि हम देश में कैसा शासन चाहते हैं हम किस प्रतिम लक्ष्य के लिए लड़ रहे हैं हमारे समिदान का नाम किसे मिलेगा, वहाँ साची रणजीत का सुभाव काफी वजन रखता है ।

फणोग्रामाथ : ठीक यही बात है ।

मगतसिंह : लहीवों की पवित्र धरोहर में तो हम यह शक्य जोड़कर कुछ वृद्धि ही कर रहे हैं । उनके पक्ष को हल पीर अधिक उल्लेख

विद्यार्थीजी प्रबन्ध कर लिया होगा ?
 मिश्रजी कहाँ ? देवम पाँच मी हो पाये हैं ।
 विद्यार्थीजी केवल पाँच सी ?

(चित्तिय मुभा)

मिश्रजी केवल पाँच सी ।

विद्यार्थीजी : (एक पर्ची केब में से निष्कालकर देते हैं ।) इसे
 किसी के हाथ भेजिये तो सही ।

मिश्रजी (पर्ची लेकर) क्लृप्तचन्द्र दो पार इन्हें पहले
 मी

विद्यार्थीजी : प्रताप बन्द नहीं करना है तो फिर एक बार
 सही । जैसे पहले दिया वैसे इस बार भी
 दोगे ।

मिश्रजी अंगारी हुकूमत रहेगी तब तक प्रताप पर
 संकट घाया ही रहेगा ।

विद्यार्थीजी प्रताप' संकटों में ही जन्मा और संकटों में
 ही बन्ना हुआ है । संकटों से जब उसे मम
 नहीं रह गया है ।

मिश्रजी हुकूमत प्रताप' को गनाइ कँकले पर तुमो
 येगी है ।

विद्यार्थीजी और प्रताप' भी उसे समझ पार मेक देने के
 लिए हव सकला दे ।

मलषुतुी (डुसुतुतुन कल रलतुी लुकुत डललल ।)
 ललषुतुी (हलष डडलकुर रलतुी लुकुत हलसुतलधर कलरुतु डुीर
 ललषुतुी डलडुतुे हू) डक डुरलषुतु डुी हडलर ।
 (हड डुडल डुसुतुतुन कल डुरलषुतुन)

वलषुतुी (लुीडडुकुे) ए ।

मलषुतुी डुह लुीडुलए डुुरे डुी हडलर कल डुरलषुतु ।
 (डुरलषुतु वलषुतुी डुी कल डुुरे लल डुकुे हू ।)

वलषुतुी डुीर डलतल कल नलड डुी नहूी !
 मलषुतुी नहूी डुरलषुतुन । डनतल डनलडन नुे डलसे
 डुलतुी से डुगल ललडल हू डुह डुरलषुतु डर नहूी
 डकुकुतल ।

वलषुतुी डनतल कल डुरलषुतु नलरुतुी डुी हू ।
 मलषुतुी ऐनल हूी डुीगल । डड डुे डलनुे कल डलरुवलरुडु
 कुे ललए डलतल हू ।

वलषुतुी डुरलषुतु' डर लुीग हूतुने डलडल हू ।
 (ललषुतुी डडलसे डुीर डडुुरे ललषुतु डुी डुरल कलरुतु
 कल डडरुडन कलरुतुे हू । डतुी लडडुए एरु हूड-डुडडलरुी
 डडनडुी लुीडडलत डुरेडुग कलरुतुल हू ।)

डुलडनुुकु वलषुतुी डुीडलनु डुी डुी नडसुतुे ।
 (डुरलषुतु डुकुतुडु) डडलतु डहलडडु ! कलहुडुे

विद्यार्थिनी : भई, तुम्हें किस नाम से पुकारना होगा ?

प्रागन्तुक : मुझे यमवन्त कहियेगा ।

विद्यार्थिनी : अर्द्धा तो दमवन्त भाई मिथजी से जस्वी
मिस लोमिसे । नही तो ये साहुर निकस
जायेंगे ।

(अमरवन्त का अतिशयन करते आना
विद्यार्थिनी का मिथजी का मल करते
ही मिथजी का आना ।)

मिथजी (पर्वी सामने पटक बैठे हैं ।) यह क्या करते
हैं आप ?

विद्यार्थिनी : (मुस्कराकर) क्यों क्या हुआ ?

मिथजी : एक अजनबी को प्रताप की आक का नाम ?

विद्यार्थिनी : हाँ यही तो ।

मिथजी : आप उससे परिचित हैं ?

विद्यार्थिनी : जदर ।

मिथजी : कौन है यह ?

विद्यार्थिनी : एन विशद्वर देश मछ युवक ।

मिथजी : वस-सेया की दो चार घातें कहीं घोर आपने
विदबाय कर लिया । कई बार हो चुका है
आप अर्द्धी तरह जानते हैं । प्रताप-कार्यालय

में बिना जाने पहचाने लोगों को रखने का
सतरा हम उठा चुके हैं। इसलिए कहता हूँ।

विद्यार्थीजी : पर इस बार नहीं उठायेगे।

(मुस्कराएँ)

मिथली : आपको विश्वास है।

विद्यार्थीजी : हाँ पूरी तरह। मेरी आँखें इस मामले में
धोखा नहीं खा सकतीं।

मिथली : फिर भी डाक के भसावा और काम क्यों न
दे दिया जाय ?

विद्यार्थीजी : मेरे कहने से एक बार और सतरा उठा
लीजिये।

मिथली : अच्छी बात है।

विद्यार्थीजी : सतरा उठाने से आप घाटे में नहीं रहेंगे।
अनता अब तक प्रताप की पीठ पर है तब
तक सतरा भी उसके लिए बरदान बन
जायगा।

मिथली : आपने उसकी आँखों में पड़ लिया है तो मुझे
क्रुद्ध नहीं कहना है।

विद्यार्थीजी : वहाँ सदाय होना है वहाँ जी अगमगाथा है।
फिर पुलिस के गुर्गे खिपे नहीं रहते। उन्हें

दूर से ही परस सेने की दृष्टि मेरे अंदर पवा हो गई है।

मिथली : सब ठीक। मैं जाता हूँ।

(प्रस्थान)

बिद्यार्थीजी : देस के शीधानों को प्रताप कार्यालय में जमह न मिसेगी तो कहा जायेगे ? (फिर कलम उठाकर लिखने लगते हैं। बसबंत धाता है।)

बसबंत : एक बात कहना भूल गया था।

बिद्यार्थीजी : (काम रोककर) यह क्या ?

बसबंत : मैंने जो कुछ कहा है उस पर आप बिस्वास कर सकते हैं।

बिद्यार्थीजी : हाँ हाँ सुभे तो बिस्वास ही है।

बसबंत : यहाँ ऐसे जो बहुत से लोग धाते होने -

बिद्यार्थीजी : हाँ बकसर। पर मैं उन्हें भाप लेता हूँ। तुम्हारे बारे में तो मैं इस तरह की कल्पना भी नहीं कर सकता।

बसबंत : यह मेरा सीभाग्य है।

बिद्यार्थीजी : काम भिस गया ?

बसबंत : भिस गया। मैंने समझ लिया। उसके ससाबा घोर भी काम आप से सकते हैं।

विद्यार्थीजी वह सब बाद में देखा जायगा । बठकर तय करेंगे । तुम्हारी रुबि का भी ध्यान रखना पड़ेगा ।

बलवंत मेरी रुबि ? प्रताप कार्यालय में भाङ्गू सगाने से लेकर हर काम में मेरी रुबि है ।

विद्यार्थीजी : (मरगद होकर) तुमने सेवा के मर्म को समझा है । मैं प्रसन्न हूँ । (प्रजापक कुछ स्मरण हो आने से) समय हो गया है । मुझे मजदूरों की एक समा में पहुँचना है । तुम यहाँ बैठो और आनेवालों से परिषय करो । इससे तुम्हें कुछ करने का अवसर मिल सकेगा ।

(विद्यार्थीजी का आना और बलवंत का कुर्सी पर बँटना ।)

बलवंत (रेक पर से 'प्रताप' की काइल उठाकर उस पर मजर डौङ्गले डौङ्गले विचारलीन हो आता है ।)
मैं मगतसिह इस समय कामपुर में, प्रताप कार्यालय में बसवत बना बँठा हूँ । उधर घर में सोब हो रही होगी । पर क्या मैं विबाह बंधन में बंध जाता ? पिता, माता,

दादा सभी का दबाव और मैं झकेला । मेरे लिए घर छोड़ने के सिवाय उपाय ही क्या था ? उन्हें यतना जकरी था कि मैं घर यनाम के लिए नहीं देश बनाने के लिए पैदा हुआ हूँ । ऐसा ही योग था । सभी तो देश-सेवकों के घर में अग्न्या । दासता कासेज में न पड़कर ही उ वी कासेज में पड़ा । अरहयोग में बूदा । नेसनस कासेज में गया । नये रंग और नये बिचारों की दीक्षा सी । भगवतीचरण रात्रपुरु सुतदेव यद्यपान जैसे छापी मिले । यह सब होना ही था । मगत सिंह का रास्ता ही दूसरा था । भान बसवंत बनकर मैं प्रताप कार्यालय में आ बैठा हूँ । यह मेरे मनमाफिक स्थान है । यहाँ कुछ दिन रह कर बुद्ध बन सकूंगा । (भाव लग्न मध्न मुद्रा में) पिता जी दोस्तों और सहपाठियों से पूछताछ कर रहे होंगे । लेकिन अब तक तो मेरा पत्र भी उन्हें मिल गया होगा

(पट्टेकरवत्त का प्रवेत्त)

बटुकेरवत्त : मैं छापी बसवंत की ध्यान मुद्रा को भंग

करने के लिए कामा मांग लेता हूँ ।

भगतसिंह : (अरध्याकर) माइये । मुझे किससे भिमाने का सोनाम्य प्राप्त हो रहा है ?

बटुकेश्वरदत्त : मैं बटुकेश्वर दत्त हूँ । हम दोनों हमपेशा हैं । विद्यार्थीजी ने आपका परिचय मुझे दे दिया है ।

भगतसिंह हम दोनों हमपेशा हैं । विद्यार्थीजी ने मेरे बारे में आपको सब कुछ बतला दिया है । साथी बटुकेश्वरदत्त अपना हाथ मुझे दो न, भाई ।

बटुकेश्वरदत्त : (हाथ बढ़ाकर) साथी बलवंत के साथ सोहाद्र बंधन में बंधने के गौरव को मैं बहुत लोभा स्थान दता हूँ ।

भगतसिंह : (हाथ मिलाते हुए) बलवंत नहीं भगतसिंह पंजाब का भगतसिंह ।

बटुकेश्वरदत्त : भगतसिंह । धीर भी बलवान् । पंजाब धीर बगल नहीं आकर हम मिते ।

भगतसिंह : अब हम बहुत कुछ कर सकेंगे ।

बटुकेश्वरदत्त : हाँ बहुत कुछ । हमारे ऊपर भारी उत्तर दायित्व है ।

विजयकुमार : कुछ तो बूलना चाहिए था नहीं न ? (हास्य)
 अफ़्सा तो बलवंत को घाज की बैठक में
 माना है ।

भगतसिंह : भाऊँगा ।

विजयकुमार : (बटुकेश्वरबत्त से) भाप इन्हें साम भायेंगे ।

बटुकेश्वरबत्त : जकर ।

विजयकुमार : तो हमें खयज पिरते दिवना चाहिए ।

बटुकेश्वरबत्त : हाँ ओर क्या ।

भगतसिंह : अफ़्सा गनस्त । (हाथ जोड़ बैठे हैं । अम्बिबारन
 के बार लोगों का मन्वान । अपरसी का
 धान ।)

अपरसी : आपको नवीन नी ने याद किया है ।

भगतसिंह : कहीं ?

अपरसी : उपर अफ़्पयन कल में ।

भगतसिंह : धमी भाया ।

(अपरसी का प्रस्वान भगतसिंह जाने
 के लिए उठते हैं कि नवीनजी धीर
 पासीवाल भी वहीं था पयकते हैं ।)

नवीनजी : भई बलवंत, प्रठाप के इन संभ में तुम्हों
 सबैसर्वा रहोगे ।

भगतसिंह : तेमी क्या आफ़त था गई है ?

मनोमजी : ये कयि सम्भेसन जो नहीं छोड़ते हैं मुझे ?
 आज रात ही मेरठ का टिकट बटाना है ।

भगतसिंह : पालीबास जी तो हैं ?

पालीबासजी : मैं इसी गाड़ी से भागरा जा रहा हूँ ।
 पोसीटिवस काफ्रेन्स का फाम मेरे बिम्मे
 सगा है ।

भगतसिंह फिर भी मेरा तो सवाल नहीं उठता ।
 विद्यार्थीजी रहेंगे ही ।

मनोमजी : विद्यार्थीजी तो कोट से ही झांसी चले गये हैं ।
 भूख हड़ताली छात्रों के प्राणों का संकट है ।
 अभी अभी सार आया था ।

भगतसिंह तो इतना बड़ा दायित्व अपनेसे मैं

मनोमजी : हाँ तुम उठाओगे ।

पालीबासजी और 'प्रताप का धरक समय पर निकसना ।
 यम, यही कहने हम आये हैं ।

मनोमजी और अब हम जा रहे हैं ।

भगतसिंह : जाइये मेरे से जैसा वन पड़ेगा वैसा..

पालीबासजी हाँ हाँ वैसा ही । (मनोमजी से) मनो
 मनोमजी गाड़ी पकड़नी है ।

(दोनों का शीघ्रता से अन्वय)

भगतसिंह : ठग तो काम में जुटे बिना निस्ताद नहीं ।

घौर, घौर घाम को बैठक में—

(कुर्सी पर बैठ जाता घौर काबजों का
पुस्तका लेकर पैदर छाटना व
भिन्नने में व्यस्त होता ।)

पर्दा

चन्द्रसेखर : जब यह शरीर धीरे प्राण ही बस पर निष्ठावर हैं तो दाढ़ी छोटी की क्या कीमत है ?

(लंबी लहर छोटी काटते हैं ।)

राजगुरु हम केवल भारतीय हैं, न हिन्दू न मुसलमान न सिक्ख न किरिस्तान ।

(बनेम लोडकर खेंकते हैं ।)

भयतसिंह यह नये धर्म की दोषा है ।

(केशों और दाढ़ी पर लंबी बजाते हैं । अन्य सादी की बर्मेबिहारी का परित्राग करते हैं ।)

बटुकेश्वरदास मेरे पास त्याग करने को कुछ नहीं है न दाढ़ी न छोटी न यज्ञोपवीत ।

(सब हंसते हैं ।)

भगवतीचरण : मैं भी तिराट धर्किबन हूँ । मैं नहीं जानता मैं किस चीज का त्याग करूँ ?

सुसदेव : भाप ऐसा क्यों कहते हैं ?

राजगुरु : कह सकते हैं । साची भगवतीचरण कह सकते हैं वे पत्रसे ही सर्वस्व त्याग कर चुके हैं । सतही वीरांगना पस्नी से उन्हें दल के लिए काम करने की पूरी छूट दे वी है ।

भगवतीचरण : सबस्व-त्याग के गीरव का परित्याग करते हुए मैं 'वत्सु चरण पञ्चामि' । वस मुझे स्वीकार करे ।

भगतसिंह : इस ऐतिहासिक बैठक में हुए निश्चयों के प्रकाश में हमें अपने अपने प्रायों में तुरन्त काम आरम्भ कर देना है । पंडित जी प्रधान सेनापति के रूप में चीफ़ ही सब प्रायों का बोरा करेंगे । सैनिक स्थिति में वहाँ किस सुधार की जरूरत है, यह वही बतायेंगे । वही जगह जगह विविध काम करेंगे । एकशन आदि का निश्चय स्थानीय कार्यकर्त्तियों द्वारा होगा । लूफानी गति से काम करके हमें देश की रगों में खून लीसा देना है । सोते हुओं को जगा देना है । दुश्मन को यह बताना है कि हर जगह उसके लिए हमारा मोर्चा तयार है । हर जगह तुझे संगठन प्रचार और सहायता के लिए, हमारी पीठ पर होंगे । वस आब का काम समाप्त होता है । आप सोच चाहें तो वञ्चू कछ देर अपना संगीत कार्यक्रम बना सकते हैं ।

विजयकुमार : आज संगीत का सूत्र नहीं है और मौका भी नहीं है। हमारे साथी सीकर्सों के भीतर वेदियों की झनकार का संगीत सुन रहे हैं। हमारे गने से संगीत नहीं फूट सकता जब तक वे हमारे बोध नहीं आ जाते।

(जब सामोस रहते हैं और बैठक पठ जाती है। जो बहुत-बहुत ठहरे हैं वहाँ वहाँ के तिरु रवाना हो जाते हैं। केवल आज्ञा भक्तसिंह विजय कुमार और रामगुड रह जाते हैं।)

भक्तसिंह हमें आज से सातवें दिन आगरा में मिसना है। मैं भूमता हुआ समय पर पहुँच जाऊँगा।

बंशसूर : मैं भी भूमता हुआ ही पहुँचूँगा। ये दोनों (विजयकुमार और रामगुड की तरफ संबोध करते हैं।) दूर से जायेंगे। वादा की आगरा जैसा से रवानगी का मैं पता रखने और और आवश्यक प्रबंध कर लेंगे।

रामगुड पुनिस के हाथों से योगेश दादा को छुड़ाना ही ठो है वह भक्तसिंह मैं ही करके दिसा दूँगा। तुम तो उन्हें लेकर छुड़ाने की तैयारी रखना।

भक्तसिंह : (हँसकर) फिर वही लुकलुक। तेरी आदत नहीं जाती, माई मेरे !

ब्रह्मेश्वर : यह मामूली अभियान नहीं होगा । पुसिस भी सहक है । बिसकुस योजनाबद्ध काम होया ।

राजगुरु : योजनाबद्ध काम का नीतृत्व मुझे देने में हिचकिचाहट...

विजयकुमार : अच्छा अच्छा । अब इन लोगों को जाने दो । हम दोनों साथ चलेंगे । रास्ते में सारी योजना तय कर लेंगे ।

राजगुरु : यह माना । "रणजीत का सो स्वभाव है छोटी सी बात को बड़ी करके दिखाना । भंगेजी के पोये पड़ते पड़ते इसका दिमाग..."

भगतसिंह (हँसते हुए) अच्छा भाई ! तुम योजना तय करो हम सो चले ।

(बाहर निकल जाते हैं । उनके पीछे ब्रह्मेश्वर आकाश की धूपेरे में भाग्य ही जाते हैं । विजय कुमार आकर यकात की कुडी बंध कर जाते हैं परन्तु राजगुरु को कमरे में नहीं जाते हैं ।)

विजयकुमार रघुनाथ रघुनाथ !

(कोई उत्तर नहीं मिलता है ।)

घरे कहीं चला गया ? मोमबत्ती खत्म होने ला गई है । थोड़ी देर में गाड़ी पकड़नी है ।

(इतने वर भी राजपुत्र नहीं बिछाई देता है तो वे दरवाजे में घर के दूसरे कमरों में प्रसे कोलते हैं। फिर जाकर सहर दरवाजे की कुंडी खोलते हैं। कुंडी भीतर से बंद मिलती है।)
 कुंडी तो मैंने ही बंद की थी। तो गया कहाँ ? एक मिनट में कहाँ गायब होगया ? पड़ितखी और रणबीस को तो मैंने ही निकाला था। सब उसे यहीं बैठा छोड़ गया था। मकाम से फ़ाव कर तो आ नहीं सकता और उसको बरूरत भी क्या है ?

(एक बार फिर सारा घर घान मारते हैं। बसती मोमबत्ती लेकर सब कमरे-कोठरियाँ देखकर बड़े कमरे में सीढ़ घाते हैं। मोमबत्ती पचासपान रख बैठे हैं और बककर बंठ घाते हैं। सभी कुंडी पर बड़े कुलप कपड़े मिरते हैं और राजपुत्र जलते पीछे कड़े कड़े सी रहे बिछाई पड़ते हैं। विजयकुमार कुलप हली से कुलप बीस से जाकर उन्हें फ़कन्दोरते हैं।)

राजपुत्र (घम कुलप व्यवस्था में) भूँहँ भूँमे सी सेने दो ।

विजयकुमार भो सोनेवासे भाँखें कोल । मोमबत्ती खरम

हो रही है और हमें बिस्तर बांधकर स्टेशन पहुँचना है।

(पुनः अडकते हैं ।)

राजगुरु : (घाँसें तोलकर) रणजीत यह मजाक घब्राना नहीं है। तुमने मेरी फिटफिटिया कहाँ छिपा दी है ?

त्रिभुवनकुमार (राजगुरु के दोनों कंधे हिलाकर) घसरे की फिटफिटिया का दादा ! मोमबत्ती जल रही है। घाँसें सोस नहीं तो...

(मोमबत्ती जलकर बुझ जाती है। घर में पतपोर अंधकार छा जाता है ।)

पर्दा

दृश्य तीसरा

आम्हा, गुरी दरवाजे के नीचे एक दो-मझिया मकान

बन एस. आर ए. का घिरि

१९२६ ई का एक मध्याह्नोत्तर काल ।

(विष्णुस्नान सोवलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी की छावनी में जो
जलती से हवाकर छावनी से घाई गई है, आज कुछ विधायक इलजल है ।
आज का मध्याह्न विजयकुमार गणपतिराव वैद्यनाथ, अच्युत राव
मुकेश्वर मयबागदास धारि उपस्थित हैं । सब जालुक और चितित हैं ।
सब की बिनाह एह एकर डार की ओर जाती है और काल ती उदक
की ओर लगे ही हैं । इतने में तरर दरवाजे की कुडी उदकती है ।
मयबागदास उठकर कुडी कोल धारते हैं । राजमुक अपना भोता-मंडा
कंधे पर लटकाने धर में प्रवेश करते हैं और इलीवाल से आयल में
रखकर बड़े हो जाते हैं । विजयकुमार की दृष्टि बराबर सुने डार की
ओर लगी रहती है, फिर वे आवाज लपारते हैं ।)

विजयकुमार : अयदेन, अयदेन !

(कोई उत्तर नहीं आता । केवल राजगुरु
बड़े दुकुर दुकुर देखते रहते हैं । विजय

कुमार अपने स्वामी से पठकर दरवाजे तक जाते और वही में झंझ भाते हैं ।)

यहां भी तो नहीं है । कहाँ रूह गया ? (राजगुरु से) हरीश कहाँ रूह गया ? उसे दूसरे मकान में भेज दिया क्या ? वहाँ तो नहीं भेजना था ।

(राजगुरु हुनके बरके होकर उनही घोर देखने लगते हैं ।)

भई मेरी घोर क्या ठाकते हैं ?

राजगुरु : तो क्या हरीश को साथ लाना था ?

विजयकुमार : धन्य हो, तुमसे कहा था न कि उसे साथ लेकर आना । घोर रुपये देते समय समझा दिया था कि यहाँ पत्तों की बहुत कमी है इसलिए जहाँ तक हो वे भी खर्च न करके बचा कर ही लाये ।

राजगुरु : सब तो सब उस्ता ही हुआ ।

(चिठित्त हुआ)

विजयकुमार : क्यों क्या कर पाये ?

राजगुरु : मैं तो रुपये देकर उसे पहुँचाया था तर्पण करना घोर यहीं रहना । थोड़ी देर के लिए

भी इधर उधर मत होना । मुझे तो ऐसा ही ध्याम रहा ।

बिजयकुमार : ऐसा क्या ध्याम रहा ?

राजगुरु : यही कि योगेश दादा को जेल से छुड़ाकर रखने के लिए सुरक्षित कोई सुरक्षित स्थान की आवश्यकता होगी । इस दृष्टि से हरीश का निवास सर्वोत्तम है ।

बिजयकुमार : (बिगड़कर) यह तो सारी मनगढ़न्त बात हुई । मैंने जो कहा था वह माधुम पड़ता है आपने सुना ही नहीं ? सभ्यसहवासी की भी हद होती है !

राजगुरु : (सिर बुझाते हुए) क्या बतायें ।

(वज्रतापे की मुद्रा में पीछा जठाकर भीतर चला जाता है ।)

भंडारीसर : (बिजयकुमार से) क्या बात है ?

बिजयकुमार : रघुनाथ सब काम बिगाड़ आया । हरीश को मुझसे के बचाव उसे रोक आया और खया दिया था वह उसी के पास छोड़ आया ।

भंडारीसर : उसे जानते नहीं हैं क्या ? छोटे छोटे आवेश सुना होगा, फिर मन में जो आया वह कर

घाया । खर जो हुआ सो हुआ । साथी सब
भूखे हैं । खाने पीने की चिन्ता करो ।

विजयकुमार : पैसा बिल्कुल नहीं है । झोड़ने बिछाने के
नाम पर दो चार फटे पुराने कंबसों के
सिवा कुछ भी नहीं है । सब जमीन पर
घापी धोती बिछा कर सो जाते हैं । खाने
के लिए चार घाने के पैसे देते ये वे भी बंब
करने पड़ गये हैं । भाटा-धास मंगाकर
टिक्कड़ सेंकने की सोची है । उसके लिए
बरतन नहीं । मिट्टी के सप्पर में दास
उबाली है । साथियों से कहिये एक ही
घक्कर में बैठ जायं । बिसकुल घघोरियों
का भोजनचक्र ।

भगतसिंह : कोई बात नहीं, यह एच एस घाट ए का
घिविर ही तो है ।

आइसलर : (हँसकर) हम तो बाबा घघोरी साधक हैं ।
सोपड़ी के पात्र में भी खा सकते हैं ।
मिन-विम को हमने भीत लिया है ।

विजयकुमार : तो एक-दो-तीन सब साथी घेरा बना कर
बैठ जायें । राता घा रहा है ।

(सब घेरा बनाकर बैठते हैं । घाघार सबसे पहले भगतसिंह जब के बार में घेरे में धामिल होते हैं । पूरबी मन्दी की का सुपर बिसमें बाल बनी है, भाकर बोध में रस दिया जाता है उसके पास अन्नबली रोशियो । बिना हरी की बाल का रंग पुर्बला सा है । उबर म्यान न बिकर 'हिन्दुस्तान सोधसिख रिपब्लिकन प्रान्ती के प्रधान सेनापति बंरकेसर घाघार बड़ी बेतकसुफी से रोटी का दुकड़ा तोड़कर खाते भवते हैं और उनके साथ ही सब ताबी खावा प्रारंभ करते हैं, केवल भगतसिंह कुछ सिम्कते हैं परन्तु सिम्क को व्यक्त नहीं होने देते हैं ।)

भगतसिंह (हरी में बल के भाव को घिपाकर) सापियो, हमारा यह भोज किसी घाही भोज से कम नहीं है । तो क्यों न हम उधी तकसुफ और अम्बाइ से खायें बिससे सखनऊ के नबाब और रईस खाते हैं ।

बंरकेसर : (हँसकर) बकर पर हम अन्नभूत घोग हैं । हमें तो पेट भर खाना है । मन्दाकत और नफरसत में पड़े रहेंगे तो—

घाया । खर जो हुआ सो हुआ । साथी सब
मूखी हैं । खाने पीने की चिन्ता करो ।

विजयकुमार : वैसे बिल्कुल नहीं है । थोड़ेने बिछाने के
नाम पर दो बार फटे पुराने कंबसों के
सिवा कुछ भी नहीं है । सब जमीन पर
घाधी घोठी बिछा कर सो जाते हैं । खाने
के लिए बार खाने के पीसे देते थे वे भी बंद
करने पड़ गये हैं । आटा-धातु मंगाकर
टिक्कड़ सँकने की सोची है । उसके लिए
बरतन नहीं । मिट्टी के सप्पर में हाल
उबाली है । साथियों से कहिये एक ही
पक्कर में बैठ जायें । बिल्कुल प्रयोगियों
का भोजनचक्र ।

भगतसिंह : कोई बात नहीं, यह एक एक बार एक का
चिबिर हो तो है ।

चन्द्रोदर : (हसकर) हम तो बाबा प्रभोरी साधक हैं ।
खोपड़ी के पात्र में भी खा सकते हैं ।
भिन-भिम को हमने जीत लिया है ।

विजयकुमार : तो एक-दो-तीन सब साथी घेरा बना कर
बैठ जायें । खाना खा रहा है ।

(सब बेरा बनाकर बैठते हैं । प्राजार सबसे पहले भयतसिंह सब से बाहर में घेरे में शामिल होते हैं । फूटी मटकी का सूपर जिसमें बाल बनी है, साकर बीच में रख दिया जाता है उसके पास घबबली रोहियां । बिना हड्डी की बाल का रंग पुर्नसा सा है । जबर प्यान न लेकर हिन्दुस्तान सोदासिन्ध रिपब्लिकन प्रार्मों के प्रधान सैनापति बंरमेखर प्राजार बड़ी बेतकस्नुफी से रोहरी का हुकूम तोड़कर घाने लावते हैं और उनके लाप ही सब साथी जाना प्रारंभ करते हैं, केवल भयतसिंह कुछ निम्नकते हैं परन्तु निम्नक को व्यक्त नहीं होने देते हैं ।)

भयतसिंह : (हड्डी में नन के भाव को सिपाकर) सायियो, हमारा यह भोज किसी दाही भोज से कम नहीं है । तो क्यों न हम उसी तकस्नुफ और पन्वाज से सायों जिससे सखनक के नवाब और रईस खाते हैं ।

बंरमेखर : (हँसकर) जकर, पर हम घबभूत सोग हैं हमें तो पेट भर खाना है । नवाकठ घी नफासत में पड़े रहेंगे तो—

भगतसिंह पर धमीरी भन्वाज भी कोई घुरा नहीं है,
देसो

(बड़ी नशाकत से टिककड़ से एक
बिस्कुल छोटा सा टुकड़ा तोड़ते हैं ऐसे कि
कहीं बेचारे टिककड़ का बिल न कुछ बाल
धीर धपनी जवलिधों में भी करोंच न
धावे पावे ।)

विजयकुमार : वाह क्या कहना है ।

(सब हँसते हैं ।)

भगतसिंह : हँसी की बात नहीं है साधियो ! यह तरीका
धमीरी संस्कृति और भाषा का महत्वपूर्ण
अंग है ।

(फिर तोड़ हुए रोटी के टुकड़ की एक
प्लात तबस्कुल से बाल के लप्पर के बाल
से खाते हैं इस तरह कि बाल से छू न
जाय ।)

भगवानबास : (खाते खाते बघलकर) खुद, बाजिदधमीघाह
को भी माठ दे दिया ।

विजयकुमार : कोई माजमी देल सेगी ठो गूणब हो जायमा,
रणजीठ !

(सम्मिलित हास्य)

भयतसिंह : (गर्भीर बने रहने का अभिनय करते हुए)
देखा ?

(उस छोटे से लिबासे को पूरी नज़ाहत से हाथ घुमा कर मूँह में रखते हैं और बो-
चार-बार नज़ाहत के साथ मुँह बसाते हैं
फिर बत्ती प्रज्वाल से लकड़ते हुए कुम्हड़ के
पाकी से जैसे जैसे के बीजे उतारने का
अभिनय करते हैं ।)

सुप्रबोध : रणबीर, नकल ही करोगे या कुछ साधोगे
भी ।

भयतसिंह : (घनातुली करके उठते हुए) वल्साह, क्या
सजीवु खाना है ; सुभान वल्साह ।

(कमाल से मुँह बोंधते और ऐसा प्रदर्शित
करते हैं जैसे भर पेह खाकर उठे हों ।)

विजयकमार (बाँध धारकर लहास्य) सबके जाऊँ तेरी
घदा के ।

पंचवीरार : (भीषण से पूरी तरह चुन्न होकर उठते हुए) क्या
जनतों-जैसी लकल करते हो ? यह भी कोई
संस्कृति है ! हमारा घावार है मीत का
वरण । कौन किस तरह मीत के पंजे में
पड़ेगा, इसकी नकल करो तो कुछ मज़ा भी
आये ;

(उठकर पुस्तक खाने लगते हैं।)

बेनाम्पायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुभव ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहसामो तो वे बच्चे और रणजीत कहीं किसी सिनेमा घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुस्तक से कहेंगे, पकड़ सिवा तो कोई बात नहीं पर पूरा धो तो देख लेने दो।

(सब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े जायेंगे ?

(राजगुरु जी और इबारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं लड़े लड़े ऊँपते हुए पकड़े जायेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिए कि ये बसते बसते भी ऊँपते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींव की हवासात में ही जाकर खुसेगी। जब घाँसें मसकर वे पूछेंगे कि क्या सचमुच मैं पकड़ सिवा गया हूँ या सपना बेस रहा हूँ ?

भगतसिंह : (कहकर लंबाकर) भई बाह, घुब नवसा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : घोर मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चांद को निहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्मोहन में गिरफ्त छुब पुसिसवासों से ही पूछ बैठेंगे, लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? अरु उमर देखो । मोह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सब घोर से रहस्य कर धर तक कहकहा मयता है)

मगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है ।

सुखदेव : मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाडियों में शिकार पेशते या खंस के जार्ग में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे ।

विजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विषवास घात से ही यह संभव हो सकेगा ।

मगवानदास किन्तु ये घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुसिस के हाथ आयेंगे । भ्रष्टी के प्रस्पतास में आकर हीरा में घाने पर ही इन्हें पठा जमेगा कि क्या हो गया ।

विजयकुमार : घोर सजा होगी दफा १२१ में फांसी !

(बठकर बुल्ला कामे लबते हैं।)

ब्रह्मव्यायन : पंडितजी घाबिर संतावति हैं। भयने समु
 रूप ही बात कहेंगे बे। मुझ से कहसाधो तो
 ये बरू और गणजीत कहीं किसी सिनेमा-
 घर में पकड़े आवेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस
 से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं
 पर पूरा दो तो देल सेने दो।

(बब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस
 तरह पकड़े आवेंगे ?

(राजगुरु की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं लड़े लड़े लैपते हुए पकड़े आवेंगे,
 इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिये कि ये बसते बसते भी लैपते हैं। मैं
 तो कहता हूँ उनकी नींद भी हवालात में ही
 आकर चुसेगी। तब घाबें ममकर ये पूछेंगे
 कि क्या सबमुज में पकड़ लिया गया हूँ या
 सपना देख रहा हूँ ?

भयर्त्सिह : (बड़बड़ा लपाकर) भई बाह, धूब मबघा
 उवारा है।

(सम्मिलित हास्य)

बिजयकुमार : श्रीर मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चांद को निहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्मोहन में गिरफ्त बुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, 'लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? जरा ऊपर देखो । प्रोह कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सब श्रीर से रह रह कर बेर तक बहकहा जयता है)

भगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिसवस्यो नहीं है ।

सुखदेव मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में चिकार खेतों या खबस के खार्गों में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे ।

बिजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास भात से ही यह संभव हो सकेगा ।

भगवानदास : किन्तु मे भायल होकर वेहोसी की हासत में ही पुलिस के हाथ पायेंगे । मंत्री के धस्यतास में जाकर होश में भाने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया ।

बिजयकुमार : श्रीर सदा होगी दफा १२१ में फांसी !

बसम्पायन पंडितजी धास्त्रि सेनापति हैं। अपने धनु रूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहसामो तो ये बखू घोर रणजीठ कहीं किसी सिनेमा घर में पकड़े आयेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा सो तो देख लेने दो।

गयाप्रसाद : हमें तो यह बसाओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े आयेंगे ? (सब हँसते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं लड़े लड़े ऊँचते हुए पकड़े आयेंगे, इसमें कोई शक नहीं। (राजपुत्र की घोर हँसारा करते हैं।)

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिए कि ये बसते बसते भी ऊँचते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींद भी हवासाठ में ही जाकर सुमेगी। तब धागेँ मसकर ये पूछेंगे कि क्या सबमुत्र में पकड़ लिया गया है या सपना देग रहा है ?

मगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई याह पूब नवशा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चांद को मिहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्मोहन में गिरफ्त शुब पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, 'लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? जरा ऊपर देखो । ओह, किसना प्यारा किसना सुन्दर है वह !

(सब और से रह रह कर देर तक कहकहा मगता है)

भगवानदास मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में विसवस्ती नहीं है ।

मुसवेब : मैं बतारूँ पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में छिकार लेते या खंबस के झारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे ।

विजयकुमार परभु किसी सरकार परस्त मित्र के बिश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा ।

भगवानदास : किन्तु ये घायल होकर वेहोशी की हासत में ही पुलिस के हाथ आयेंगे । मर्सी के अस्पताल में जाकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया ।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फाँसी ।

(उठकर झुटना करने लगते हैं।)

वसुधापायन : पंडितजी घासिर सेनापति हैं। अपने अनु-
 रूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहसाम्रो तो
 ये बन्धू और रणजीत कहीं किसी सिनेमा
 घर में पकड़े आयेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस
 से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं
 पर पूरा लो तो रोक लेने दो।

(सब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें लो यह बताओ कि ये हजरत किस
 तरह पकड़े आयेंगे ?

(राजगुरु की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये लो कहीं लडे सड़े ऊँपते हुए पकड़े आयेंगे,
 इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिये कि ये बसते बसते भी ऊँपते हैं। ये
 लो कहता हूँ इनकी गीद भी हवासात में ही
 जाकर गुलेगी। तब धारें मसकर वे पूछेंगे
 कि क्या सबमुच में पकड़ लिया गया हूँ या
 छपना बेम रहा हूँ ?

भगतसिंह : (बड़बुदा लगाकर) भई बाह पूब मजदा
 उखारा हूँ।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : धीरे धीरे रात में कहीं पार्क में चाँद को निहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्मोहन में गिरफ्त खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, लेकिन तुमने चाँद भी देखा है ? जरा ज़रूर देसो । धीरे, कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सत्र धीरे से रह रह कर बेर तक कह रहा सपता है)

भगवानबास : मुझ पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिसचरपी नहीं है ।

सुखदेव : मैं बताऊँ पंडित जी दुन्देलसंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या जंगल के सागों में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे ।

विजयकुमार : परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास बात से ही यह संभव हो सकेगा ।

भगवानबास : किन्तु वे घायल होकर वेहोशी की हासत में ही पुलिस के हाथ आयेंगे । भ्रांती के अस्पताल में जाकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया ।

विजयकुमार : धीरे सजा होगी दफा १२१ में फाँसी !

बैशाखायन : पंडितजी घासिर सेनापति हैं। अपने धनु रूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहसाम्रो तो ये बरखू घोर रणजीत कहीं किसी सिनेमा-घर में पकड़े आयेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा जो तो वेस सेने दो।

गयाप्रसाद : हमें तो यह बसाम्रो कि ये हजरत किस तरह पकड़े आयेंगे ?

(तब हसते हैं ।)
(राजगुरु की घोर हंसी करते हैं ।)

विजयकुमार : ये तो कहीं लड़े लड़े ऊँचते हुए पकड़े आयेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिए कि ये बसते बसते भी ऊँचते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी सीढ़ी भी हवासात में ही जाकर टुसेगी। तब घागें मसकर ये पूछेंगे कि क्या सबमुच में पकड़ लिया गया है या सपना देग रहा है ?

भगतसिंह : (बहबहा लगाकर) भई बाह पूब नबदा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चांद को निहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्मोहन में गिरफ्त खुब पुस्तकवासों से ही पूछेंगे, 'सेकिन तुमने चांद भी देखा है ?' बरा ऊपर देखो। ओह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है यह !

(सब ओर से रहरह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानबास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव : मैं बताऊँ पंडित जी बुन्देसखंड की पहाड़ियों में चिकार खेतों या खेतों के खारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे।

विजयकुमार : परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास बात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानबास : किन्तु ये धायन होकर वेहोशी की हासत में ही पुस्तक के हाथ आयेंगे। मर्सी के अस्पताल में जाकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी सफा १२१ में फाँसी।

बंजर दोसर : अत्तरे की ।

भगतसिंह : (विभोवपूर्वक) श्रीर पंडित की आपके लिए वो रस्सों की बरुरत पढ़ेगी । एक गले के लिए श्रीर दूसरा इस मारी मरकम घरीर के लिए ।

(घरीर में अँवनी चुभोते हैं ।)

बंजर दोसर : इधर सुनो फाँसी चढ़ने का घौक मुझे नहीं । वह तुम्हें ही मुबारक हो । रस्सा बस्ता श्रीर फटा वदा तुम्हारे ही गले के लिए हैं । मेरा यह यमतस बुधारा जब तक पास है तब तक किसने मां का पूष पिया है जो आजाद को जिम्दा चकड़ से जाये ।

(अपना माइजर विस्तृत ऊपर घटाते हैं । 'बाहुबाह' के साथ हास्य का उम्पारा दृश्यता है ।)

भगतसिंह (हँसकर) पंडित जी दुर्वासि बनने से बोई फायदा नहीं । जो होगा वह वो होगा ही । उसका बोई गम नहीं । अब बरा चमकर चपर भी सँभारें । चक बहुत चोड़ा रह गया है ।

व ब्रह्मोत्तर : उधर सब ठीक है । अतीमबाबू अपने काम पर मुस्तैद हैं । फिर भी जसो एक बार बेल प्रायें । बच्चू, इस बीच कोई बात हो तो वहीं खबर देना ।

(सपत्सिंह पीर आबाद का प्रत्याग । उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का जाना । बाहर किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक वहीं रुक जाना ।)

गयाप्रसाद : धरे भाई कैसास आज अभियाम से पहले अपनी ताकत वाली दवाई तो निकास । बरा देखें तो कैसी है ?

वर्द्धपापन : एकशा नंबर वन ?

सुखदेव : यह तो घराब होती है । उसका यहाँ क्या काम ?

भगवानदास : कृष् भी हो वह ताकत की दवा है ।

सुखदेव : लेकिन तुम उसे कहीं से लाये ?

भगवानदास : पंडित जी से चार रुपये लेकर लाया हूँ ।

सुखदेव : तो तुम उसे पीठे हो ?

भगवानदास : हाँ सुबह पाम ।

अंधारों की : धरती की ।

भगतीसह : (बिजोबुद्ध) धीरे धीरे भी धीरे धीरे के लिए दो रस्सों की जरूरत पड़ेगी । एक रस्से के लिए धीरे दूसरा इस मारी मरकम धीरे के लिए ।

(धीरे में बपसी बुझते हैं ।)

अंधारों की : इधर सुनो फांसी चढ़ने का घोंक मुझे नहीं । वह तुम्हें ही मुबारक हो । रस्सा बस्ता धीरे फंदा बंदा तुम्हारे ही घोंके के लिए है । मेरा यह बसतल बुझारा जब तक पास है जब तक बिन्दने मां का दूध पिया है जो धाजाव को जिन्दा बकड़ से बाये ।

(अपना बाइबुर बिस्तील ऊपर बटाते हैं । 'बाहुबाहु' के साथ हास्य का अन्वारा छूटता है ।)

भगतीसह (इतकर) धीरे धीरे बुझासा बनने से कोई फायदा नहीं । जो होगा वह तो होगा ही । उसका कोई गम नहीं । धव अरा बसकर अंधारों की सँभालें । बकड़ बहुत पोड़ा रह गया है ।

ब्रह्मोत्तर : उपर सब ठीक है । जतीनवाहू अपने काम पर मुस्तैद हैं । फिर भी जसो एक बार देख पायें । बच्चू इस बीप कोई बात हो तो नहीं खबर देना ।

(जपतसिंह घोर आबाद का प्रस्थान । उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का आना । बाहर किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक वहीं रुक जाना ।)

गयाप्रसाद : घरे भाई कैलास, भाउ अभियान से पहले अपनी ताकत वाली दवाई तो निकाल । जरा देखें तो कैसी है ?

बैर्धपायन : एकशा नंबर बन ?

सुखदेव : यह तो शराब होती है । उसका यहाँ क्या काम ?

भगवानबास : कुछ भी हो यह ताकत की दवा है ।

सुखदेव : लेकिन तुम उसे जहाँ से लाये ?

भगवानबास : पंडित जी से चार रुपये लेकर लाया हूँ ।

सुखदेव : ता तुम उसे पीते हो ?

भगवानबास : हाँ सुबह पाम ।

चंद्रबोझर : घतारे की ।

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) और पंडित जी आपके लिए दो रस्सों की जरूरत पड़ेगी । एक गसे के लिए और दूसरा इस भारी भरकम शरीर के लिए ।

(शरीर में जयसी चुभोते हैं ।)

चंद्रबोझर : अगर मुझे फांसी चढ़ाने का शौक मुझे नहीं । वह तुम्हें ही मुबारक हो । रस्सा बस्सा और फंदा बंदा तुम्हारे ही गसे के लिए हैं । मेरा यह यमसुस सुझारा जब तक पास है तब तक किसने माँ का दूध पिया है जो आजाद की जिम्दा पकड़ से जाये ।

(अपना माइबुर पिस्तौल ऊपर उठाते हैं । 'बाहुवाइ' के साथ हाथ का छवारा टूटता है ।)

भगतसिंह (हँसकर) पंडित जी दुर्वासा बनने से कोई फायदा नहीं । जो होगा वह तो होना ही । उसका कोई गम नहीं । जब जरा बसकर उपर भी सँभालें । बच्च बहुत थोड़ा छू गया है ।

ब्रह्मेश्वर : उधर सब ठीक है । जसीनबाबू अपने काम पर मुस्तैब हैं । फिर भी जसो एक धार देस प्रायें । बन्बू इस बीब कोई बात हो तो यहीं सुबर देना ।

(मपतसिंह धीर आबाब का प्रत्यान । उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का जाना । बाहर किसी संश्लेष व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक यहीं रुक जाना ।)

गयाप्रसाद : धरे भाई कैसास प्राण अभियान से पहले अपनी ताकत वाली बवाई तो निकाल । बरा देखें तो कैसी है ?

बैशांपायन : एकशा नंबर बन ?

सुसबेव : यह तो धराब होती है । उसका यहाँ क्या काम ?

मगवानबास : कुछ भी हो वह ताकत की बबा है ।

सुसबेव : लेकिन तुम उसे कहीं से साये ?

मगवानबास : पंडित जी से धार रुपये लेकर साया हूँ ।

सुसबेव : तो तुम उसे पीते हो ?

मगवानबास : हाँ सुबह धाम ।

गयाप्रसाद : अनेके ही अकेले ताकतवर बन आधोमे तो ठीक नहीं । निहासो हम लोग भी देखें । धान ताकत की साथद अरुत पड़ जाय ।

भगवानदास : तुम लोगों ने देख ली है तो अब नहीं मानोगे ।

(जाकर बोलत ले आते हैं । सब बोड़ी बोड़ी बजते हैं ।)

सबाशिव : (होठों से लपाकर छोड़ देते हैं ।) मैं नहीं पीता ।

गयाप्रसाद : साधो, हुआहुस का प्यासा इधर दो । मैं पीता हूँ ।

(सबाशिव की छोड़ी हुई मात्रा भी पी खाते हैं । विजयकुमार प्रवेश करते हैं ।)

भगवानदास : (बोलत में काम लपाते हुए) अब किसी को न दूंगा । तुम लोग तो उसे शरम करने पर तुले हो ।

विजयकुमार : भैरवी धरु की उपासना सी क्या कर रहे हा ।

सबाशिव : यह कैसास एका नयंर पन पीता है । बहता है ताकत की क्या है । पंडित के आदेश ने साया है ।

विजयकुमार : क्या सब सामो देखें ।

(बोलन सने के लिए हाथ बढ़ाते हैं ।
 संसात बोलन उन्हें पकड़ा देता है ।)

भगवानबास : देख सोचिये पर खरम न कर जानना ।

विजयकुमार : (क्रुपित होकर) मैं पंडित जी से कहता हूँ ।
 यह सुसंस्कृत और चरित्रवान क्रांतिकारियों
 का झंडा है या कमवरिया ? तुम भोग एव
 एस धार. ए के त्यागनिष्ठ सिपाही हो या
 धरावी ? अभी तसाधी हो जाय और हम
 पकड़े जायं तो किगनी बबनामी हो ?

(क्षीप्रता से जागा)

सदाशिव : इसका परिमार्जन होना चाहिए ।

सुखदेव : सामो बोलस इधर दो । मैं उसे माली में
 फेंक दू वरना पंडितजी को जानते हो ।

भगवानबास : हम फोई नद्ये के लिए घोड़े ही पीते हैं ।
 (भरपूरकर बैठता है ।)

सदाशिव राव : साकस की दवा बे बतौर से सेते हैं ।

राजगुरु : मुझे तो कोई साकस-वाकस भगती नहीं ।

गयाप्रसाद : एक बार पीकर ही पहचान होना चाहते
 हो ?

राजगुरु : ऐसी ऐसी दवाएँ हैं कि दूर से देकर ही

घादमी सी हास पावर की गति से काम करने लगे ।

सदाशिव राव : अच्छा !

राजगुरु : और नहीं तो क्या ।

मयाप्रसाद : मैंने तो ऐसी किसी दबा का नाम नहीं सुना ।

राजगुरु : तो तुम्हें डाक्टर किसने बना दिया ?

मयाप्रसाद : किसने बना दिया बताऊँ ?

राजगुरु : हाँ किसने बना दिया जो इतना भी नहीं जानते ।

सुखदेव : (मयाप्रसाद से) धजी किसके मुह लगे हो ?

राजगुरु : (लम्क कर) तो मैं मुंह लगाने के काबिल भी नहीं हूँ ?

मगवानदास : धजी हो मे कहता हूँ हो । ये तो नाकदरे हैं । तुम्हारे जैसा हुस्म तो मैंने कहीं देखा ही नहीं ।

(सब हँस पड़ते हैं ।)

राजगुरु : धाबाद बीसास ।

(मगवानदास की पीठ डोंवता है । धाबाद,

भगतसिंह और बिजयकुमार प्रवेश करते हैं।)

शंकरोत्तर : कैसा, यह क्या सुन रहा है ?

भगतसिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी की छावनी में घराब के शोर !

(बनावटी पंभीरता को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न करते हैं।)

शंकरोत्तर : क्या तुम घराब पीकर हुरदंग मन्थाने के लिए यहाँ आये हो ?

भगतसिंह तुम्हें पता नहीं हम सोम यहाँ मोठ के छाये में रह रहे हैं ? जिस दिन क्रांति को हमने वरण किया है उस दिन से शारीरिक बिसास के सभी साधनों से मुह मोड़ लिया है। जनता में क्रांतिकारियों का इसीलिए मान है कि वे वैयक्तिक सुखों को साठ मार कर प्राण होमने को हर समय तैयार रहते हैं। बुद्धमत को इस कमजोरी का पता लग आय तो वह हमें बदनाम कर डाले।

शंकरोत्तर (देर पटककर) कैसास में तुमसे उत्तर चाहता है।

भगवान्वास पंडित जी, यह बही एगछा मंवर वम है जिसके लिए आपने चार रुपये दिये थे। मैं क्या जानता था कि इससे इतना बाबेसा मचेपा ?

भगवत्सिंह (हलकर) भरे वाह पंडितजी आप खुद हो तो रुपये बेते हैं और फिर माराज भी होते ह ।

अंभारोकर : (बुली होकर) तो मैने क्या यह कहा था कि छाराब से धाना ? (भवबालबाल से) कलास बस बोलस को से मायो । उसे फोड़ देना ही ठीक होगा ।

(अंभारो बोलस लाकर बेता है ।)

भगवत्सिंह बोलस को फाड़िये नहीं पंडितजी ! यह चीज पुरा नहीं है । इसका इस्तमाल हमारा यही पंडित है । हम अग्निमान पर बस रहे हैं । उसमें ऐसी उत्तमक चीज की भी आवश्यकता पड़ सकती है । मैं जाने हम में से कौन कब घामस हो जाये । इसके अनाब से मुर्दा भी दो चार मास जा सकता है ।

अंभारोकर : तो ?

[पहला]

भगतसिंह इसे रख लीजिये ।

वंद्रोच्चर (गवाप्रसार से) डाक्टर साहब तो यह भापके पाखें में रही । इसे रासायनिक वस्तुओं के मंडार में पहुँचा दीजिये ।

(गवाप्रसार बीतल से सेते हैं ।)

भगतसिंह : (भगवानबात को एक घोर ले जाकर बीते स्वर में)
 कैसास यह झण्डा नहीं हुआ । प्रागे से हम लोगों को ध्याम रखना चाहिए कि हमारी छोटी से छोटी भूस की बड़ी से बड़ी प्रासो बना होगी । अपनी मित्री बदनामी की बात होती तो बड़ी बात नहीं थी परन्तु यह क्रांतिकारियों की बदनामी होगी क्रांतिप्रयास की बदनामी होगी । हम सब जिस महान उद्देश्य के लिए जीवन का दाँव लगा रहे हैं उसकी बदनामी होगी । सब करा करया काम मटियामेट हो जायगा । दाहीदों का प्रब तब का बसिदान कलंकित हो जायगा ।

भगवानबात मैं अपनी भूस के लिए बहुत सज्जित हूँ ।
 भगतसिंह भूस एव स होती है भाई । मैं क्या भूस नहीं करता ? तुमने उस मान लिया, इसमें

तुम्हारी बहादुरी है, नाभा है। तुम धामे इस तरह की घूमों से बच सकागे।

भगवानबास : इसका परिमार्जन

भयर्त्सिह : परिमाजन तो होगया। उसका मसास मत रबसो; उसे भूस जाओ। भाब हम बहुत बड़े अभियान पर चल रहे हैं। योगेश दादा को पुसिस के पहरे से लुडाना है। हमें पूरे उत्साह और धैर्य के साथ काम करना होमा। साथी मोहन को स्टेशन पर खबर सेने के लिए भेजा जा रहा है।

(बटुकेदरबल उनके घापे से ही निकलकर बाहर जाते हैं।)

भगवानबास : घाप की बातों से मेरा मन साफ होगया।

भयर्त्सिह : ता घापो, हम दोनों इसी लुघी में कुछ देर पंजा मझामें। पंजा सझाने में तुना है तुम एक ही हो।

भयवानबास : (हतकर) थोड़ा बहुत घाठा है।

भयर्त्सिह : ता साधो हाथ।

भगवानबास : घापो।

(हाथ बड़ा देते हैं। भयर्त्सिह थोड़े में)

पंजा पंसा बैठे हैं धीरे धीरे तक दोनों धीरे करते रहते हैं । धीरे धीरे सब साथी धापे बढ़ धाते हैं धीरे जनका पंजा लड़ाना बेचते हैं । भक्तसिंह कोसिल करते हैं पर भयबालबास का पंजा नहीं मोड़ पाते ।)

भगतसिंह : (पंजा निकालकर) हनुमानजी देखने में ही बौने हैं । पंजा मगर फीसाद का है ।

(सब हँसते हैं । भयबालबास भी उनके हास्य में योग देते हैं । एक विनीत का बाताबरस बन जाता है । तनी बटुकेश्वर बस धीमत्या से प्रवेश करते हैं ।)

चंद्रशेखर मोहन क्या खबर है ?

बटुकेश्वरबास दस बजे की बात गलत है वे सात बजे की गाड़ी से ही जा रहे हैं ।

चंद्रशेखर : इसका मतलब सारी योजना बेकार !

भगतसिंह (धड़ी देखकर) अभी पौन घंटा है ।

चंद्रशेखर इतने में क्या हो सकता है ?

भगतसिंह जितना हो सकता है किया जाय । धीरे यह भी हो सकता है कि खबर गलत हो ।

चंद्रशेखर तो मोहन वापस जाय धीरे निगह रखते । अगर सात बजे ही जा रहे हों तो आगरा के बजाय कानपुर स्टेशन पर—

भगतसिंह हाँ, वहाँ कई पेटे का बच्चा मिल जायगा ।
 बालकेशर वहाँ मकान का तत्काल प्रबंध हो सकेगा ?
 भगतसिंह बिया जायगा । मोहन और कुछ साथी उसी
 गाड़ी से रवाना हों । कुछ बाद बासी
 एक्सप्रेस से ।

(बटुकेश्वरदास परामर्श करके लौट जाते
 हैं । छावनी के ताबियों में जल जमा होना
 जाती है । लकड़वासी बस्ती ठीकठीकियों में
 मगरी हैं ।)

पदा

रोते हाथों से मुँह ठक सिमा था । या
है ?

भगतसिंह : याद है । दादा को घातों के भागे देखकर
भी हम कुछ न कर सके । यह बरदास्त है
बाहर था ।

भगवतीचरण : हमारी बेबसी की कहानी !

सुखदेव : ऐसा ही मौका था । मकान भी नहीं हाथ
आ सका । जल्दी में काम बनता नहीं
बिगड़ता ही है ।

भगतसिंह उसी निराशा में डेयरी का घंघा गले पर
पड़ा । पिताजी का धरसे से आग्रह था ।

भगवतीचरण सेकिन अच्छा जसा हो ?

भगतसिंह : जसा तो खूब ।

सुखदेव : फिर ?

भगतसिंह : फिर क्या घंघा थोड़े ही करता था । वह तो
एक पड़ाव था । एक मया अनुभव हुआ,
आत्मविश्वास जमा ।

सुखदेव धीरे दस का नाम भी बंद नहीं रहा ।

भगतसिंह : वह कैसे रहता ? इसी पर पिताजी विश्वास
गये और पिड़ना ही था ।

मगवतीचरण : वस भौर डेयरी का स्वयंवर बुझा था ।

भगतसिंह : हाँ एक को ही तो वरण करना था ।

सुसबेब : घषा यया वल रहा । उसी को रहना था ।

मगवतीचरण : वही रहेगा । हम नहीं रहेंगे, तुम नहीं रहोगे । रणधीर नहीं रहेगा तब भी वस तो रहेगा ।

भगतसिंह : उसीको रहना चाहिए । उसके साथ हम भ्रमर हैं ।

सुसबेब : उसका विस्तार देखकर घाब भ्रमरच होता है । एक बात सा तुम गया है । विजसी के बेग से काम हो रहा है ।

मगवतीचरण : कुछ सोगों के दिस घड़क उठे हैं ।

भगतसिंह : सो दिस के दारे के दो मरीज यहीं आगये ।

(दो घानेवालों की घोर खरित करते हैं । घामतुङ्क बयोबुङ्क हैं । वे इन लीपों को बिना देखे ही पास पड़ी घाली बेंच पर घाकर बंठ जाते हैं । तीनों छापी बातचीत बंद करके बात में घाराम से सेठ जाति हैं । घामतुङ्कों ने अपनी घपूरुल बातचीत का सिमसिला जारी रखने के लिए ही जासूस

बढ़ता है, इस एकता वाली बेंब की मरछ
सी है। उनमें इस प्रकार बातचीत होती
है।)

पहला : पता नहीं क्या हो रहा है ?

दूसरा : घासार मच्छे नहीं हैं।

पहला : पचास लाख तक नैतृत्व किया है।

दूसरा : इसमें क्या सम्बेह।

पहला : धीर कस का भौंडा मगततिह

दूसरा : वो विन में ही नेताओं के घासन हिस्सामे की
कोपिध बर रहा है।

पहला : वह भूर्त है।

दूसरा : वह भावारागद है।

पहला : वह इस हिन्दुस्तान में अति के सपने देता
रहा है।

दूसरा : वह अपनी बन्न खोव रहा है।

पहला : बोड़े से येसमक नीजयानों को गुमराह करने
से इतने बड़े देस में अति दुई है ?

दूसरा : जहाँ देसो वहाँ 'नौजवान भारत उभा' जहाँ
देसो यहाँ...

पहला : धीर सरकार उस बीस दे रही है।

पहला : हा, सरकार छटसब दर्जक वेर तक नहीं रह सकती ऐसा अनुमान है ।

दूसरा : धीर यह व्याख्याता भगवतीचरण भी क्या कोई बड़ा विद्वान्वादी है ?

पहला : यह मत पूछो : एक भाग है तो दूसरा अंगारा ।

दूसरा : सब एक ही धातु के बने हैं ;

पहला : परन्तु सबका भाग्य अन्तर में भ्रम रहा है ।

दूसरा : अन्धा ही है जसो जसों, बार में बर्त करत पारंगे ।

(जहकर चल बैठे हैं : तुजदेव जी जम्मे का प्रयत्न करता है । भक्तसिंह उठे चम्क सिते हैं ।)

तुजदेव : रोक मत रखीत में इन नेता सामर्थारियों का जहन्नुम रमीत्र कर भाई । अभी दो मिमट में वापस आता है ।

भक्तसिंह : नहीं उत्र करो । तुम्हें बहुत बड़े बड़े काम करने हैं ।

भगवतीचरण : इन नरक के कीड़ों को माग्ने से क्या होगा भाई ?

भगवतीसिंह : ये तो खुद मरे हुये हैं। इनका पमीर मर चुका है। इनकी आत्मा मर चुकी है। ये शरीर का बोझ मात्र हो रहे हैं।

भगवतीचरण : वम और पिस्तौल से मरने का सौभाग्य सिर्फ शहीदों को मिलता है।

भयतसिंह : जो मर कर भी घमर होते हैं।

(सुखदेव भात ही आता और अपना रिवाज केब में डाल लेता है।)

भयतसिंह : इससे हमें एक सबक मिला।

सुखदेव : यही कि देश का नेतृत्व भी प्रतिक्रियावादी तत्वों के हाथ में है।

भयतसिंह : इस स्थिति को महाक्रांति ही बदल सकती है।

भगवतीचरण : और वह महाक्रांति जन-सहयोग से ही सफल हो सकती है।

भयतसिंह : उसी के लिए हमारे प्रयास हैं।

सुखदेव : इस समय पैसे के बिना --

भयतसिंह : तो क्यों आज उसी का प्रयत्न करें।

भगवतीचरण : परन्तु यह हो हस्ता सा कैसा ?

सुखदेव : (दूर तक की ओर देकर) लोगों में मजदूरी ही पड़ रही है।

भगतसिंह : मैं देखता हूँ ।

(बस्ती बस्ती पेड़ पीपों को काटते हुए
पाक के बाहर जाते हैं घीर प्ला करके
बाक्य नीट घाते हैं ।)

भगवतीधरराय रणजीत क्या माजरा है ?

भगतसिंह किसी बदनमाद्य ने रामसीसा में बम फेंक
दिया है ।

मुल्लबेव एँ, रामसीसा में बम ।

भगवतीधरराय : रामसीसा में बम ।

भगतसिंह कहते हैं हठाहठों की संख्या संकड़ों है ।

मुल्लबेव तो पसो बेलें । वहां हमारी मदद की
जकरत पड़ सकती है ।

भगवतीधरराय नहीं इमें घटनास्पत से दूर ही रहना
चाहिए ।

भगतसिंह : भक्तसोष भाफत के समय हम अपने सोर्यों
की मदद भी नहीं कर सकते ।

भगवतीधरराय वही हमारी बेबसी है ।

मुल्लबेव : पर यही ठहरने का तो कोई मतलब नहीं ।

भगतसिंह रघुनाथ का इन्तजार या पर वह या तो
चलते चलते हो रास्ते में सो गया होगा या
बम पटने की जमद जा गड़ा हुआ होगा ।

मगतसिंह : इसे कौन नहीं जानता ।

(सबका मंच से बाहर जाते जाना । दूसरी ओर से एक युवती के साथ दो युवकों का आना । वे बड़े हुए हैं और शहर से आये हैं । आते ही तीनों घास पर बैठ जाते हैं ।)

युवती : क्रांतिकारियों का यह काम तो मुझे कठई पसंद नहीं आया ।

दूसरा युवक : तुम्हारा क्यास है कि यह काम किसी क्रांतिकारी का है ?

युवती : ऐसा ही तो लोग कह रहे थे ।

दूसरा युवक : लोगों की यह गमछ धारणा है कि वनों का प्रयोग केवल क्रांतिकारी ही करते हैं ।

युवती : तो ?

दूसरा युवक : कम तो ऐसी चीज है कि उसे कोई भी फेंक सकता है ।

पहला युवक : हिन्दू मुसलमानों ने धार्मिक बिडप को देखते हुये—

युवती : यह काम किसी मुस्लिम का हो सकता है ।

दूसरा युवक : कुछ नहीं कहा जा सकता । कम से कम क्रांतिकारियों के नाम पर उसे घोपना तो

पहला युवक : ये सभी सपासी बातें हैं और हमारे लिए बेकार हैं।

(युवती की आँसों में बेकरारी से भाँकता है।)

युवती (मुस्कराकर) मैं नाहक ही इस पकड़े को सँवठी।

पहला युवक : (जसी तरह रूप-गुण का पात करते हुए) पर इतना मैं कह सकता हूँ कि साहोर का कोई भी आयोजन अब रातरे से शाली नहीं रह गया है।

युवती : परन्तु अपने प्यार का आयोजन तो निष्कण्टक बनता रहेगा।

दूसरा युवक (जोर से हँसती है।)
(बिता में निमग्न होने से प्यान नहीं और का पट्टा का उतारते भी रुकर) ऐं क्या कहा ?

युवती : (रसीले कटाक्ष से पहले युवक को आहत करने के बाद) कह रही हूँ कि कोई गीत सुनाओ न।

दूसरा युवक गीत नहीं मँसिया।

पहला युवक मँसिया नहीं यही आतिशयियों की प्रिय गन्स सुनाओ न।

दूसरा युवक : सो सुनो ।

(जल्दाह के साथ गुनगुमाता हुआ घाने लगता है ।)

शहीदों की फितानों पर बुझेंगे हर बरस मेडे ।

बदन पर मरने बाधों का बही बाजी निशा हुआ ।

(खोर खोर से कड़ियों को कुहरता है ।
निस्तब्ध बामुमडन में स्वर-सहरी गूँबकर
रह जाती है । साथी 'बाह बाह' करते
रहते हैं ।)

पहला युवक : भाधूम पडता है तुम क्रांतिकारियों के दस
तक पहुँचते हो ?

दूसरा युवक दस तक नहीं दिस तक ।

पुवती (जदसकर) साजवाश, साजवाश !

पहला युवक दिस तक पहुँचने में सेकिन सास रुकावटें
हैं ।

पुवती : (हसकर) पर कोई तकरार तो नहीं है ।
तकरार भी हो तो दिस तक पहुँचना मुझे
प्राता है ।

(झुककर पहले युवक के सीने से जा
लपती है ।)

दूसरा युवक : तुम्हारा प्रेम भी क्रांति के पथ पर बस पड़ा है।

(इसी समय सब बतियां कुछ जाती हैं
 घ घंटे में केबल उनकी क्षितिजमाप्ट
 तुनाई पड़ती रहती है।)

पर्या

अंक दूसरा

दृश्य पहला

साहीर : अस्तिकारियों का मित्र

१९२८ के दिवम्बर का मध्य दिन का तीसरा पहर

(साइमन कमीशन के बहिष्कार के बभ्रुस का नेतृत्व करते हुए पुलिस के लाठी प्रहार से घाहत माला साबुतराम की पुत्रु सबह दिन के अग्वर हो गईं । इससे बैज भर में मयानक सुवाल आ गया । पत्नी तिलसिने में अग्रमा अरम उठाने के लिए एच. एच. एच. ए. की बैठक बुलाई गई है । बल के प्रायः सभी प्रमुख सबस्य आ पहुंचे हैं । आजाद अर्पतसिंह, बिजयकुमार, राजगुरु भयवती अरु सुखदेव अययोपाल अगवानवास आदि ।)

आजाद : एक उबासासुसी फूट पड़ा है ।

बिजयकुमार : नींव में सोया देव हिस उठा है ।

अगर्तसिंह : आसंतीदेवी के भूंह अ निकसे आह्लाम के अरु हमें अुमा रहे हैं ।

आजाद : अरु के अरु है ।

बिजयकुमार : उन्हें सुनकर मसा कोन पीछे रह सकता है ?

धात्राव : सागात् दुर्गा बोल उठी हैं ।

राजगुरु : सुनें तो क्या कहा है उन्होंने ?

मयतसिंह : उन्होंने कहा है मैं पूछती हूँ देश का यौवन और पुरुषार्थ धात्राव बिदा है या मर गया ? यदि बिदा है तो क्या वह इस अपमान और ग्लानि का समुमव करता है ? मैं भारत की एक नारी अपने युवकों से स्पष्ट उत्तर चाहती हूँ । पूर्व इसके कि सासा वी की बिदा भस्म उठी हो भारत का युवक समाज सामने धाये और जबाब दे । मैं जबाब चाहती हूँ । मैं उत्तर चाहती हूँ । भारत के पतीस कोटि नरनारियों से बंदिब और पूबित उत पवित्र शरीर को उन कमीने और हिंसक हाथों से किस तरह छूने का साहस किया ? और वे अब तक भयाव बने हैं, हम बात का मैं जबाब चाहती हूँ ।

राजगुरु : मां वादन्ती, तुमने ठीक कहा है ।

पूछता]

पवानराम : इस घातकान का उत्तर देने का दायित्व हम सब पर है।

भाजाब हम इसका उत्तर देंगे।
 भगतसिंह हम निष्ठुर नहीं हैं। हम मानव-जीवन का मूल्य समझते और उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं। हम उसके सर्व्य से अभिभूत हैं और उसे प्यार भी करते हैं परन्तु राष्ट्रीय अपमान का प्रतिशोध बराबर लिया जायगा उसमें किसी तरह की कसर न रहेगी। सभी हम देवी वासन्ती के घातकान का उचित उत्तर दे सकेंगे।

मुसबेब : हम निणय के साथ हम बहुत बड़ा मोर्चा खोल रहे हैं। यह न मूस जाना चाहिए।

भगवतीचरण : एक एस. ए. का मोर्चा दुश्मन से एक न एक दिन ठो मगना हो है। और इससे अनूकूल घवसर भी पायद ही बनी मिलेगा।

भाजाब : दुनिया को हम दिखा देना चाहते हैं कि भारत राष्ट्रीय अपमान पुपथाप सहन नहीं कर सकता।

राजपुत्र : सासा जी का बदमा तो मैं धकेसा ही से सकता हूँ। एच एच घाट ए का मोर्चा इस छोटे से काम के लिए खोलने की क्या जरूरत है ?

(सब राजपुत्र के मुँह की ओर देखने लगते हैं।)

भगतसिंह : (बुस्कराकर) रघुनाथ ठीक कहता है परन्तु इस समय मंजे हुए विपाहियों की हमारे लिए बड़ी कीमत है। हम किसी एक को भी बिना पूरी चौकसी के सतरे में नहीं खोंक सकते।

सुरसेव : यह तो युद्ध का मोबायल होगा।

भगतसिंह : घससी युद्ध तो न जाने कब तक बसेगा।

राजपुत्र : तभी तो कहता हूँ कि मुझे विस्तृत और तीन कारदूस दे दो। अपने दिक्कार के लिए तो मुझे सिर्फ एक की ही जरूरत है। दो वक्त पर धारमरथा में नाम धा सकते हैं।

भयवाजबाम : यदि किसी एक को ही मेजना हो तो ऐसे पवित्र काम के लिए कई उम्मेदवार हो सकते हैं।

राजगुरु : (कुछ चिठित होकर) समझ में नहीं आता, क्यों मुझे यह बार सौपने में रुका हो रही है ? मैं कोसबासी में घुसकर अपना काम करूँगा और घाघ घटे में यहाँ आकर उपस्थित हो जाऊँगा ।

आजाद : वंका का सवास नहीं है, हमसे तो उसे उसी समय मरा हुआ समझ लिया था जब लालाजी की छाती पर वार करके उसके द्वारा नाम पूछने पर बिना बताये मुँह दिक्काकर वह भागकर भीड़ में घुस गया था ।

भगतसिंह : मैंने उसी समय कहा था 'मठ बता लू अपना नाम पर वह दिन दूर नहीं है जब तेरा नाम गली गली मारा मारा फिरेगा ।

आजाद : अब जब कि इस काम को एच एम आर ए ने अपने ऊपर ले लिया है तो वह पूरे फीबी कायदे से होना चाहिए ।

भगतसिंह : हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी ने उसे मौत की सजा दी है । हम बेसटके मुझे आम उसे पोली का मिथामा बनायेंगे

घौर भारत की कोटि कोटि जनता के नाम एक संदेश प्रचारित करने । ताकि लोगों की समतर्फहमी न हो घौर सरकार को बेकसूरों को सताने घौर फंसने का मौका न मिले ।

भाजपा : सब कुछ राष्ट्रीय गौरव घौर सम्मान के समुच्चय होगा ।

राजगुरु : सब मेरा कोई धाग्रह नहीं है ।

भाजपा : दस की नीति घौर सुरक्षा के विचार से प्रतिमान का समय घौर कार्यक्रम उन लोगों को यथा दिया जायगा जिन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना है । वे सब साधियों घौर दस की धाग्रहों को सस सल के लिए तैयार रहना होगा जब एक हड़कंप से जमोन घौर भासमान हिंस उठने की स्थिति उत्पन्न हो जायगी ।

भपतसिंह : जसो काम की बात सलम हुई, सब...

भाजपा : (हंसकर) सब दस्तरगाम बिदेबा घौर बुध पेट-भूजा होगी ।

(एक सलर की बीरो पर बहने से

ममाई हुई डबल रोटी और गुड़ लेकर खाने बैठते हैं ।)

मगतसिंह : (बिनोबपुत्रक) एच एस धार ए के कमन्डर इन-चीफ के साथ मिनर का सौभाग्य कौन कौन सेना चाहता है ?

(गुड़ की एक डली उठा लेते हैं ।)

धाम्बाब : नहीं मानोगे ?

मगतसिंह : (दूसरे से साथियों को) खे सो न एक एक डली । खड़े खड़े मुह क्या ताक रहे हो ?

धाम्बाब : (जीभकर) देखो बहुत काम करना है । मुझे हौरान मत करो । मैं जैसा खाता हूँ जो कुछ खाता हूँ चुपचाप खाने दो ।

मगतसिंह : (बनावडी पंभीरता से) पंडित जी लेकिन आपके प्रसाव से हम सब वर्चित कैसे रह सकते हैं ?

धाम्बाब : तो जो ।

(गुड़ उठाकर लेंक बेते हैं और उठ पड़े होते हैं ।)

मगतसिंह : वाह पंडित जी आप तो नाराज होगये ?

(दूसरे साथी परक कर धाम्बाब को फिर बिठाते हैं । राजगुब गुड़ उठा लाते हैं ।)

घोर भारत की कोटि कोटि जनता के नाम एक सदैव प्रचारित करेंगे। ताकि लोगों को गलतफहमी न हो घोर सरकार को येकसूरों को सताने घोर फांसने का मौका न मिले।

भाजाब : सब कुछ राष्ट्रीय गौरव और सम्मान के अनुरूप होगा।

राजगुरु : ठब मेरा कोई भाग्रह नहीं है।

भाजाब : हम की नीति और सुरक्षा के विचार से प्रमियम का समय और कार्यक्रम उन लोगों को देता दिया जायगा जिन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना है। वेप सब राष्ट्रियों और हम की क्षात्रियों को उस क्षण के लिए तैयार करना होगा जब एक हड़ताल से जमीन और भासमान हिस उठने की रिपति उत्पन्न हो जायगी।

भयतसिंह : असो काम की बात खरम हुई, भय...

भाजाब : (हँसकर) सब दस्तरगाम बिदेगा और कुछ पेट-भूखा होगा।

(एक पत्थर की बोरी पर बहने के

पंगाई हुई इबल रोटी घौर गुड़ लेकर जाने बैठते हैं ।)

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) एच एस घार. ए के कमाण्डर-इन-चीफ के साथ डिनर का सीमाम्य कौन कौन सेना चाहता है ?

(गुड़ की एक डली उठा लेते हैं ।)

घाजाब नहीं मानोगे ?

भगतसिंह : (इधारे से साबियों को) स सो न एक एक डली । लड़े लड़े मुँह क्या साक रहे हो ?

घाजाब (लीपकर) देखो बहुत काम करना है । मुझे हैरान मत करो । मैं जैसा साता हूँ जो कुछ साता हूँ चुपचाप खाने दो ।

भगतसिंह (बनावटी पंभीरता से) पंडित जी सेकिन घापके प्रमाद से हम सब बर्चित कैसे रह सकते हैं ?

घाजाब : तो सो ।

(गड़ उठाकर कँज देते हैं घौर उठ पाये होते हैं ।)

भगतसिंह : वाह पंडित जी घाप तो नाराज होगये ?

(डुमरे साबी पकड़ कर घाजाब को फिर बिटाने हैं ।)

राजगुरु : सीजिमे घाप खाइये । एणजीत तो कभी मसखुरेपन से भाव नहीं पाता ।

(मुड़ देने लगता है ।)

भगतसिंह : घरे मरदूब गुड़ उठाकर साया तो उसे बो तो सेना था । गो पंडित जी ने बनेऊ छोड़ फेंका है पर नाली के पास पड़े गुड़ को तो बिना घोड़े नहीं खा सकेंगे ।

(सब साथी बड़ी मुश्किल से हँसी रोक पाते हैं ।)

मुसदेव : सो जस और गुड़ बो भी डालो ।

(बल देना, राजगुरु का गुड़ पीकर रसना और भाग्यार का साने पर बैठना । नीचे से किसी का आवाज देना ।)

भगतसिंह (ऊपर से ही) असे घाघो, बोहराजी !

(गुबर नुबर्जिन मुकर ह सराम बोहरा का प्रवेण । घनिबादन के पन्नात)

हसराम : कुछ देर तो जरूर हो गई है ।

भगतसिंह : यहाँ पहुँच जाना ही बड़ी बात है ।

हसराम : यादरिस नीचे छोड़ भाया है ।

(नीचे जाँचता है ।)

(भगवत्सिंह की ओर धर्मपुत्र हृषिकेश से
 देखते हैं। हंसराज बात को न समझकर
 ताकता रहता है। आज़ाद भीषण समझ
 कर घठ मढ़े होते ओर बाहर निकल जाते
 हैं। आज़ाद के पीछे पीर कई लोग बने
 जाते हैं।)

भगवत्सिंह (भगवानबास को लक्ष्य करके) हनुमानजी,
 अब उतमी घूर बठकर इधर क्या ठाक रहे
 हो ? सोच रहे हो, साइकिल चढ़ा साते तो
 छीक होता क्यों न ?

भगवानबास ऐसा ही समझ कर मन को संतोष देने में
 कोई हज नहीं है।

भगवत्सिंह : तो आप इस समय माने के मूड में मासूम
 पड़ते हैं। मन्था गामो हम सुनने का कष्ट
 मबारा कर लेंगे।

भगवानबास : मैं गाने ही क्यों समा ?

हंसराज : (अनुरोधपूर्वक) क्या दर्ज है याइये न।

भगवत्सिंह : सो अब तो नगरों की गुंजाइश नहीं। मुना
 डासिये भटपट। घमी पंडित जी भी नहीं
 है।

मगवानदास : प्रणम्य ।

मगतसिंह : मैं सब कहता हूँ आप अनुरोध की कद्र करने वाले नहीं हैं। आप उस समय जाना शुरू करेंगे जब मैं कान में तैंगसी डालकर घेंठ खाऊँगा।

(सब हँसने लगते हैं। मगवानदास मगतसिंह की पीठ में धूसा मारते हैं। इस पर दोनों धीरे से धूसे चलने लगते हैं धीरे धीरे तक चलते हैं। इस हुड़बड़ी में राजपुत्र जो बँडे बँडे छपकी ले रहे थे जाग पड़ते हैं।)

राजपुत्र कैसे घादमी हो ? मेरी कीमती मौद मैं अलस डास दिया।

विजयकुमार : मेरे सपनों का हुरामरा खेत उखाड़ दिया। सब सोग देखते क्या हो ? दोनों साँठों को प्रसग करो न।

(सब बीचबिचाव करते हैं। मुरकेबाची बंद होती है।)

मगतसिंह : दोष कैलास का है। सधि की छतों के रूप में मैं माँग करता हूँ कि वह अपना गाना सुनाये, धीरे धीरे मराठी गाना।

विजयकुमार : सही बात है।

[अंधारों की नील]

(भगवत्सिंह की ओर अर्धपूर्व दिशि से देखते हैं। हंसराज बात को न समझकर ताकता रहता है। धाम्नाद भीजन समझ कर उठ सके होते और बाहर निकल जाते हैं। धाम्नाद के पीछे और कई लोग जाते जाते हैं।)

भगवत्सिंह (भगवानबास को लक्ष्य करके) हनुमानजी जब उतनी दूर बैठकर खयर क्या ताक रहे हो ? सोच रहे हो, साइकिल बड़ा साठे तो ठीक होता क्यों न ?

भगवानबास ऐसा ही समझ कर मन को संतोष देने में कोई हर्ज नहीं है।

भगवत्सिंह : तो प्राय इस समय गाने के मूड में मासूम पड़ते हैं। अच्छा गाओ हम सुनने का बख्त गवारा कर लेंगे।

भगवानबास : मैं गाँव ही क्यों सगा ?

हंसराज (मधुरीपपूर्वक) क्या हर्ज है गाइये न।

भगवत्सिंह : सो घब तो नगरों की मुंजाइय नहीं। मुना डालिये भटपट। घमी पंडित जी भी नहीं हैं।

मगधानबास : अन्ध्रा ।

भगतसिंह : मैं सब कहूँगा है आप अनुरोध को कद्र करने
वास नहीं हैं। - आप उस समय गाना शुरू
करेंगे जब मैं कान में रेंगसी टालकर बैठ
जाऊँगा ।

(सब हँसने लगते हैं । मगधानबास
भगतसिंह की पीठ में पूसा मारते हैं । इस
पर दोनों घोर से बूँसे चलने लगते हैं और
दूर तक चलते हैं । इस हड़बड़ी में राजपुत्र
को बीटे बीटे भचकी से रहे वे आम पड़ते
हैं ।)

राजपुत्र कैसे घादमी हो ? मेरी कीमती नींद में
खसखस आस लिया ।

बिजयकुमार : मेरे सपनों का इरामरा सब उजाड़ दिया ।
सब लाग देखते क्या हो ? बानों साँडों का
प्रलय करो न ।

(सब खीखिखाह करते हैं । मुखैबात्री
बंद होती है ।)

भगतसिंह : दोष कंसास का है । संधि की छत के रूप में
मैं मोम करता हूँ कि वह अपना गाना सुनाये
और वही मराठी माना ।

बिजयकुमार : सही बात है ।

राजगुरु : ताबान तो भरमा ही पड़ेगा ।

भगवानदास : मुझे स्वीकार है ।

(माने के लिए सँभलकर बैठा है
भगतसिंह गानेवाले की धोर पीठ कर
पड़ रहते हैं ।)

भगतसिंह : प्रच्छा ठुरू कीजिये ।

भगवानदास : इन्हें गाना सुनने की तमीज तो दिखाइये
सब गाऊँ ।

भगतसिंह : मैं बाज धाया ऐसे गाने से जिसमें आपकी
शक्त भी दखनी पड़े ।

(सब हँस पड़ते हैं धोर केर तरु दिल
दिमाहट धमी रहती है । उसके बाद
हंसराज के धनुरोप से भयभानदास अपना
मराठी पीठ गाकर सुनाते हैं । बिना बाज
के भी गीत का समा बंध जाता है ।)

हंसराज : (गीत की समाप्ति पर) वाह, बहुत प्रच्छा ।

भगतसिंह : क्या कहने हैं ! सखतऊ की बादछाहट
निछावर कर देने सायब धोज है । सेबिन
बेबसी है एक यक्त के लिए फी पुराक चार
धाने ए अधिन पंडित जी देखे नहीं हैं ।
उस में दो धाने की रोटी-दास-सम्बी, छः देखे

दृश्य दूसरा

छाड़ी शक्तिकारियों का प्रिभिर

१९२८ मध्य दिसम्बर के एक ऐतिहासिक दिन का ठीमसा पहर

(घाब प्रिभिर में पूर्ण दिन जसी बहम-बहल नहीं है । बिले बुने साथी हैं । सब की संबीदगी घोर बिस्तान्नील मुद्रा से लगता है कि घाब का दिन घोर दिनों से मिल है । कोई किसी से बोसता नहीं । सब अपने अपने ध्यान में सने हैं फिर भी सब के कान कहीं से कुछ सुनने के लिए ध्यर हैं । उपस्थित सौगों में घाबान् भगतसिंह राजगुष सुसरेब बिजयकुमार भगवानदास हैं । भगतसिंह को यह नि-गम्यता कुछ पसन्द नहीं आती । उसे तोड़ने की गरज से वे भगवानदास को देखते हैं ।)

भगतसिंह : ओ अनुशासन के पुतले सध सध बटा फिरम कैसी थी ?

भगवानदास : नंबर एक (धीरे से) पर पैरों का क्या हियाब बिताव होगा ? पंडित जी से कौन कहेगा ? म्याऊं का मुह कौन पकड़ेगा ?

भगवत्सिंह : (धीरे से) कैसास, तुम भी निरे बोंब हो ।
मुर्ख को भी क्रतिकारी बना दे ऐसी फिल्म
पर पंडित भी शोक समायेंगे ?

भयमानबास : (धीरे धीरे) भाप जानो । मैं तो साफ कह
दूंगा कि रणजीत भीर बिजय ने जबरदस्ती
मेरे से डेढ़ रुपया छीन लिया और छस
देखा । खेत मैंने भी देखा पर मैं निर्दोष हूँ ।
मैं तीन साबियों की सुराक की अमानत में
सुयानत कर खेत देखने की हिम्मत नहीं
कर सकता था ।

(अन्तिम शब्द कुछ और से कहे गये ।
सुनकर बिजयकुमार भी इस बातचीत में
आमिल हो गये ।)

बिजय : (कुतूहलपूर्वक) अमानत में सुयानत की क्या
बात है ?

भगवत्सिंह : कुछ नहीं बी, ये हनुमानजी पूरे भीकस हैं ।
खेत भी देख लिया और अब डेढ़ रुपया
सर्घ देने के लिए डर रहे हैं ।

भयमानबास : पंडित जी को हिसाब तो देना होगा । वे
घमी पूछेंगे ।

आजाद : धरे क्या गुपचुप कर रहे हो ?

भगतसिंह : अजी पंडित जी, एक ऐसा खेल समा है कि अगर हिन्दी में हो तो भारत की पेंतीस करोड़ जनता बागी हो जाय ।

आजाद (चल्लुक्ता से) सब ऐसा कौनसा खेल है ?

भगतसिंह : हिन्दी में उसे 'टाम काका की कुटिया' कह सकते हैं । अमरीका में हब्सी युसामों पर होने वाले अत्याचारों और उनकी स्वतंत्रता की सड़ाई का यह क्रांतिकारी चित्र ब्रह्म देखने ही सायक है । बोल न कैसेस है कि नहीं ?

(भववानवात विचल होकर हाँ भरते हैं ।)

आजाद : ऐसा चित्र हिन्दी में क्यों न तैयार किया जाय ?

विजय : कौन तैयार करे ? क्या सरकार उसे करमे देगी ?

भगतसिंह : (हँसकर) पंडित जी ऐसा इकट्ठा करके बने तो हम लोग उसे तैयार करेगे ।

विजय : धीरे फिर सारा भाव्य क्रांतिकारी हो जायगा ।

(भगवानदास मुस्करा कर विजय की ओर देखते हैं ।)

धाम्नाथ : इस तरह के चित्र प्रचार का सामन तो बन सकते हैं ।

भगतसिंह : इसी चित्र को कल हम सीनों देखे जाये । बेद रूपया तो लक्ष हूमा पंडित भी पर इतना जोर थाया कि उसका उबास अभी तक रह रह कर भा रहा है ।

धाम्नाथ : ऐसा पता होसा तो बाहर से जाये सावियों को भी दिखा देते ।

भगतसिंह : (भगवानदास की ओर झंझ मारकर धीरे से) से देख अब तो हूमा ।

(इसी समय बाहर से जयमोपाल जिसे पुलिस अधिकारी स्कॉट की वसतिविधि पर नजर रखने के लिए नियत किया गया था, प्रवेश करता है ।)

धाम्नाथ : धाम्नी जी ।

(हाथ से पास बैठने का संकेत करते हैं ।)

अपगोपाल : (एक नजर में सबको देखकर) कस रात क ही घाना था ।

भगतसिंह : तुम्हारा सब तो पूरा होगया ?

अपगोपाल : होगया ।

भगतसिंह : तो पंडित जी को रिपोर्ट देवो ।

(सब मंच के एकान्त कोने में एकत्र हो जाते और परामर्श में रत होते हैं ।)

अपगोपाल : स्कॉट और सांडर्स दोनों एक जयह सुविधा से मिसजे संभव नहीं ।

भगतसिंह : स्कॉट नियमित रूप से दफ्तर पहुंचता भी नहीं है ।

आजाद : उसे बँगले पर ही लिया जा सकता है ।

सुसबेव : परन्तु एस एस धार ए के काम का महत्व पुलिस दफ्तर के भीतर या उसके फाटक पर ही अधिक है ।

आजाद : एक दो घाबलियों को मार देना कोई विषम समस्या नहीं है । यह तो कहीं भी और किसी भी समय हो सकता है । परन्तु हमें तो सरकार के प्रति मुठ घोषणा करनी है । अतः दिन में और पुलिस की संघीनों के

बायरे से अपना शिवाय श्रीमन्तर यह दिखा देना है कि जनता की सरकार अपना काम कर रही है ।

मगतसिंह : हाँ यही बात है । वस हमने जैसा कार्यक्रम निश्चित किया था वही ठीक होगा । जयगोपाल पुसिस दरवार के फाटक के पास साइकिल सिये खड़ा रहेगा । उसके संकेत पर ही मगतसिंह और राजगुरु अपना काम करके जी ए जी कासेब के हाथों में चले जायेंगे । हाथों के भीतर धाबाव रहेंगे और वे देखेंगे कि कोई उन दोनों का पीछा न कर पाये ।

राजगुरु : मुझे तो पदस जाना है । पहुँचते समय सगेमा में चलता हूँ ।

मगतसिंह : हम लोग भी पहुँचते हैं ।

(राजगुरु का जाना । कंसारापति महावीरसिंह धारि का घाना ।)

कंसारापति : बेच में एकखन हस्त हो जाने से अब हमारा काम नहीं है । हम सब जा रहे हैं ।

जयगोपाल : (एक नजर में सबको देखकर) कम रात क ही भाना था ।

भगतसिंह : तुम्हारा सब तो पूरा होगया ?

जयगोपाल : होगया ।

भगतसिंह : तो पंडित जी को रिपोर्ट देवो ।

(सब मंच के एकान्त कोने में एकत्र हो जाते और परामर्श में रत होते हैं ।)

जयगोपाल : स्कॉट और साइंस दोनों एक जगह सुबिधा से मिलने संभव नहीं ।

भगतसिंह : स्कॉट नियमित रूप से दफ्तर पहुंचता भी नहीं है ।

प्राज्ञाब : उसे बेंचसे पर ही लिमा जा सकता है ।

सुसरेब : परन्तु एन एम धार ए के काम का महत्व पुब्लिस डफ्तर के भीतर या उसके फाटक पर ही अधिक है ।

प्राज्ञाब : एक दो धारनियों को भार देना कोई बिपम समस्या नहीं है । यह तो कहीं भी और कियो भी समय हो सकता है । परन्तु हमें तो सरकार के प्रति मुठ खोपणा करनी है । प्रतः दिन में धार पुब्लिस की संवीनों के

बायरे से अपना शिबार छीमकर यह दिखानेना है कि जमता की सरकार अपना काम कर रही है ।

मगतसिंह : हां यही बात है । बस हमने जैसा कार्यक्रम निश्चित किया था वही ठीक होगा । जयगोपाल पुसिस दफ्तर के फाटक के पास साइकिल सिये खड़ा रहेगा । उसके संकेत पर ही मगतसिंह और राजगुरु अपना काम करके डी ए बी कार्मेल के हाते में भरे जायेंगे । हाते के भीतर आबाव रहेंगे और वे देखेंगे कि कोई उन दोनों का पीछा न कर पाये ।

राजगुरु : मुझे तो पदस जाना है । पहुँचते समय सगेया में बसता हूँ ।

मगतसिंह : हम लोग भी पहुँचते हैं ।

(राजगुरु का जाना । कैलाशपति महावीरसिंह प्रारि का आना ।)

कैलाशपति : बँक में एकचन हस्ट हो जाने से अब हमारा काम नहीं है । हम सब जा रहे हैं ।

आज़ाद : एकसन की सफलता में संदेह होने से ही ऐसा किया गया । एक साथी ने दूसरा हृष्टिकोण भी रक्खा है उससे भी यह निर्णय ठीक ही हुआ परन्तु हम ज़ासी नहीं बैठेंगे । कुछ न कुछ करेंगे । घाप सोग जाइये और अपनी अपनी क्षेत्र को स्थिति काबू में रखिये ।

भगतसिंह : समय बहुत नाजुक है ।

महापोरसिंह : परन्तु एच एच घाट ए के सैनिक ठो फौसाद के बने हैं ।

आज़ाद : हमारा काम भी ठी मोम के पुतलों से बसने वाला नहीं है । अथवा घाप सोग जाइये ।

(सब एक एक कर निकल जाते हैं । उनके पीछे भगतसिंह आज़ाद और अण्णवाल का जाना । जाते जाते आशाद का विजय की संकेत करते जाना ।)

विजय : (गुलदेव और मयबालराज से) उसी उठो । यह समय क्या मिस्कोट का है ?

(दोनों हड़बड़ाकर उठ खड़े होते हैं ।)

गुलदेव : हम गामी नहीं बटे थे ।

विजय : अधिप्य की योजना तयार कर रहे थे ?

मरुतूषरा]

मगवानदास : हां अभी थोड़ी देर में प्राग में घी पड़ जायगा। उससे एक सपट चढेगी।

सुखदेव : साहीर नहीं नहीं सारा देश अभिभूत होकर उसे देखेगा। बिस्वी की कुछ समझ मैं न आयेगा जब तक जब तक

विजय : जब तक हम न समझयेंगे। तो बसो उसी का सरजाम करें। एक वम यह काम ऐसे हो—

मगवानदास : पूरी सफ़लता के साथ।

सुखदेव : एच एस आर ए की धान के बिसकुस धनुरूप।

विजय : वही होगा। बिस्वी से लन्दन तक होस उठेगा। बसो आपो हमारी सुरक्षा टुकड़ी पटनास्वस के पास समय पर पहुँची रहे।

(मंत्र से बाहर हो जाता है। उसके साथ ही सुखदेव और मगवानदास का जाना। मकान के पिछले हिस्से से बग्नतरी का मंत्र पर आकर घूमने लगना।)

बग्नतरी : आज आज, आज घरे बीन भववती भाई ? नहीं, वे यहाँ नहीं ? बल हम

मुसद्देव : धमी तो सब स्तम्भ हैं। पुलिस और सरकार दोनों को काठ मार गया है पर कुछ ही देर में मर्यादाक रूप से नाकेबंदी हो जायगी। हम सब को तुरन्त इस स्थान को छोड़ देना है। सब सापियों को सुरक्षित स्थानों पर भ्रमण भ्रमण—

प्राधाह : पर आज संध्या समय सामे-धीने की क्या व्यवस्था होगी ? वैसा तो एक भी नहीं है।

(मुसद्देव जयगोपाल की ओर देखने लगता है।)

जयगोपाल : मैं जाऊं देखू कुछ हो सके।

मुसद्देव : नहीं करके सामो भाई !

जयगोपाल : प्रच्छा, प्रच्छा।

(निकल जाता है।)

भवतसिंह : रुपये की तो प्रब पररत पड़ेनी।

विजय : (बिबित्त होकर) काफी रुपये हों तब बचने और इस समय कोई एवतम सं नहीं।

मुसद्देव : परवाह मत करो। मैं जा रहा हूँ। इतना बड़ा काम होगया तब रुपये प्रबन्ध भी हो जायगा।

(सब धाकबस्त होते हैं, जबपोपस्त घाता है और रत रुपये जाकर प्राज्ञार को पकड़ाता है । वे उन्हें तापियों में बाँट देते हैं ।)

प्राज्ञार : बसो, इस वक्त काम चलेगा ।

(प्राज्ञार, सुखदेव और भगतसिंह को प्रौढ़कर सब एक एक कर सब के बाहर हो जाते हैं ।)

भगतसिंह : सुखदेव, अब तेरा संगठन काम करे भाई ।

प्राज्ञार : सबेरा होते होते सात परचे साहीर में बँट जायँ ।

सुखदेव : साहीर में ही क्यों, सारे भारत में । एच एस भार ए के कमांडर इम-बीक के हस्ताक्षर वाला घोषणापत्र ही है न सात परचा । वह नियत समय पर सारे भारत में बँटिगा ।

भगतसिंह : तमी शोगों को पता लगेगा, घमी तो तरह तरह के अनुमान लगाये जा रहे होंगे ।

सुखदेव : (चौंकर) उधर बँटी हुई है । मैं जाकर देखता हूँ ।

(श्रीमता से प्रस्थान । आजाद और भगतीतिह ततर्क हो जाते हैं । सुखदेव सौटकर भाटा है ।)

आजाद : क्या बात है ?

सुखदेव : मैंने कह रक्ता था, माभी ने पाँच सौ मेक दिये हैं । सोहन के प्रयत्न से मो दो सौ घाये हैं ।

आजाद : अब हमें साधियों को लोहीर से बाहर मेकने की श्रीमता करनी बाहिए ।

भगतीतिह : युद्ध छिड़ चुका है ।

आजाद : असो, अब देर करना ठीक नहीं है । बाफ़ि प्रवेश होगया है ।

(सब मंच से बाहर हो जाते हैं ।)

यहाँ

दृश्य तीसरा

कलकत्ता, रैठ ब्राह्मण का बँगला

१९२५ दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह की रात

(दुर्गीला बीबी, दुर्गा मायी भगवतीचरण और भगवतीहू बँडे हैं । दुर्गा मायी के पास कोच पर उनका बँगला लगी लो रहा है ।)

भगवतीचरण : (दुर्गा से) तुमने लो गबन कर दिया ।

दुर्गीला : (हँसकर) सबमुच बताओ लो यह सब हुमा कैसे ?

भगवतीचरण : तार पाकर मै लो हिराम था कौन दुर्गाबती, कौन भाई ?

दुर्गा : यह सब इस लो गसती थी । कहीं तुम घोखा समझ कर स्टेशन न पहुँचते लो बड़ी हिरामी होती ।

(प्रिकाफ्त के घन्टाङ्ग से भगवतीहू की ओर देखती हैं ।)

भगतसिंह : जल्दी मैं मुझे तो यही नाम याद रहा ।
छपमुच बड़ी भूल हुई ।

गुप्तीसा : पर तुम भाई कैसे इसके साथ ?

शुर्गा : भाई क्या सुश्रुदेव ने भाकर बताया कि पंडित जी तो तीर्थयात्रियों के एक दस के साथ प्रयाग के पंडा बगकर निकल गये हैं । अब एक साथी भीर रह गया है । मैंने कहा, उसे भी किसी तरह निकालो । साहीर तो बसनी से छाना आ रहा है । भावियों का छिपना तो इस समय असंभव है । उतर में उसने बताया इसीलिए तो तुम्हारे पास धाया है । मेरे पास ! मैं हैरान हुई, मैं क्या काम भा सजती हूँ । क्यात धाया, धायद रुपये न पहुँचे हों । पर उसने कहा, नहीं रुपये तो मिल गये । अब अगर तुम उसके साथ उसकी मेमसाहब बनकर जाने की हिम्मत कर सको तो धायद वह भी बच जाय । (सल भर चुप रहकर) बोसो या राकोगो ? दाबी बो भी साथ रराना होगा । स्टेशन पर पूछताछ भी हो सकती है, पकड़

थकड़ भी हो सकती है और तब बकर
 गोभियां चलेगी । इतने बड़े सतरे का
 सामना कर सको तो बोलो । मैं सकते में
 पड़ गई । संभावित सभी सतरे मेरी धाँसों
 के आगे से निकल गये साथ ही इन लोगों
 के ऊपर मडराने वाली मत्स्य की छाया भी
 सामने आ गई । प्रचानक ही मेरे मुँह से
 निकल गया, जा सकूगी । क्यों नहीं जा
 सकूगी । जब तुम सब मोठ को बरण करने
 के लिए पीबाने हो रहे हो तो मैं क्या इतना
 भी न कर सकूँगी ? सुखदेव ने गद्गद् होकर
 मेरे पैरों की धूलि सिर पर चढ़ा ली और
 कहा भाभी भाभी तुमने मुझे उबार लिया
 है । और, मैं कुछ कहूँ इससे पहले ही वह
 घर से बाहर चला गया पर घोड़ी ही डेर में
 वह साइबी ठाठबाट में सैस एक संवतर्कंग
 मुबक के साथ सौट आया । कहा, यह है
 वह साथी । यह रात यहीं रहेगा । समय पत्र
 टैकसी आकर सबको से जायगी । मुझे
 प्रसन्नजस में पढ़ा देखकर वह बोला, इसे

घण्टी तरह देल लिया ? बताओ, इसे पहचानती भी हो या नहीं घोर तब मैंने गोर से देखा। दाढ़ी मूँछ के बिना भी इसे पहचान गई। मैंने कहा, भगत है क्या, घोर हम सब हंस पड़। इसके बाद क्या हुआ जो इससे ही पूछ लो।

(सब भक्तसिंह की घोर जिताता भर।
दृष्टि से देखने लगते हैं।)

भगत्सिंह मे कहूँगा, पर भाभी जैसी निपुणता के साथ क्या कह सकूँगा।

भगवतीचरण घब पहा रहने से। बता हम सुनने के व्यग्र हो रहे हैं।

मुशीला : हाँ भाई, स्टेसन का अध्याय तो पूरा कर ही दो। दूसरी बातें तो विस्तार से फिर सुनेंगे।

भगत्सिंह एक मीठयान फौजा अप्पार ठीक समय पर टैक्सी में अपनी फमिली के साथ स्टेसन के लिए रवाना हुआ। उसे बसकता मेल से यात्रा करनी थी। उगते सगेत्र पर बाकायदा उसके नाम घोर पर क सेबस सगे से।

टबसी के स्टेशन यार्ड में दाखिल होते ही कुत्तियों ने झुककर समान बोसा और सामान उठा लिया । और सब तो ठीक हुआ परन्तु उसका भ्रष्टसी बहुत ही कुछ और बचतमीब भावमी था । वह अपनी छ्पूटी भूसकर अपने मानिक से दोस्ताना सम्बाज में बातें करती स्या । साहब ने खीझकर उसे झिड़का और कुत्तियों के साथ साथ जाने का संकेत किया । पांच बजे मुह घेंघेरे भी स्टेशन पर बिजसी का प्रकाश था और खुफिया पुलिस का भारी जमघट । मौजदान अफसर टोप को माथे पर मुकाये बन्धे को लिए अपनी मेमसाहब के साथ उनके बीच से निकलता हुआ छूटने को तैयार खड़े कसकता मेस के एक फन्ट हास में दाखिल होगया । भ्रष्टसी ने कुत्तियों की मदद से बिस्तर पहले ही तयार कर रखे थे । गाड़ी ने सीटी दी और ट्रेन क्षण भर में साहीर के प्लेटफार्म से बाहर पूर्व की ओर पूरी रफतार से चली जा रही थी ।

दुर्गा : क्यों रे भगत, तेरे में कहने की निपुणता का अभाव है ?

भगतसिंह : भानी की बराबरी तो नहीं ही कर सकता हूँ ।

दुर्गा : घट् भूटे कहीं के ।

भगतसिंह : (सुधीला से) दीदी, अब तुम्हारी परीक्षा होती है । बताओ, घदंसी कौन था ?

(सुधीला लोचन लपटी है ।)

दुर्गा : (हँसकर) मैं भी साहौर से बहुत दूर निकल घाने तक नहीं जान पाई कि वह कौन था ।

भगतसिंह : और मैं बिना यताये ही जान गया कि कौन था ।

भगतसिंह : तो बताइये, कौन था ?

भगतसिंह : दीदी को बताइये वो । व सोच रही हूँ ।

सुधीला : (बाबे पर हाथ रखकर) सोच रही हूँ, राजपुर के सिवा कौन हो सकता है ।

भगतसिंह : बाह, दीदी !

भगतसिंह : घरे लखमुख बाह दीदी !

दुर्गा : कमास कर दिवा तुमने तो दीदी !

सुसीसा : पर उस बेचारे को कहां छोड़ दाये ?

भयर्त्सिह : उसे अर्धसी का काम बँचा नहीं , हर स्टेसन पर हाबिरी बचाना मामूली ब्यूटी नहीं थी , उसका आत्मसम्मान सजग होते ही बह सटक गया , बिना अर्धखो के ही शेष पात्रा करनी पड़ी , मोफ कितनी ज़हमत ।

(अफसराना अँपड़ाई लेता है ।)

सुसीसा : रात बहुत हो चुकी है , एच एस आर. ए की गौरवगाथा बिस्तार से सुननी बाकी है । वह कस सुनेंगे ।

भगवतीबरण : लेकिन एक बात तो पूछ लेने दो धीवी ।
(भयर्त्सिह से) साहीर स्टेसन पर पुसिस के बीच में से गुजरते समय किसी को सविह नहीं हुआ ?

भयर्त्सिह : एक बार ध्यान तो सबका गया पर फीबी अफसर के यूनीफार्म धीर बिस्सों ने उन्हें बोम्बे में रक्सा ।

भगवतीबरण : फिर धी ।

भयर्त्सिह : उसके लिए तैयारी थी , एक हाथ से बची को गोद में लिये था धीर दूसरा हाथ कीट

की जेब में रिवास्वर के बोड़े पर या राजगुरु के पास भी भरा हुआ पिस्तौल या प्लेटफार्म पार करके गाड़ी में बैठा घीर स्टार्ट होगई तबसक तो लतरा बता हुआ था ।

भगवतीचरण : (दुर्गा की ओर देखकर) मैं इससे इतनी घाला नहीं करता था ।

गुमीला : माई घाप इतने दिन साय रहकर भी हमारी भाभी को परस नहीं पाये ।

भगवतीचरण : नहीं परस पाया । इसका यह रूप छो भेरे सिए एक दम अपरिचित था ।

भगवतीहू : इस नय रूप से परिचय कराने के लिए ; पुरस्कार का हकदार है ।

दुर्गा : पुरस्कार तो तुम्हें सची मे दे दिया है ।

(गुमीला और भगवतीचरण दुर्गा मुह की ओर ताकने लगते हैं ।)

भगवतीहू : यह क्या ?

दुर्गा : यह अपने तबे पाबा भी के साय इतना हिम गया है रि ओर किती के पाग ठहरता ही नहीं ।

भगतसिंह : यह तो और संकट सड़ा होगया ।

भगवतीचरण : क्यों ?

भगतसिंह : वह कहीं भी देख लेगा तो बिल्सावर दूसरों का ध्यान भ्रांति करेगा । यह प्रच्छा है कि वह अभी तक नाम से परिचित नहीं है ।

(दाची प्रचालक बोस पड़ता है ।)

दाची : चाचाजी मैं जानता हूँ । मैं जानता हूँ ।

(सब स्तब्ध होते हैं ।)

दुर्गा : (दाची को घोर में लेकर) चुप घेटा चुग ।

दाची : सबे चाचाजी का नाम—

दुर्गा : (उसके मुह पर हाथ रखकर) चुग नहीं तो लगे चाचाजी नाराज हो जायेंगे ।

(दाची चुप ही जाता है और भगतसिंह के मुह की ओर ताकने लगता है ।)

भगतसिंह (भगवतीचरण से) काग्रेस में गये थे ?

भगवतीचरण : एक दो बार ही गया था । लाहौर भांड ही सब जगह धर्मा का विषय हो रहा है । कई सौपों से मिला जे दादा से भी मामला होपया था ।

मगतसिंह : सच !

ममवतीचरण : सच । इससे उसका सारा श्रेय छूट जाने में
बे सफल नहीं हो पाये ।

मगतसिंह : मुझे मिस आयंगे तो जानते हो क्या
कहेंगे ?

ममवतीचरण : यही कि होशियार रहना । मगवती भी
झाया हुआ है ।

मगतसिंह : मैं समझता हूँ । अच्छा अब यह बताओ कि
प्रतिक्रिया क्या है ?

ममवतीचरण : जनता ने अस्तास का तो कहना ही
क्या । यह तो मैला ही है जो भीतर से
पुछा है तो भी ऊपर से नाक-भौं सिकोड़ते
हैं । साम पर्व से तो सब के दिन दहस
गये हैं परन्तु उसका जबाब नहीं है किसी
के पास ।

सुशीला : जसो मामी हम लोग बसें । ये तो अभी...

ममवतीचरण : नहीं नहीं दीदी हम भी बसते हैं ।

(सब उठ चढ़े होते हैं ।)

दृश्य चौथा

दिल्ली, पीरोन्ग्राह के किले के खंडहर

१९२६ के फरवरी मास की एक रात

(एक. एक घाट. ए की केन्द्रीय समिति के सदस्य नियत समय पर एक एक कर किले के खंडहर में एकत्र होते हैं। सब के सामने पर भयतिह खड़े होते हैं।)

भयतिह : साधियो बाधाओं और कठिनाइयों के बावजूद आज हमारी स्थिति हड़ है। आगरे का काम पूरा होगया है। अब हम राजधानी में आ गये हैं। उत्पादन-केन्द्र हर प्रदेश के लिए समय भसग बनाने की ध्यवस्था हो गई है। आगरे में जो उत्पादन हुआ है उसके परीक्षण भी कर लिये गये हैं और परिणाम सफ्त रहे हैं। साहमत कमीशन जो हम अपने ठोहके मेंट नहीं कर सके और वह इस देश से जाने की सीपारी में

असेम्बली में विस्फोट करके बाहर जाने की तो गुआइस ही न होगी ?

प्रान्साब : गुआइस तो है, प्रयत्न किया जाय तो वे सुरक्षित निकाले जा सकते हैं।

भगतसिंह : परन्तु उन्हें निकल भागना नहीं होना। वे अपने आपको वहीं समर्पण कर देंगे। वे न्यायालय के सामने दस के सिद्धांत धारण, उद्देश्य और विस्फोट के भीक्षित्य पर एक विस्तृत बयान देंगे ताकि दुनियां यह जान सके कि एच एस आर. ए हिंसक ब होवाने युवकों का गिरोह मात्र नहीं है। मानवता से प्यार करने वाला वह एक सामाजवादी लोकतांत्रिक संगठन है।

विजय उनसे बच निकलने का मतलब बिल्कुल उल्टा होगा। जनता को हम अपने संगठन के धारण और उद्देश्य से अवगत न करा सकेंगे। हमारे आग्रिडप्रेरक और धार्तशवादी रूप को प्रतिरोधित करके सरकार न जाने क्या क्या जुमन न करेगी। इसलिए उन्हें

तो फिर जाने की आशा छोड़कर ही मेजना होना ।

कैलासपति : किसको मेजना सोचा है ?

भाबूदास : यह तय करना है परन्तु कम से कम दो को ।

विजय : पंडित जी और रणजीत को छोड़कर किन्हीं दो को ।

भगतसिंह : छोड़कर क्यों ?

शिववर्मा : उस के हित की दृष्टि से । मैं इसका समर्पण करता हूँ ।

कैलासपति : और मैं भी ।

विजय : परन्तु ऐसा बहूँ अवश्य हो जो अज्ञान के सामने हमारे उद्देश्यों और आदर्शों को ठीक तरह व्यक्त कर सके ।

भगतसिंह : तभी तो मुझे मेजा जाय । मेरा विश्वास है कि मैं इस काम को उस की शान के मुताबिक निभा सकूँगा ।

(एक भर सम्मत्त जाया जाता है ।)

शिववर्मा : पुलिस तो साथी रणजीत की सलाह में हाँ है । साहस-वचन के तिसरिसे मैं

प्रसेम्बसो में विस्फोट करके बाहर घाने की तो पु आइस ही न होगी ?

आम्बार : गु आइस छो है, प्रयत्न किया थाय तो वे सुरक्षित निकाले जा सकते हैं।

भगतसिंह : परन्तु उन्हें निकल भागना नहीं होया। वे अपने आपको वहीं समपन्न कर देंगे। वे न्यायालय के सामने दस के सिद्धांत धादर्थ, उद्देश्य और विस्फोट के धीधिय पर एक विस्तृत बयान देंगे ताकि दुनिया यह जान सके कि एच एस धार, ए हिंसक न कीबाने युवकों का गिरोह मात्र नहीं है। मानवता से प्यार करने वाला यह एक सामाजवादी सोकतामिष संगठन है।

विजय : उनसे सब निकलने का मतसब बिस्कुम उल्टा होगा। जनता की हम अपने संगठन के धादर्थ और उद्देश्य से धवगत न करा सकेंगे। हमारे आग्निप्रेरक और धातक्यादी रूप को धतिर्यजित करके मरकार न जाने क्या क्या खुम न बरेगी। इगसिए उन्हें

तो फिर पाने की आशा छोड़कर ही मेजना होगा ।

सैसासपति : किसको मेजना सोचा है ?

प्राज्ञाव : यह तय करना है परन्तु कम से कम दो को ।

विजय : पंडित जी और रणजीत को छोड़कर किन्हीं दो को ।

भगतीसिंह छोड़कर क्यों ?

शिववर्मा तब के हित की दृष्टि से । मैं इसका समर्थन करता हूँ ।

सैसासपति : और मैं भी ।

विजय परन्तु ऐसा वह अवश्य हो जो अदासत के सामने हमारे उद्देश्यों और आशयों को ठीक तरह व्यक्त कर सके ।

भगतीसिंह : तभी तो मुझे मेजा जाय । मेरा विश्वास है कि मैं इस काम को दस की धाम के सुभाविक निमा सकूँगा ।

(कुछ भर सम्भारा घापा चला है ।)

शिववर्मा पुसिस तो साथी रणजीत की उमाश में हा है । सांडस-वष के सिससिते में बहु

फरार है। उमने पकड़े जाने का मतसब है
फाँसी।

कलासपति : भना, उन्हें कैसे मेजा जा सकता है ?

विजय : यह सही है। मगतसिंह को तो किसी तरह
नहीं मेजा जा सकता। यदि साधियों को
मरोसा हो बैसा कि मुझे थोड़ा बहुत अपने
ऊपर है कि मैं दस के उद्देश्यों और प्रायश्चित्तों
को उचित रूप में रख सकूँगा, तो मैं इस
काम के लिए अपने आपको पेश करता हूँ।
प्रायः है आप लोग यह गौरव मुझे देते
हिए बिचार्यगी नहीं।

(कुछ देर मौन छाया रहता है तबे प्रायः
तोड़ते हैं।)

प्रायः पसो ठीक हुआ। दूसरा नाम मैं देना करता
हूँ। सायी मोहन ने विनायक मेजी है कि
इतने पुराने होते हुए उन्हें आज तक कोई
काम नहीं सौंपा गया। यदि इस परिमाण
में उन्हें न रखा गया तो निरास होकर वे
अपने आपको दस से अलग कर लेंगे।

शिववर्मा : उनका प्रायः मान लिया जाय।

(तब स्वीकृति देते हैं । बंदूक उठ जाती है । मुखबेब का सचानक घा जाता ।)

मुखबेब : मुझे विसर्ज होगया । (भगतसिंह को एक घोर से जाकर) निराण्य होगया कौन जायगा ?

भगतसिंह : बन्धू घोर मोहन ।

मुखबेब : बन्धू घोर मोहन, तुम नहीं ?

भगतसिंह : नहीं ।

मुखबेब : (रष्ट होकर) क्यों ?

भगतसिंह : बस का निराण्य ।

मुखबेब : (जसी तरह) घोर तुमने मान सिया ?

भगतसिंह : क्या करता ?

मुखबेब : लेकिन तुम्हारे जाने की तो बात थी ?

भगतसिंह : थी पर दल के भविष्य के लिए मुझे पीछे रखने का फैसला हुआ ।

मुखबेब : यह सब कुछ नहीं है ।

भगतसिंह : तय ?

मुखबेब : तब तुम्हें धरुंकार हो गया है । तुम समझते सगे हो तुम्हारे बिना दल का काम नहीं चरिगा ।

भगतसिंह : सज्जा ।

सुसबेव प्रश्न किया, यह सच है कि तुम भीत से डरने लगे हो। तुम्हें जीवन से मोह हो गया है। तुम कायर बन गये हो और कहना चाहते हो कि संगठन के हित में तुम खहीद बनने के सम्मान का बलिदान कर रहे हो।

भमतसिंह : मैं कायर हो गया हूँ ! मैं भीत से डरने लगा हूँ !

सुसबेव जरूर, तुम उस रास्ते पर चल पड़े हो जिस पर दादा भोग चलते हैं। माई परमानन्द की तरह एक दिन तुम्हारे संबंध में भी यही कैससा लिखा जायगा कि यह धावनी सुत्रदिस और कायर है। सड़क के कामों में यह दूसरों को भोंककर अपने प्राण बचाता रहा है। वर्ना क्या कारण है कि जब तुम यह मानते हो कि तुम्हारे सिवा दूसरा कोई दल के धावण और उद्देश्य को ठीक तरह नहीं रग्य सकेगा तो फिर तुमने केन्द्रीय समिति को ऐसा कैससा क्यों करने दिया ? बासो, है कोई जवाब ?

भगतसिंह : (कुप्लाकर) देखो सुसदेव, तुम बहुत भागे बड़ रहे हो। तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

सुसदेव : मैं अपने मित्र क प्रति अपमान कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ।

भगतसिंह : धन्या तो प्रसेम्बसी में बम फेंकने में ही जाऊँगा। केन्द्रीय समिति को मेरी बात माननी होगी लेकिन तुमने जो मेरा अपमान किया है उसका उत्तर मैं नहीं दूँगा। और धम से तुम मुझसे कभी धाव मत करना।

सुसदेव : (कोई बत्तर नहीं देता पर लजता है जैसे उसका दिल भर घाया हो।)

भगतसिंह : (जादियों के बीच घाकर) सायियो, मेरा अनुरोध है कि समिति अपना मिण्ड बदल दे। प्रसेम्बसी में मैं ही जाऊँगा। विजय से मैं याचना करता हूँ कि वे अपने हिस्से का यह गौरव मुझे ही से लेने दें।

(समिति पुनः बीटती है और बहुत बार विचार क बाद अफ़स्रिह के अनुरोध को

[संघर्षों की नील

]

मान लेती है। सुप्रीम निलंब में भाग नहीं
लेता केवल मुक्तता रहता है और संतान
हो जाने पर शीघ्रता से राशि के सम्बन्ध
में गायब हो जाता है।)

पर्दा

दृश्य पाँचवां

दिल्ली, कुवमिनाबाग के समीप एक. एक. आर. प. का एक सुष्ठु स्थान
म अक्टूबर, १९२६ का एक प्रसंग

मुसवेब साहीर से बोड़ी बेर पहले ही धाया है। वह एकाम्त
बराबि में घबरेला घूम रहा है। डसका मुंह डतरा और बिल भरा
हुआ है। वह किसी गहरी बिल्ला में निमग्न है।)

मुसवेब : मैं समझता था मैं अपने पर पूरा काबू किये
हूँ पर साथी पसपास की दृष्टि में तो मैं
पूरी तरह हिस गया था। देखते ही उन्होंने
पूछ लिया क्यों क्या हुआ ? भाँसें क्यों
सूझ रही है तुम्हारी ? उन्हें क्या मामूम कि
उस दिन मैंने बिल्ला मारी त्याग किया
था। परन्तु मुझे संतोष है कि दस के ध्येय
की पूर्ति के लिए अपने सबसे प्रिय वस्तु का
उत्सर्ग मैं कर सका। ओऊ !... और उसके

लिए मुझे मसास नहीं है ।

(बहरी सांस सेता है भगवतीचरण का प्रवेश)

भगवतीचरण : सुसदेव ओह तुम ।

सुसदेव : भगवती भाई, घाय मोकें से घाये ।

भगवतीचरण : तुम्हीं ने तो कहा था भगवतीह को घासिरी बिवाई देने असो तो रात को खामा हो जाना ।

सुसदेव : अकेसे घाये हो ?

भगवतीचरण : नहीं सब हैं । वे देखो-

(बाहर लंकेत करता है । दुर्गा मुनीता और राबी प्रवेश करते हैं ।)

सुसदेव : घायो घायो । (भगवतीचरण से) घाय सब यहीं रहें । मैं मोड़ी देर में घाय ।

(प्रस्थान)

मुनीता : कितना बठोर बीबन है, ओह !

भगवतीचरण : कठिन घन से ही इतिहास घनता है ।

दुर्गा : घोर तपस्या से भी कठिन घत !

राबी : मां कहां है मने बाबाजी ?

दुर्गा : (प्यार करके) घमी घायने, बेग ।

सुखीता : उन्हीं से मिसने तो हम धाये हैं।

सखी : यह संवे धाधाजी का धर है ?

सुर्गा : हाँ।

सखी पर वे दिलाई तो नहीं वेते कहीं ?

(सब को धोड़कर दूसरे बराने में धोड़
जाता है।)

भगवतीधरस्य : यह गहबड करेगा।

सुर्गा : उससे बहुत हिस गया है।

(भगवतीसिंह सुखदेव के साथ साथ प्रवेश
करता है। सब मिसते हैं। सखी दूर से
ही देखकर 'सखे धाधाजी सखे धाधाजी'
धिसताता हुआ धाता है। भगवतीसिंह उसे
सोद में पठा जाता है धौर बार बार प्यार
करता है।)

सखी धाधाजी हम धापसे मिसने धाये हैं।

भगवतीसिंह : बहुत प्रच्छा क्रिया तुमने बेटा।

सखी : धाधाजी यही धापका धर है ?

भगवतीसिंह हाँ, तुम यही जहाँ जाहो लेस सकते हो।

(सखी बहुत खुद होता है धौर यहाँ बहाँ
धूरने धौरने धोड़ने पधानने सपता है।)

दुर्गा माघो सब इधर बैठो घोर कुछ सा-यो सो ।
 (बे पठरी जोसती हूँ घोर सब बीछे हूँ ।
 भगत्सिंह को रतगुस्ते घोर संतरे बहुत
 पसाव हूँ वही दुर्गा घोर सुशीला माघह
 पूर्वक बार बार पसे देती हूँ । भगत्सिंह
 एक रतगुस्ता लेकर जाता घोर लेसते हुए
 सची को घपने हाथ से झिलाने लफ्फा
 है ।)

सुशीला धरे भाई तुम माघर लाघो । उधे लाना
 होमा तो माप ही घाजायमा ।

भगत्सिंह मेरा लाना बाकी रह गया क्या ? रतमा
 ता सा पुका है ।

दुर्गा : थोड़ा ता घोर ।

भगत्सिंह : (बीछकर) घन्डा साघो ।

(लन्दरे की चंक्र मुह में रकता है ।)

सगीना : यों नहीं ।

(रतगुस्ता उठाकर देती है ।)

भगत्सिंह बग घब नहीं ।

(रतगुस्ता लेकर मुह में लन्दर उठ
 जाता है । दुर्गा घोर सुशीला सब लामान
 लयेद देती हैं ।)

सुसवेव (मड़ी बैकडर) सवा दस ।

भगतसिंह : तो अब चमना चाहिए ।

(उठ खड़ा होता है । उसके साथ सब उठ जाते हैं और भरे हुए हृदय से उसे बिदा बोलते हैं । दुर्गा और सुशीला रोनी और प्रकृत से बसका टीका करती हैं । भक्तसिंह जाने से पहले दासी को प्यार करता है । दासी उसके साथ जाने का आग्रह करता है पर भगतसिंह उसे समझा देता है । श्रीमता से भक्तसिंह निकल जाता है । सुसवेव उसके पीछे जाता जाता है । मधुवतीकरण खिड़की में सिर निकालकर बाहर देखने लगता है । रिजपां डबडबाई घांटों से चुने द्वार की ओर ताकती रह जाती हैं ।)

दासी : (उँगली दिखाकर) वे जा रहे हैं बापाजी, वे जा रहे हैं, धरे वे जा रहे हैं "गये गये धमे गये ।

(मधु पर उगी की घावाज पू जाती रहती है ।)

दृश्य छठा

नई रिजर्वी, प्रोसेम्बली के एक मामूली सरस की बोली ।

मध्य जूलाई १९२६ का सार्वजनिक

(प्रोसेम्बली में बम-बिस्फोट के तात्की जयकर मोतीलाल नेहरू और लॉर्डकुलीन किचनू बंटे बर्बाद कर रहे हैं ।)

मोतीलाल : असल पूछो तो बम बूस्टर मे कैसे थे ।

किचनू : बिल्कुल सही बात, प्रोसेम्बली द्वारा विरस्तृत बिसों को कामूद बना देने की घोषणा असली बम-बिस्फोट था ।

जयकर : वायसराय की विलेपाधिकार इसलिए नहीं मिला है कि वह जनता की पुकार के प्रति कान बंद कर अपना हुकूम चलाये ।

मोतीलाल : अगर ऐसा होना तो भगतसिंह और दास भी रहेंगे ।

किचलू : वे घूस्टर के बिस्फोटों की प्रतिस्वनि मात्र हैं ।

जयकर : घोर प्रब पुलिस बहादुरों की बाहबाही से रही है ।

मोतीलाल : सिमा करे उन्होंने तो प्रयत्न काम कर विनाया । वो कानून वो बच दो गोसियां ।

किचलू : घोर मौत किसी की नहीं ।

जयकर : इससे धनका उद्देश्य तो स्पष्ट है । वे सिर्फ बहरों को सुगाना चाहते थे ।

मोतीलाल : किसी के प्राण सेना चाहते तो रिवास्वर में काफी गोसियां थीं । लोग बिस्सा ही रहे थे कि 'पकड़ो पकड़ो पर पकड़ने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था । दोनों बम फेंक कर इम्कलाब जिम्बाबाद के नारे लगाते घोर लाल पर्व सुटाते सड़े हुए रहे थे ।

किचलू : मैंने तो ऐसी मगदड़ घोर लालबन्नी इतनी जबर में नहीं देखी ।

जयकर : जिसके बिपर सौग समामे वह छपर ही होइ गया ।

मोतीलाल : पर जिन्हें मानना चाहिए था वे इकता से

दृश्य छठा

नई दिल्ली, असेम्बली के एक माननीय सरस्र की ओरी ।

सण्य अर्रेल १९२९ का सारकाब

(असेम्बली में बम-बिस्फोट के शाली अणकर, मोतीनास नेहरू और सईकुरीग रिबनु बंटे बर्बा कर रहे हैं ।)

मोतीनास : अषसत पूछो तो बम धूस्टर ने फेंके थे ।

रिबनु : बिस्फुसत सही बात, असेम्बली द्वारा तिरस्कृत बिलों को कानून बना देने की षोपणा अषसती बम-बिस्फोट था ।

अणकर : षायसराय को बिदोषाधिकार इसलिए नहीं षिता है कि वह अनशा को षुकार के षठि कान बंद कर अषना हुकुम असाधे ।

मोतीनास : अणर ऐसा होगा तो अणतमिहू और इस मो रहेंगे ।

बिबू : वे घूमर के बिस्फोटों की प्रतिध्वनि मात्र हैं।

बयकर : श्रीर घब पुमिष्ठ बहादुरी की बाहवाही से रही है।

मोतीसाम : निया करे उम्होंने तो अपना काम कर दिखाया। वो कानून दो बम दो मोनियों।

बिबू : और मौत किसी की नहीं।

बयकर : इससे उनका उद्देश्य तो स्पष्ट है। वे सिद्ध बहुरों की सुताना चाहते थे।

मोतीसाम : किसी के प्राण लेना चाहते तो रिवास्वर ये काफी मोनियों थीं। लोग भिस्ता ही रहे थे कि 'पकड़ो पकड़ो' पर पकड़ने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था। दोनों बम फेंक कर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते और तान पर्वे सुटाते सके हुए रहे थे।

बिबू : मैंने तो ऐसी भगदड़ और सतबसी इतनी उमर में नहीं देखी।

बयकर : जिसके बिबर सीम समाये बह/उपर ही पोक गया।

मोतीसाम : पर जिन्हे भागना चाहिए वो व दृष्टा से

खड़े थे। पुलिस कब घाये और उन्हें एकदम से जाये इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

किष्कम्भू : भगवत्सिंह को लगा कि पिस्तौल उसके हाथ में है इसीसे शायद पुलिस घागे नहीं आ रही। उसने पिस्तौल एक ओर फेंक दिया और दासी हाथ सजा होमया।

जयकर : और सब सार्जेंट पेरी ने घागे बढ़कर उसे गिरफ्तार किया।

(एक बूढ़ सख्तन प्रवेश करते हैं।)

जयकर हलो, घाइये सर वामन जी बसास !

वामनजी : घाया भई घाया। शुक्र है शुक्रा के घर से सीट घाया।

(लड़कड़ले हुए घाकर लोका घर बँछे हैं।)

सोतीसास मैं घापघो बघाई देठा है। सर घूम्टर का क्या हास है ?

वामनजी : ठीक है। मामूसो सा ही भपट्टा लगा था उन्हें।

सोतीसास नेहरू : और करार ?

वामनजी : (हँसकर) मत पूछिये ; मत पूछिये । तुम
तब हीलमि होगया था । अब तक उनकी
कंपकंपी नहीं गई है ।

जयकर : सर साइमन के लिए कोई डर की बात न
थी । वे तो प्रेसीडेन्ट महोदय के घतिघि के
स्थान पर बैठे थे ।

वामनजी : पर वे भी पसापन कर गये । मीन का डर
घुस होता है ।

जयकर : उनके कमीशन ने भारत की भावनाओं की
कितना उमाड़ा है । यह वे बाते जाते देख
सके ।

वामनजी : मैं आपसे बिस्कुन सहमन हूँ मिस्टर
जयकर ।

मोतीलास : मुझे मिस्टर राव के लिए दुःख है । उन
बेकारों की भाका

वामनजी : ज्यादा बिकृति नहीं आई ।

मोतीलास : और मिस्टर गंकर राव ?

वामनजी : वे भी ठीक हैं । मेजिन नेहरू महाशय धाम

सोर्गों की हड़ता तो सराहनीय है । मिस्टर
गुस्टर का कहना है कि मासवीय, बिना
घाप और प्लेस छाड़ब तो घाघिर तक ऐसे
वने रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो ।

मोतीलाल : गुस्टर ने डेस्क के नीचे छिपकर बड़ी
होशियारी की करना न जाने क्या हो
जाता ।

वामनजी : हाँ वे वास्तवात् बच गये । लेकिन विल
दहला देने वाले भयंकर विस्फोटों में घाप
कैसे बने रहे ?

मोतीलाल : हमें विस्फोटों के बीच ही रहना पड़ता है ।

वामनजी : गुदा गैर करे । मेरे तो कानों के पर्दे
बेकार होगये हैं ।

मोतीलाल : लेकिन उन जवानों की बहादुरी तो दोगो
जान बचाने के लिए भागे भी नहीं ।

(मदनमोहन मासवीय का आना ।)

वामनजी : भाइये पंडित जी ।

मासवीयजी : (बँटते हुए) उस दिन के बाद घात्र घापकी
दिग रहा हूँ ।

बामनजी : खुदा के धुक से लेकिन मैं उन मीबवानों के लिए दुखी हूँ ।

मासवीयजी : मुझे तो उनके लिए पब है । सारे देश को उनके लिए गर्व है । उन्होंने बड़ी बहादुरी से बमभावना को व्यक्त किया है ।

बामनजी : निस्संदेह लेकिन उन्होंने बच निकलने की कोशिश क्यों नहीं की ? सर जरार प्रौर दूसरे सबों की राय है कि वे घासानी से ऐसा कर सकते थे ।

मोतीनास पंसा न करने के लिए वे कुलसंकल्प थे लेकिन सरकार उनके दरारों को सुरे से सुरे रूप में रख रही है । उनके नैतिक साहस को मंग करने के लिए कमीने हथकड़ों का काम में लाया जा रहा है ।

बामनजी : वे सरकार को उछाड़ फेंकना चाहते हैं पीर सरकार उन्हें मष्ट कर देने पर तुसी है ।

मासवीयजी : इस सरकार को तो हम मो उछाड़ फेंकना चाहते हैं ।

बामनजी : लेकिन, लेकिन--

मोतीनाल : वे बेवत विप्लवक नहीं हैं । ये निश्चित
आदर्शों से प्रेरित हैं ?

मासवीयजी : वे समाजवादी सरकार चाहते हैं ।

वामनजी : लेकिन क्या मार्ग उनके लिए उपयुक्त
है ?

मासवीयजी : कम से कम वे अपने ध्येय के प्रति आदर्शवत
हैं ।

मोतीनाल : वे बोरे हिंसावादी पायल नहीं हैं । उनका
उद्घट्ट देश प्रेम जनता के लिए प्रेरणा की
वस्तु है ।

मासवीयजी : उनसे प्रतिदोष लेकर सरकार उन्हें मिटाना
चाहती है । यह धर्ममय है ।

मोतीनाल : हमसे तो य धमक हो जायेंगे । उन्हीं
ग्याति का दिग्दर् एवरेस्ट से भी ऊँचा
होया ।

वामनजी : कुछ भी हो, उनके दुस्माहस मैं घसेम्बसी
को हिता दिया । बहरे जानों को मुतामे के
लिए ओ घड़ाका उग्होंने बिधा उगधे सग्नम
उर दहन गया !

मासवीयजी : उन्हीं नेद को घब बिग्याया जा रहा है ।

संघ द्वारा]

वामनजी : किस तरह ?

मासवीयजी : यही कि दस मुगवित्र होगया ।

वामनजी : नहीं मेने कमा इस पर बिस्वास नहीं किया ।

मोतीलाल : मुझे तो यह खबर पढ कर सिर्फ हँसी आई । व इतने बच्चे लिखाओ नहीं हो सकते । उनका अपना इतिहास है उनके अपने भ्रातृ हैं । प्राणों का मोह छाड़कर अपने ध्येय पर निष्ठावर होनास इस तरह बहकाय नहीं जा सकते ।

मासवीयजी : और अब पुलिस बनना को मानवित कर रही है । लिना मर व घोषियों को इरट्टा कर पूछनाछ भी जा रही है । माटर द्राइवरों को परेशान किया जा रहा है । टाइप मशीनों के मासिनों को घमकाया जा रहा है । विनेमासों डाकगानों तारपटों में पुलिस के भ्रातृ से लाग जाते डरते हैं ।

मोतीलाल : मरठ पठयत्र जमे ही टिसी और पद्मत्र को लड़ा करने की यह भूमिका है । सरकार

अपने दिमागी सहुसन को खो दीठी है। यह कोई सही कदम उठाने की स्थिति में नहीं है।

वामनजी : मैं समझता हूँ आप दुःख कह रहे हैं मिस्टर नेहरू लेकिन लेकिन --

(टैलीफोन की घंटी बजती है। वामन जी रिसीवर कान से सपत्ते हैं।)

हलो, मिस्टर रान। यस यस वामनजी स्पीकिंग। प्लूट दे से दे हैव अमपद् ड ए वाइड स्ट्रेड कास्पिरेसी। माई गॉड ! माई एम कमिंग।

(वामनजी उठ खड़े होते हैं। मोतीलालजी मालवीयजी को धीरे मालवीयजी मोती लालजी को धर्ष भरी दृष्टि से देखते रहते हैं।)

दृश्य सातवा

मिम्बा, पंजाब स्टेशन का प्रीम्पकालीन निवास

१६ सितम्बर १९२६ का सांकेतिक

(आज पंजाब गवर्नर ने लाहौर पड़पान-संबन्धी समस्त कायबस्त तत्त्व किये हैं । कुछ फाइलों धीरे कागजों का प्रचार उसके सामने डेबिल पर लगा है । वह एक काइल उठाकर देखता है । साथ में मरब के लिए बैठा अधिकारी घामे मुक घाता है ।)

अधिकारी : यह पुलिस की रिपोर्ट है योर एक्सेलेन्सी, कि लाहौर-पड़पान प्रब समाया जा सकता है । मुकबिरो की सूचना पर सोसह व्यक्ति गिरफ्त में आ चुके हैं । बाकी फरार हैं उनके लिए सरगर्मी से दीड़ भूप हो रही है ।

गवर्नर : अच्छा, दूसरी फाइल सो ।

अधिकारी (काइल सामने रखता है) धीमान् यह

असम्बन्धी समकाल में आख्यम कारावास की सजा पाय दोनों बंदियों को इस मामले के सिलसिले में पञ्जाब गवर्नमेंट को छोड़ने का आदेश है ।

गवर्नर : भयसिंह और दत्त के लिए । एक मियांवाली और दूसरा साहोर सट्टस जेल भेजा गया था ।

अधिकारी : ओ श्रीमान् ।

गवर्नर : मामूली बंदियों के बंदी ?

अधिकारी : निश्चय श्रीमान् ।

गवर्नर : दिल्ली में ताही मेहमान के तौर पर रह रहे थे । पञ्जाब में आकर ही उन्हें पता लगा कि वे नाम अभागे कैदी हैं ।

अधिकारी : धाम् उनको हिमाकत तो दगिये वे युद्ध बंदियों जैसी सुविधाओं की मांग कर रहे थे ।

गवर्नर : उन्हेंने गोबा धनधान से सरकार को भुजाया जा सकेगा ।

अधिकारी : (झुत्ता कायम रिताकर) धमानुषिक बरबहार की सिफायत थीमन् ।

गवर्नर छोड़ो छोड़ो भागे चलो । (अधिकारी पन्ना चूट रहा है ।) ठहरो बरा देखू । ६ घुसार्ई, मियांवासी जैस से खानगी । तनास एक मधुब पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, एक बिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट तीम सब इन्स्पेक्टर और एक वर्जम सशस्त्र सिपाही । २५ दिन का घुसा कमचोर हथकड़ियों से जकड़ा भगतसिंह । लाहौर स्टेशन पर उसे उतारने के लिए और पचास सशस्त्र सिपाहियों का दस्ता । किसने ऐसा हुजम दिया था देखो तो ।

अधिकारी : सर्वोच्च पुलिस अधिकारी के हस्ताक्षर हैं श्रीमन् । एहतिहासी कार्यवाही ।

गवर्नर : इससे सरकार की कमचोरी भ्रमकती है । एक नोट दो । फिर ऐसा न होना चाहिए ।

(अधिकारी नोट देता है । गवर्नर लही करता है ।)

अधिकारी : (झुत्ती आइस पठाकर) अनसन में विस्तार की रिपोर्ट श्रीमन् । दूसरे अभियुक्त भी अनसन में भगतसिंह और इत के साथ शामिल ।

गवर्नर : हाँ, हाँ। जनता की सहानुभूति पाने का उपाय यथेष्ट किन्तु शासकी से मरा हुआ।

अधिकारी : मोट है श्रीमन्, सरकार न भुक्तों के लिए कृत संकल्प।

गवर्नर : प्रदासनीय मोट।

अधिकारी : प्रदासनीय की दशा में भी केश नाहू। पैदा भुगताने के लिए अभियुक्तों को प्रदासत में से जाना जारी। कोई छूट नहीं, कोई रियायत नहीं।

गवर्नर : ठीक, ठीक रियायत की जरूरत नहीं।

अधिकारी : १७ जुलाई भगतसिंह द्वारा प्रदासत के सामने पुस्तक के दुर्भ्यवहार की बकवास। उपेक्षा करती जाने पर मुकदमा दूसरी प्रदासत में से जाने की धमकी। पुस्तक सुपरिन्टेण्डेन्ट से भगतसिंह की भद्रप। उद्दृष्टा के लिए प्रदासत द्वारा वदियों के लिए दंड की घोषणा।

गवर्नर : स्वयंओं और प्रदासतों की सुविधा छीन

संबंधित विरसूत बियरण ।

(रियो^२ सामने रसता है ।)

गयतर (बैलकर) भगतसिंह का पहला आवर्षक और बुद्धिमत्तापूर्ण । निहामत गभीर और जात । उसकी बातचीत और दृष्टि में सज्जनता । मतीनदाय ता और भी मृदुल तथा एक कन्दा की तरह कोमल और सुचारु । एक वम झूठ और बनाबटी । ये काप्रेस वास य गांधीयादी महिष्ठा और सरय क पुजारी मो बनत है और हिसक-हृदयारों की प्रसता करत भी नदी प्रवत । हमारी सरदार उतकी पसई परवाह नही करती । बनई परबाह नदी करती ।

(येत्र पर हाव प्दरता है ।)

अधिकारी : (एक कापस में से पड़ता है) विद्यार्थी की मुनाकाति भी प्रसफल ।

गबर्नर : जिसका बिन और दिमाग विप्लववादियों के साथ और शरीर काप्रेस का अनुशयी । सोम, ता मभकार और भी ता पासत । दोनों समा में पर रखनेवासा ।

मनसे लहरनाथ घादमी । उठे पत्राब में
पैर न रखने देना था मर ।

अधिकारी (एक छात्र ने छे) जेव जाँच करनेगे घोर
उसको मिफारिजें ।

गवमर : हाँ हाँ घोर उमने कुछ मतसव भी हासिल
किया था ।

अधिकारी भगतसिंह घोर दस ने ८१ दिन बाद
घोर दूसरे बंदियों से २१ दिन बाद
२ सितम्बर को अनशन तोड़ा ।

(गवमर की बुका कन्या का प्रवेश)

कन्या उनका साहम गजब का है न पापा इतना
संवा अनशन ! इतिहास में अनोखा !

गवमर (अचकचाकर) तुम ऐसा कहनी हो मेरी
बच्ची ?

कन्या क्यों न कहूँ ?

गवमर : वे मूनी हैं, विद्रोही हैं ।

कन्या वे हाइ-मांस के बने हैं वे घादमी हैं ।

गवमर तुम अस्वस्थ दिगती हो । जाओ घोर
प्रायम करो मेरी बच्ची ?

सबधित विरहृत निवरण ।

(रिपोर्ट सामने रखता है ।)

गवर्नर : (बेसकर) भगवत्सिंह का चहरा भावपक
घोर कुट्टिमत्तःपूर्ण । निहामत गभीर घोर
घात । उधकी बातचीत घोर दृष्टि में
सज्जनता । यतीनदास तो घोर भी
मूढस तथा एक कन्या की तरह नोमस घोर
सुघोस । एक वम भूठ घोर बनावटी ।
ये बापेस बाल ये गाधोयादी अहिंसा घोर
सत्य के पुजारी भी बनस है घोर हिंसक-
हृत्यारो की प्रसता करते भी नहीं बनस ।
हमारी सरकार डाकी कर्तई परवाह नहीं
करती । कर्तई परवाह नहीं करती ।

(मेत्र पर हाथ पटकता है ।)

अधिसारी : (एक कायम में ही पढ़ता है) विद्यार्थी की
मुलाकात भी अयफल ।

गवर्नर : जिसका दिन घोर दिमाग बिप्लवपादियां के
साथ घोर चरार बापेस का अनुशायी ।
सोमरी या मवहार घोर कोर सा
बालाक । दानों नामों में पर रगनेबाला ।

मथमे गवर्नरनाक घादमी । उने पंजाब में
पर न रखने लेना था मर ।

अधिकारी (एक छाइन में से) जेन बाघ नमेगे घौर
उसकी सिफारियो ।

गवर्नर : हाँ हाँ घौर उमने कुछ मतमय भी हासिस
क्रिया था ।

अधिकारी भगतसिंह घौर टल ने ८१ दिन बाद
घौर दूसरे बंदियों ने ५१ दिन बाद
२ सितम्बर को अनशन छोड़ा ।

(गवर्नर की पुवा कन्या का प्रवेश)

कन्या : उनका साहम गजब का है न पापा इतना
सबा अनशन ! इतिहास में अनोखा !

गवर्नर (प्रश्नकार) तुम ऐमा कहती हो मेरी
बच्ची ?

कन्या क्यों न कहूँ ?

गवर्नर वे मूनी हैं विद्रोही हैं ।

कन्या वे हाइ-मािम के बने हैं, वे घादमी हैं ।

गवर्नर : तुम अस्वस्थ नित्ठी हो । बाघो घौर
घायम करो मेरी बच्ची ?

कम्या : (घनसूती करके) पापा मैं तब देघभच्छ लहीब के लिए धांसू न रोक सकी ।

गबनर क्या ?

कम्या : वही यतीमदास जिसकी सब-यात्रा का पय, साहोर से कसकसे एक, फूसीं धोर धांसुधों से बना था ! वह उसका हकदार था पापा क्या वह नहीं था ?

गबनर : थोड़ सयसे बड़ी गुसली जो सरकार ने की वह यह थी । उसका मत धरिरे देना नहीं था । उन्होंने उससे पूरा फायदा उठाया । उन्होंने सारे देघ में धाग बरसा दी है । (धधिकारी के प्रति) एक धादेस सिराे इसकी पुनरावृत्ति एक दम बजित । वंदियों के धाप उनके धरधामों की धौपने की प्रधा गमाप्त ।

(धधिकारी धादेस लिखता है । गबनर सही करता है ।)

कम्या पापा पापा धर्माधिक क्रूर धोर धमानुधिन धादेस ! धृपया इसे रू कर दोजिये ।

गबनर : धागत इसी तरह होता है बेटी ।

भगवतीचरण ने अपना नाम रखाने के लिए बहुत दिव की। अतः पूर्व निर्दिष्ट नामों में से ताची यशपाल को अलग रखा गया। भगवतीचरण अपने प्रति फैलाये गये भ्रम को दूर करने के लिए, कि वे सरकारी गुप्तचर हैं इस जोखिम के कार्य में अपने प्राणको मँडक कर अग्निपरीक्षा देना आवश्यक समझते थे। यशपाल अनाथ थे परन्तु इस के निर्णय के आगे नतानि थे। दोपहर से बहने ही से रहे-बचे कार्यों की पूरा करने निकल पड़े थे और सभी सभी सौदकर भोजन करके बैठे हैं। बंदे के काम पर निपुण ताची दीनविहारी जाना साकर डेबल पर लपटते हैं।)

यशपाल : (विनोद से) बेरा खाना एक बम ठंडा होगया है।

दीनविहारी : होमया है, हूपूर।

यशपाल : आज तो खा सेता है लेकिन घायम्दा...

दीनविहारी : घायम्दा नहीं होगा हूपूर।

(झुककर घबरा करता है, लुपटीला और दुर्गा मुह बनाकर हँसती है।)

यशपाल : (जाते जाते नरनपोषाल से) भैया नहीं दिया रहे हैं ?

मदनगोपाल : वे घस्यन्तरी के साथ गये हैं। मोटर का ड्रायस सेने और ड्राइवर का प्रबंध करने के बाद ही आयेंगे।

घिर घाना । मुसदेबराम का पीड़ा से
छटपडाता ।)

यशपाल : यह क्या कर लिया ?

मुसदेबराम : (पीड़ा से कराहते हुए) परीक्षा के लिए
फँकते समय बम हरी भाई के हाथ में फट
गया । वे बुरी तरह घायल होकर पड़े हैं ।
मेरे वीर में चोट आई है । बचपन कुछ दूर
था । यह बच गया । यह उनके पास है ।

(सब इस संवाद से रतप्य रह जाते हैं ।)

यशपाल : मदनगोपाल तुम यहाँ रहो । मैं भीर
वीरबिहारी जाते हैं ।

(यशपाल और वीरबिहारी का मुसदेबराम
से स्वान और बता पुपकर भागते हुए
प्रस्थान ।)

दुर्गा : (घातों के घाँसू रोकर मुसदेबराम से) वे
कैसे हैं भाई ? कैसे फट गया बम ?

मुसदेबराम : उनके चोट काफ़ा है मामी ! वे बम हाथ में
लेकर फँक रहे थे । उग्रता पीड़ा कुछ बीसा
मामूम पड़ा तो बोले यह ठीक नहीं है । इसे
रद्दने दिया जाय । मैंने कहा, डर सगता हो
तो साधो में फँक दू । मैं उनसे बम सेने के

उत्तके अपचार में लग जाते हैं। धात्राव का घाला घौर इस अव्यक्त बुर्धनवा की अवर से स्तम्भ होकर बँठ जाता। पद्यवास और वैद्यभ्यायन का प्रवेश १ उन्हें देखकर सब व्यपत्ता से अवीर हो उठते हैं। उत्तर में वैद्यभ्यायन कूट कूटकर रोने लगता है।)

यशपाल : (भरे हुए गले से) हम अपने बहादुर सेमानी को बचा नहीं सके।

(दुर्गा की चीख निकल जाती है। वह एक निरधेष्ट भुति मात्र बनकर रह जाती है। सुधीला अपना सिर चामकर बँठी रह जाती है। मदनमोपास एक भुत की भाँति पड़ा रहता है।)

सुसदेवराज : (चीखा से) ओह, बेहद दर्द है !

(धैर्यबिहारी का प्रवेश ।)

यशपाल : (बोध से) तुम्हें वहाँ रहने के लिए कहा था न ? तुम छोड़कर कैसे आगये ?

धैर्यबिहारी : मृत्यु होने के बाद ही आया हूँ।

यशपाल : फिर भी छोड़ना तो नहीं था। हम पुकारते

पुकारते परेशान होगये । भँवेरी रात में
जगह हूँ बना मुक्तिम होगया ।

धसबिहारी : रास्ता दिखाने के लिए सफेद बज्जियां
सटका दी थीं न ।

धाबाद : लेकिन छोड़ जाने के लिए तुम्हें किसने
कहा था ?

(धाबाद की बीबी परसु हड़ धाबाद
धसबिहारी को चुप रह जाने के लिए
बिस्मय कर देती है । वह धपना सिर
भुंका नेता है । बीसम्पासन सिसकता
रहता है ।)

यज्ञपास (धाबाद की घोर बैकतर) धब ?

धाबाद : धब क्या हो सकता है ? (भाभी को लक्ष्य
करके) तुम हम सब की मां-बहिन से बढ़कर
हो । तुमने एस के लिए धपना सर्वस्व दे
दिया है । हम सब कभी तुम्हारे ऋण से
उत्प्रेरण न हो सकेंगे । धपना दण्डा घोर
भाई समझकर तुम जो धावेश दोगी उसे हम
धपना पवित्र कर्सेब्य मानकर पूरा करेंगे ।

(दुर्वा निर्बाक तिस्रद बनी रहती है ।

धबादक धापना मे उसे काठ बना दिया

है । उसका निरखल पीन आत्मबल
 उपस्थित साधियों के बीच को हिला देता
 है पर जिस स्थिति में ये इच्छु हैं उसमें
 इससे सहायता ही मिलती है । आजाब
 और बख्त उन्हें सहारा देकर पलम तक
 से आस और सिटा देते हैं । सुधीला को
 भी दूसरे पलम पर सिटा दिया जाता है ।
 उधर की बतियां बुझाकर भंज छे उस
 भाग पर घंभेरा कर दिया जाता है ।
 आजाब और मझपास को छोड़कर सब
 साथी निकल जाते हैं ।)

मझपास : एक थोड़ा की मर्यु !

आजाब : जिसका मानम भी हम मुसकर नहीं मना
 सकते !

मझपास : यही हमारी मजयूरी है । सेबिन से आज़िर
 तक हड़ से ।

आजाब : कुछ बोस भी पाये ?

मझपास : मुझे बेगकर बोले, तुम आगये और इधर
 उधर मज़र दोड़ाई । मैने कहा नेवा घर पर
 नहीं से । मैं और खैनबिहारी मुनत ही दोड़े
 पाये हैं । कहने लगे कोई बात नहीं । ये

भी भा जाते तो देख सता ।—प्यास से भीम
 ऐंठ रहो थी । बन्धन भीगे कपड़े से पानी के
 सूद मुह में निचोड़ देता था । हमने उन्हें
 बाहों पर उठाने की कोशिश की पर घसड़ा
 पद से वे चीख पड़े अतः मैंने कहा, धरमामा
 नहीं धमी खाट साता है । बोले बरता नहीं
 है पर इसना भफसोस जाकर है कि भगतसिंह
 को छुड़ाने में योग न दे सकूया । काश, यह
 मौस दो दिन बाद घाती । मैंने कहा तो
 खाट साता है । बोले, बेकार है । बस का
 पड़ाका पूर डूब तक सुना गया होगा । नहीं
 संदिह में पुनिस सोच करती प्राजाय तो क्या
 फायदा ? मेरे हाथ भी तो नहीं रहे । यदि
 वही साधित होते तो तुम एक रिवास्वर दे
 जाते और पुनिस को मेरे प्राहत होने की
 सूचना दे देते, तब अत समय उससे दो दो
 हाथ करके ही जाता । यही कसख रह
 गया ।—और देता भगतसिंह को छुड़ाने
 का प्रयत्न करना नहीं चाहिए । मैंने कहा,
 नहीं खेना और दो दिन बाद तुम उखी

मिल सकोगे । इस पर हँसे, बोले दो दिन किसके ? बम का कोई टुकड़ा गुद में जा फँसा है । मैं बम थोड़ी बेर का ही मेहमान हूँ ।

प्राजाप : (धातों से धातु पौछते हुए) ऐसे कमनिष्ठ सर्वस्वस्यामी बीर पर भी हमारे दस के लोगों ने संदेह किया । यदि पाप कहीं है तो इससे बड़ा भ्रमार्जन्तिय पाप दूसरा न होना ।

यशपाल : छैनबिहारी को पास छोड़कर मैं घोर बच्चन भागे कासेज बोर्डिंग से दो पादरें घोर राट ली । छेठी घोर वात्स्यायन को भी सहायता के लिए से लिया । इन्द्रपाल भी मिला गया । हम रात के सपन धंधकार में बड़ी मुदिम्न से वहाँ पहुँच पाये । जाकर देखा तो सब समाप्त हो चुका था । छैनबिहारी उनकी मृत्यु हो जाने के बाद शायद वहाँ से भाग आया था । मैंने साथ सार्ई पादरों से शरीर को छुट दिया । सबने बीर योद्धा के शव को धातिरी ससामी की घोर उमड़ते हृदयों को दबाकर सोट घाये ।

भाजाब : (मर्माहत होकर) तो शव के अंतिम संस्कार का प्रबंध—

यशपास : रात भाषी से अधिक बीठ चुकी है । कुछ देर ठहर कर बसेंगे ।

भाजाब : कहीं जंगली जानवर शरीर को लूना न करें ?

यशपास : इतनी देर न किया होगा तो न करेंगे ।

भाजाब : शरीर भुरी तरह क्षतविक्षत होगा ?

यशपास : बहुत भुरी तरह । एक हाथ कसाई से उड़ गया था । दूसरे की रेंगलियाँ खसी गई थीं । आँतें पेट के बाहर घामई थीं । शरीर सह मुहान हो रहा था ।

भाजाब : मामूम पड़ता है बम हाथ में ही फट गया था ?

यशपास : यही सगता है ।

भाजाब : अब एग्जग किस तरह होगा ? वो घावमी कम होगये हैं ।

यशपास : उनका अंतिम अनुरोध था कि एकदम न रुके । वह तो करना ही होता ।

मासिरी इच्छा वो आदमी कम पढ़ मये
 एक तुम, एक हम में से किसी और को
 चुन लेमा ।

(धैलबिहारी और मदनमोपाल की ओर
 संकेत करते हैं ।)

पर्वा

दृश्य दूसरा

लाहौर, सेंट्रल रेल

७ अक्टूबर १९४७ का सामंजस्य

(लाहौर वरुण केत के लिए नियुक्त ट्रिम्बुवत ने प्रायः अपनी प्रवृत्ति बना दिया है, वह सबर प्राग की तरह बोस्टन घेन से टैम्बुन केत की बहारीबाटी के प्रायः प्युब गई। कोठियों ने कामा केत से इनकार कर बिना प्रौर सप्ततिह जिवाबाब के नारे सपाते हुए अपनी अपनी कोठियों में लौट प्राये। केत के अधिकारियों में हलचल मच गई है।)

जेसर : क्या बात है ? सब बार्डरों को हाजिर करो।

नायब जेसर : सब घा रहे हैं हुबूर।

(एक एक करके सब बार्डर प्राते हैं ।)

जेसर (बार्डरों से) यह कैसा हुंगामा है ?

बार्डर : (चुप)

पड़ते हैं । नायब जेलर बमराया हुआ प्रवेश करता है ।)

नायब जेलर : साहोब पड़्यय के फांसी घोर जगम कंद की सजा पाये हुए बंदी हुआ ।

(हुसनामा हाथ में पकड़ता है ।)

जेलर : किसने हैं उनको प्रन्दर सो । उनको प्रन्दर सो ।

(जेल के भीतर से पम्बी फिर 'भगतसिंह त्रिवाबाद की घायल सगाते हैं । भगतसिंह मुरारबेब राजगुरु घोर उनके पीछे बच्च कंद की सजा पाये हुए बंदी एक एक कर प्रवेश करते हैं । वे 'हुसनाब त्रिवाबाद' के नारों से संबन्ध को गुना बेटे हैं । जेलर के बहेरे का रस उड़ जाता है घोर वह हबदा बचका हो जाता है ।)

नायब जेलर (जेलर से) दो सो पुनिम के जबाब

जेलर : पहले इन्हें बंद करो ; उन्हें पीछे देखेंगे ।

(बंदियों का संबन्ध से जेल के घबर की घोर तेजाया जाना । गोरे जेल मुरारियेगोस्ट का प्रवेश ।)

सुपरिन्टेन्डेन्ट : (ध्याप से) ध्यान तो ध्यापके बेस में बड़ी रौनक है

बेसर (मुन्कर) हुजूर, बेस का अनुशासन धाब खतरे में है ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट तुम ऐसा कहते हो राय साहेब !

बेसर : बेस के बाहर घोर भीतर एक सूफाम उठ खड़ा हुआ है । ध्यापके इकवास से बेस के मदद हम उसे इस तरह नेस्तनाबूद कर देंगे कि उसका निगान भी याकी नहीं रहेगा ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट यह तुम्हारी बफालारी का सबूत होगा ।

बेसर बन्द्या गरवार का नमकहमास मीकर है ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट मैं जानता हूँ । "पुसिस के बवान तुम्हारी मदद को धा रहे हैं ।

(सुपरिन्टेन्डेन्ट का जाना घोर उँडे तथा काठियां लिए हुए पुसिस के सिपाहियों का बतार को बतार मंच पर से निकलकर भीतर बेस में प्रवेश करना ।)

बेसर नायब साहेब जाधो घोर दगो । एक एक को बोन बोग कर

नायब कोई नहीं बधेरा हुआ ।

खेतर उसके बाद सबको चबिन्यों पर दो । रात भर, दिन भर

नायब : घाप यहीं से मुमते रहिये ।

खेतर : और देखो बाँडरों को भी—

नायब भी हुआ ।

(पुस्तक के खतानों के पीछे नायब का प्रस्थान । निपट्य से 'इम्कानाह जिवाबाह' के सुगुग घोष का बाताबरण को भीरवे हुए गुनाई पढ़ना । उसके बाद भीरना पिस्ताना और चर्मनाह का नभमेही पद निरन्तर घाना भीर संभ का कापना । खेतर का वेशाचिह्न घट्टहास ।)

दृश्य तीसरा

इलाहाबाद हीक्ट रोड का एक एकान्त रैलीगा

२७ अक्टूरी १९१२, दोपहर से कुछ पहले

(तीन पत्रकार सब भी पाठक धुमेकर और नायडू एक छोटे से कपरे में इतमीगान से बँटे बाय पी रहे हैं । बीच बीच में गप्पाप बात रही है ।)

पाठक डेढ़ सौ साल राज करके मंत्रियों को पता चल गया है कि जिसे वे घोसाघडी में गटक गये थे उसे पचा सेमा उनके बस में नहीं है । बायसराय की ट्रम को चढ़ाने और पंचाय गवर्नर पर गोली बसामे के साहस पूर्ण

धुमेकर : हम घासिरी दो सालों में तो—

पाठक उन्हें नाकों बने बचाने में कसर नहीं रही ।

नायडू (प्याले में डालकर) पास की बोम् बडी बिलार्ड देती है । संघप की सबी परंपरा में

ये दो सास भलग कोई बड़ा महत्व नहीं रखते ।

पाठक : मेरे विचार से लगते हैं । सीडर्स-बब से भव तक घटनाओं को एक दशव्यापी श्रृंखला ने उन्हें धतीत से कुछ अधिक महत्व दिया ही है ।

नायडू : हमें ऐसा लगता है ।

धुमेकर : सिपाही-विद्रोह वंगीय क्रांति दिस्ती और पञ्जाब के प्रयास व दूसरे क्रांति प्रयत्न

नायडू : (बोध व रोडकर) हाँ हाँ अपने समय और स्थान के सिद्धान्त से ऐसा ही महत्त्व रखते थे । उस काल का कोई आदमी होता तो यह बताता ।

पाठक : मेरा मतलब उनका मरना जो कम प्रायश्चित्त से नहीं है ।

नायडू : तो ?

पाठक : उद्योग विरायत से प्रेरणा पाकर ये दो गाँव प्रवेशों के प्राग एक प्रान्तबिद्घ बनकर गढ़े हुए हैं ।

धुमेकर : क्रांतिकारियों से जेगो मर गई है । परपुरांड

के उपहार न्यायालयों में बँट रहे हैं। घर घर घोर नगर नगर पकयत्र-केस बस रहे हैं। गोमियों से जबहू जबहू युवक मूने खा रहे हैं

पाठक सामूहिक अनशन बस रहे हैं दिनों हफ्तों नहीं महीनों

नायडू हाँ इस मामले में जरूर रिकार्ड ठोठ दिया गया है।

पाठक यही नहीं चर्चोंने साधों से स्वराज्य की पगडबडी को राजपथ में बढसा है। अश्रेयों को सगने सगा है, माषी पोड़ी भगतसिंह, सुखदेव राजगुरु और भ्राज्जाद बनने जा रही है।

धुसेकर संगीनें फ़रसी और उत्पीडन नई पीघ को ताद-मानो का काम कर रहे हैं।

नायडू : फिर भी भभी बहुत सबा रास्ता है। मे आपको हतास मही करना चाहता। भभी भगतसिंहों और भ्राज्जादों की नई फ़सलों को इसी तरह नींव में दबना पड़ेगा। फिर भी

यह निश्चय नहीं कि इस देश में किस तंत्र को बढ़ मजदूर हो सकेगी ।

धुसेकर : हम पत्रकारों का भी कुछ वर्तमान है ?

नायक : हम यह पूरा कर रहे हैं ।

पाठक : (पुटकी लेकर) चाय की मेज पर विवाद करके ?

नायक : हाँ हाँ यही तो रास्ता है ठीक नियम पर बहस करने का ।

धुसेकर : हम ठीक नियम पर बहस गये ।

पाठक : किस नियम पर ?

नायक : हम पत्रकारों को बलम रखा कर विस्तृत उठा सभी चाहिए । साजाया के कर पिछड़े में बस है । उम्हें घोर दोषों को जरूरत है ताकि एक एक घर ए का काम दिन दिन दूमी गति से बढ़े सके । प्रत्येक घर बरकर जा काम मजदूरों के धाम बढ़ा है उम्हें हस्त प्रस्तुत करगा ही होगा

(पत्नी सामय पत्रकार की तैम बबुआये हुए घाने हैं घोर बिना किसी को देने एक कुर्मी कर पप-ले बंड खाते हैं ।)

सेन : (बिस्लाकर) बेरा बरा एक बप चाय ।

नायडू : इतने उत्तेजित किसलिए है मिस्टर सेन !

सेन (बीककर) ऐं तुम सब ! मुता नही भरफु व
पाकं मे भारी गोलीकांड हो गया !

पाठक गोलीकांड गानीनांड, किससे ?

सेन धाजाद और पुलिस में ।

पुसेकर (उत्तेजित होकर) तो यहाँ क्या कर रहे
हो ? पलो दीडो दसैं ।

सेन : वे धाजाद की सादा तो ले गये ।

(उठ खडा होता है । पाठक भी खड़े हो
जाते हैं ।)

नायडू : (पड़े होकर) चाय को गोली मारो सेन ।

जमो हम उस मूस्युअय के करिदमें को
अपनी भांगों से देस घिना नहीं रह सकते ।

(सेन्नी से सब निकस जाते हैं । बेरा चाय
लेकर आता है और मुह चाये फड़ा रह
जाता है । दो मवपुयक बरहुबास से अबैअ
करते हैं बरा उनके चाये चाय एव देता
है ।)

पहुसा मुयक में तो चोडो ही दूर था । बह पुकारावित्

भाराम से भेटा अपने साथी से बातों में सम्मिलित था ।

दूसरा युवक : विहकुल बंशबर ?

पहला युवक : फिर भी पुलिस की माटर पास भाते ही वह एक दम उछला और बागों घोर से दनादन गोलियाँ छूटने लगीं । पुलिस कप्तान की पहले से साथी हुई गोली उसके सगे साथ ही उसकी गोली ने कप्तान की बस्ताई बोंघ कर विस्तृत दूर गिरा दिया । परन्तु पुलिस टिड्डीदम की भाँति उसे घेर चुकी थी । गोलियाँ लाकर भी यह शेर विस्तृत पताय जा रहा था । उसकी घागिरी मोती एक बड़े पुतिल घघिपारी क मुह में घँस गई । उसके बाद में ठहरा नहीं भागा और भागा ।

दूसरा युवक : और उस साथी का क्या हुआ ?

पहला युवक : वह शायद जान बघाकर भाग गया । उसकी घोर में ध्यान नहीं दे पाया ।

दूसरा युवक : क्या बायर था !

पहला युवक : यहाँ घाकर गुना कि यह घोर बही था

जिसक दधनों क लिए हम दोनों मटकते फिर रहे थे ।

दूसरा मुबक : आज्ञाद वे आज्ञाद थे ? क्रांति की जीवन्त मूर्ति आज्ञाद ! ताय सो क्या अब उनके दशन भी न हो सकेंगे ? अब उनके बिना भगर्तसिंह को कौन छुबायेगा ?

पहला मुबक : मैंने उस वीर के दर्शन कर पाये । यह मेरा सौभाग्य था । पर कही पता होता कि यही वह हस्ती है तो

दूसरा मुबक : तो सुन भी शहीद हो जाते ।

पहला मुबक : हाँ जीवन्त सफल कर सेता ।

(बंरा भीतर जाता है ।)

बंरा : आप चाय तो नहीं पी रहे हैं ?

दूसरा मुबक : नहीं ।

(दोनों उठकर बाहर निकल जाते हैं ।

यद्यपि घोर सुरेन्द्र पांडे प्रवेश करते हैं ।)

पांडे : सर्वनाश !

यद्यपि (तिर बकड़कर) सेबिन यह कैसे हुआ ?

पांडे : हमका धायद कभी पता न लगे ।

सड़ने मीर मास्टर पुसिंग से नाराज हैं ।
न जाने क्या होगा ।

पांडे (पद्मपाल से) तो घलें हम सोग देखें तो
सही ।

पद्मपाल : क्यों ।

(दोनों क्षीप्रता से निकल जाते हैं । सुतदेवराज
प्रवेश करता है ।)

धरा इधर हड़्कुर ।

(एक कुर्सी पग बैठा है । धारंगुलु बंठ
जाता है । धरा पाय रोमे बना जाता है ।)

सुतदेवराज मैं बूछ नहीं जानता । मैं बूछ नहीं जानता ।
मैंने बूछ नहीं देगा । मैं यहाँ था ही नहीं ।
वह कोई और होगा । कोई और होगा । पर
पद्मपाल उमने पायद देग सिधा हो तय,
तब तब आय गरम आय । बरा गरम
आय । गरमागरम आय ।

धरा । (प्रवेश करते) माया हड़्कुर ।

(पाय तापने डेबिंग कर रगता है ।
सुतदेवराज पहरी बतरी पाय बनाता और
पीता है । उताके हाथ कांप रहे हैं ।)

मुसदेबराज : घोड़, वीरभद्र निवारी । क्या वह उधर से नहीं आ रहा था ? भया ने उसे देखा था । मुझ से कहा भी था । तो वही होगा । और गोसीकांड में मैं रफूषवकर हुआ । यह तो भया का ही आदेश था । मेरे लिए उनका आदेश मानना ही था । वस के लिए एक सापी के प्राणों की कीमत ने समझते ही थे । तो सब कुछ यों हुआ । वीरभद्र सचमुच वीरभद्र ! मैं नहीं आता । मैं नहीं कह सकता ।

(बूतरा प्याला चाय बनाता और पीने का यत्न करता पर हाथ काँपता और प्याला छूट पड़ता है । प्याला टूटने का दारु सुनकर बेरा जाता है ।)

बरा : हुप्पूर, हुप्पूर ।

मुसदेबराज : (भ्रुंभलाकर) एक दम ठंडी चाय एक दम ठंडा !

बरा नहीं हुप्पूर नहीं हुप्पूर ।

मुसदेबराज : बिस साभा वैमे लो । आभा आओ ।

(बरे का आला छसदेबराज का पत्ने
 होकर गस्ती जाती टहलवा फिर मंच से
 बाहर ही जाता ।

पर्दा

दृश्य चौथा

गर्द सिन्धी, होम गैमर की कोठी

२८ फरवरी १९३२ का सांकेतिक

(जेम्स डेरार एक बड़े कमरे में बंटे सामने रखी काइस में कुछ आवश्यक नोट लिख रहे हैं । सरजार्ज डूस्टर प्रवेश करते हैं ।)

डूस्टर : जेम्स, तुम्हारा विभाग अब शांति से सो सकेगा ।

डेरार : हाँ, जार्ज धारे पुलिस मोहकमे की इज्जत कसौटी पर थी ।

डूस्टर : धारचर्यजनक निडर और निर्भीक ।

डेरार : एच एस धार ए का सेनापति, बेखौफ और बहादुर ! मैं उससे ईर्ष्या करता हूँ ।

डूस्टर : सोभाग्य से वेखुबरी में घेर लिया गया ।

डेरार : नहीं तो क्या हाथ धाता ? हम मर्ल बाबर से और हाथ धो बैठते ।

शूस्टर : अब तो वह 'आजाद-विजेता की घमर
क्याति का गर्ब कर सकेगा ?

केरार : नहीं, उसे नहीं करना चाहिए। वह सिर्फ
अवसर की बात थी।

शूस्टर फिर भी बह योद्धा की मौत मरा !

केरार : लेकिन गुलाम देवा का योद्धा ! एच एच
आर ए के प्रधान-सेनापति को फौजी
सम्मान भी नसीब न हो सका। मैं सबकुछ
हृदय से दुःखी हूँ।

शूस्टर : जैम्स तुम उसके प्रति इतनी सहानुभूति
रखते हो।

केरार : मुझे रमनी चाहिए जार्ज। इतनी पुलिस,
इतनी सी आई डी इतनी सेना इतने
सापन और हम सृष्टी भर युवकों को काबू
न कर सकें। बोल्शेविकों और कांग्रेस की
इस मध्यवर्ती खेप्टा में जन-जागरण का
अमानक एठरा हर समय सामने मौजूद
रहता है।

शूस्टर : अब तो बरीब करोब उसे पार कर लिया

गया है ? सब जेल में हैं या फाँसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

करार : अभी वे निश्चय नहीं हुए हैं और मुझे भय है कि कमी नहीं होगी।

शूटर : तो उनकी बर्से पाठाला मैं हूँ ?

करार : निश्चित रूप से।

शूटर : या ईश्वर तुम तो अनावश्यक रूप से निराशावादी हो।— मुझे अब चलना चाहिए, जेम्स !

करार : (हाथ धाले बढ़ाकर) मुड नाइट बार्ज ।

शूटर : मुड नाइट ।

(हाथ धालने के बाद शूटर का प्रस्थान ।
 डारपास का उच्च पुलिस अधिकारी के
 धाने की सूचना देता ।)

डारपास : प्रतीक्षा करने को कहूँ ?

करार : धाने दो, धाने दो ।

(अधिकारी का प्रवेष्ट और ईस्मूट ।
 करार के इधारे पर धानने कुर्सी पर
 बैठना ।)

अधिकारी : हुजूर, धानाद

करार : (गरजकर) इसमें पुसिस की कोई बहादुरी नहीं । अंग्रेज सागर-साम्राज्य के स्वामी इस तरह की बहादुरी पर गर्व करने से नहीं हुए हैं ।

अधिकारी : हुकूम -

करार : यह तो एक हत्या थी । अकेले घादमी को हत्या पुसिस की एक पूरी अटलियन की मदद से ! क्या तुम्हें इस पर गर्व है ?

अधिकारी : बिल्कुल नहीं हुजूर

करार जब तक यथापास करार है तब तक पुसिस के सिर पर भारी फर्सन है । अंग्रेजों की काँट के बंदी जसगाँव के बंदी व दूसरे क्रांतिकारी जो भी पकड़े गये हैं वे पुसिस की योग्यता के प्रमाण नहीं हैं । उनमें से अधिकांश ने अपने आपको आपही छौप दिया था या दुर्भाग्यवश अचकर में आगये ।

अधिकारी : हमारा संगठित प्रयास चल रहा है । हम पूरी कोशिश कर रहे हैं ।

करार : डैम तुम्हारी कोशिश डैम तुम्हारा प्रयास ।
मैं जो चाहता हूँ वही चाहता हूँ ।

अधिकारी वही होगा, हुजूर ।

केदार मैं नहीं चाहता कि स्काटलैंड यार्ड के अधिकारी हमें यहाँ बुलाने पड़ें । उससे यहाँ की पुलिस की प्रतिष्ठा को भङ्गका सगेगा ।

अधिकारी उसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, हुजूर ।

केदार तो आओ और तभी घाना जब

अधिकारी : तभी हुजूर तभी हुजूर ।

(अधिकारी का सैस्यूट काटके जाना ।
केदार का अपनी काइल पर नोट लिखने लगना ।)

दृश्य पांचवा

बाहीर, सेंट्रल जेल के भीतर फंसीभर का लहजा

२३ मार्च १९३९, दिन का तीसरा पहर

(कांती की सजा पाये हुए बंदियों में भगतसिंह मुखर्जी और राजगुरु अपनी अपनी कोठरियों में मौजूद हैं। वहीं समीप बूतरे लखौर बड़मण्डल जेल के अभियुक्त सरदारसिंह, जहांगीरीलाल बर्मपाल और जयप्रकाश भी बंद हैं। प्रातः अदालत से उन्हें अस्सी ही लौटा दिया गया है और उनकी कोठरियों में बन्द कर दिया गया है और तीसरे बहर तक जेल के सभी बंदी बार्कों में भोजन दिये गये हैं। और सब बन्दों का पहरा लगा दिया गया है। रोज से भिन्न हलबल से बंदियों को किसी नई घटना का आभास हो रहा है। भगतसिंह अपनी कोठरी के दरवाजे पर लड़े लड़े लोच रहे हैं।)

भगतसिंह : आधाएँ आधादाएँ सब समाप्त हो चुकी है, इन कपड़ों को छोड़कर अपनी कही जाने वाली बिगो बीज का मैंने नहीं रखा है। सब बाट ही है। माह का दापरा सब बटुस

सँकरा होगया है । वह इस धारीर तक सिमट कर रह गया है । कुछ घंटों बाद इस धारीर का मोह भी छूट जायगा । जीव की वह परम घाँठ अबस्था होगी ।

(राजगुरु की कोठरी से पाने की आवाज आती है : भगतसिंह का ध्यान भंग हो जाता है । वह सुखदेव को आवाज देता है ।)

सुखदेव सुखदेव !

सुखदेव दोसो !

भगतसिंह : रघुनाथ मस्ती के आसम में लोया जा रहा है ।

सुखदेव : असहक से मिसने की तैयारी में है ।

भगतसिंह : और तू ?

सुखदेव : मैं महात्मा गाँधी को पत्र लिख रहा हूँ ।

भगतसिंह : महात्मा गाँधी को ?

सुखदेव : हाँ ।

भगतसिंह : कि फिर वायसराय से मिलें ?

सुखदेव : नहीं मैं प्राणभिक्षा को नफरत करता हूँ । इसके लिए हमने यह पय नहीं चुना था ।

भगतसिंह : यही तो यही तो ।

सुखदेव : इस संबन्ध में मैंने महारमा से प्रार्थना की है कि अगर आप हमारी सहायता नहीं कर सकते तो कृपया हम पर रहम कीजिये और हमें भ्रष्टा छोड़ दीजिये। आप अपनी असाहसों के द्वारा हममें फल और विश्वासघात के बीज डाल रहे हैं। आपकी असीमित प्रतिभारियों के प्रति उत्पन्न हो रही सामूहिक सहानुभूति और सहायता की भावना का नष्ट कर रही हैं और सरकार उससे लाभ उठाकर हमें बेवर्ती से कुबल रही है।

भगतसिंह : तुम्हारा क्या मत है कि महारमाजी का तथ्यों से धमकाना है ?

सुखदेव : नहीं लेकिन जनता को भी तो बताना है।

भगतसिंह : ऐसा पत्र लिखना न काफी खर नहीं है। यदि है ?

सुखदेव : जवाब की तो यों भी आना न थी। हमारे पत्र और उनके विचार उतने विभाग में कुछ देर उपरन पुपन मफाते रहें और पत्रों की यों ठर पढ़ें ब प्राय रर ।

(इसी समय एक बार्डर आता है और तीनों बंदियों को गहने के लिए पानी दे जाता है । तीनों इतनी मात्रा से गहना-बोना करते हैं । कोई भी किसी तरह की कमजोरी नहीं दिखाता ।)

सुगंदेव : भगत, गहा चुका ?
 भगतसिंह : हाँ भाई और रगुनाथ ?
 सुगंदेव : नाथद वह भी गहा चुका है ।
 भगतसिंह : तो जरा सेमिन स प्रागिरी मुनाकात बर
 सू ।

सुगंदेव : सेमिन से ?
 भगतसिंह : हाँ भाई वकील गाहेव से गड़ खिनाब मगा
 सी थी । सब पड़ गया है । कुछ धाड़े से
 पत्नी बचे हैं ।
 सुगंदेव : तो पड़ सो ।

(भगतसिंह अपनी बोटरी में पुस्तक पढ़ने में लसीन हो जाता है । कपड़ों के रंग धुल जाते हैं । अंध बर प्रकाश बढ़िन कर दिवा जाता है । तापमान का घाबारा होने लगता है । उसी समय घेग के बार्डर और गिपाही प्रवेग करने हैं । भगतसिंह की

(इसी समय एक बार्डर घसा है और तीनों बंबियों को लहाने के लिए बानी के जाता है । तीनों इतमीमान से महान्मा-श्रीमा करते हैं । कोई भी किसी तरह की क्लबजोरी नहीं रिपसा ।)

मुप्रबेब : भगत कहा बुना ?

भगतसिंह : हां भाई और रगुनाथ ?

मुप्रबेब : रामद वह भी कहा बुना है ।

भगतसिंह : तो परा सेनिन स प्रापिचे मुमाकान कर सू ।

मुप्रबेब : सेनिन से ?

भगतसिंह : हां भाई वकाल गादेव ने मड़ किया ब भगा सी थी । सब पड़ गया है । कुछ धाड़े से पन्ने बचे हैं ।

मुगबब : तो पड़ सो ।

(भगतसिंह अपनी बोठरी में पुस्तक लहाने में लग्यीन हो जाता है । कुछ देर प्राप्ति रहती है । बंब पर ब्रजान मद्रिन कर रिवा जाता है । रामदबान का धाभात होने लगता है । उसी समय पैग के बार्डर और निपारी प्रवेत करने हैं । भगतसिंह भी

कोठरी खोलते हैं, पर वह अपनी पुस्तक
पढ़ने में डूबा रहता है।)

भगतसिंह (एक हाथ से चापसुकों को रीककर) ठहरो
ठहरो इस समय एक क्रांतिकारी दूसरे
क्रांतिकारी से मिल रहा है।

(सब घटबघटकर एक दूसरे का मुँह
निहारते रहते हैं। किसी से कुछ करते
नहीं बन पड़ता। इसी समय पुस्तक समाप्त
करके भगतसिंह उसे एक घोर उदात्तता हुआ
हां अब क्यों कह कर झड़ा हो जाता है।
तभी मुकद्देब की कोठरी से हायापार्स होने
घोर भगाने की चाहट सुनाई पड़ती है।)

भगतसिंह मुकद्देब मुलदव ! क्या बात है ?
घाबर (भगतसिंह की कोठरी के सामने आकर) यह
जैस का कायबा है याहू ! मैं तो हुकुम का
जायेदार हूँ। हसनड़ी सगाने का हुकुम मिला
है। हसनड़ी सगबा सीजिये। मरे
हुकामे पर तरस खाएय। आप तो समझदार
हैं।

(गजब घाबर बौद्ध लपटा है।)

भगतसिंह : साधो पहना दो, याबा । हथकड़ी या बिना हथकड़ी इसमें क्या फर्क पड़ता है ।

बाबर (जोठरी दोस्तकर) भाप किसने भाले हैं ।
घोह भाप रसन हैं घोर हम सोम

(भगतसिंह के हाथ बंधे करके हथकड़ी लगाता है । उसे जोठरी से बाहर निकाल लेता है । सुखदेव घोर राजगुरु भगतसिंह की हथकड़ी पहने देखते हैं तो वे भी प्रतिरोध बंद करके हथकड़ियाँ लगवा लेते हैं । इस बीच इम्कताब 'जिग्साबाद' के गारे घोर घोर से लगते रहते हैं । उनके गारों के साथ सारी जेल की कीठरियों से गारे लगाने जाते हैं । असंख्य कठों की घाबाजों प्रनिष्कनित होकर बापुर्मंडल में हृदयमय मचा देती हैं । जेल के बाहर जमता के गारे इन घाबाजों को बुझना कर देते हैं ।)

भगतसिंह : (तापन की कीठरियों से भ्रांक रहे ताबियों से)
घरक्या भाई जात है । हम मुघायना करने जात है ।

(घोर गान टूट् जाती घर की जग बड़ने है ।)

दृश्य छठा

लाहौर जेल सभ के सामीप भी सन्तानम का बंगला

२३ मार्च १९३७ सुभाषित से कुछ पूरे

(बंदित सन्तानम बंगले के बाहर सानि में कुर्तों पर बंटे हैं ।
बात ही बूझती कुर्तों पर बाहर से घासे हुए कोई मिस्टर राय हैं ।
राय कुर्तियां घाली पड़ी हैं ।)

राय अरुणोप गुप्तानम ही जमता के
घागों के ठारे जस दीवार के पीछे मौत
का इन्तजार कर रहे हैं ।

(जेल की दीवार की ओर संकेत करता
है ।)

सन्तानम हम उनसे इनसे करीब हैं पर बिपद्य हैं ।

राय : गांधी हरबिन केबट को सोप मग्नीस कहें तो
उसमें क्या भूट है ?

सन्तानम : हरबिन, उनसे महारमा जी के घागे बिबराठा
जाहिर कर दी जमे वह प्रयत्न ही हो ।

राज : सब झरझर । अंधेज बदमा सेने में पूरा
निर्दम होला है ।

सन्तानम : धीर कदाची-काग्रेस तक फांसी स्वमित
रसने की बकबात

राज : छू छा एहसान ।

सन्तानम : गांधी जी ने ठीक हो उतर दिया, नहीं इस
कृपा की जरूरत नहीं ।

राज : यह एक सुनहरा घमसर या बिससे साथ
उठामा या सजता था ।

सन्तानम : सत्ता के घमंड में भादमी घावा हो जाता
है ।

राज : ब्रिटिस-साभ्राज्य की अर्धी में ये कीसे ठोकी
या रही है ।

सन्तानम : धीर के उसे घमर करने की बेप्टा समझ
रहे है ।

राज : इन फांसियों के परिणाम का उन्हें पता
नहीं है ।

सन्तानम : भारत धीर इंग्लैंड के बीच में इन युवकों
की लार्जे सदा लड़ी रहेंगी ।

राय : सदमावना वा सामेन्ट समाप्त होगया है ।
पुस्तक घायब बनो न बन सकेगा ।

सन्तानम : गांधी और जवाहर के नाम से भी अधिक
आज भगतसिंह वा बा नाम लोगों में प्रिय
होसया है । उसकी इस शक्ति से अंग्रेज
सरकार डरती भी है ।

राय : मैं कहना हूँ जोविन भगतसिंह से उन्हें कम
गतरा है । मून भगतसिंह ब्रिटिश सिंह को
बन्धा हो घटा जायगा । तारे देग में
घर घर गली गली भगतसिंह पैदा हो
जायंगे ।

("ती समय जेल के भीतर 'इन्कलाब
सिंहाबाद' के नारे मगते हैं ।)

सन्तानम : (चौंकर) ऐं, यह क्या ?

(पहले से भी अधिक जोर से तारा बोहरापा
जाता है ।)

राय : क्या मामला है ?

(तारा जोर जोर से मगता है । तारा
जो नारों से गुन उठता है ।)

सन्तानम : तो क्या ये फाँसी पर चढ़ाये जा रहे हैं ?

(नारों के तुमुल बेग से बीबारे परबरा
बळी ह ।)

राज सेकिन साम को फांसी सवाने का तो कायदा
नहीं है ।

(नारे बराबर सब रहे हैं और हर बार
पहले से ठीक । बसे बेल में कोई
अनुशासन नहीं रहे क्या हो । बाहर अनता
न जाने कहां से दूट पड़ती है और नारों
को घसी तरह बोहराती है ।)

सन्तानम : फांसी का तख्ता गिरेगा तो यहाँ से सुनाई
पड़ेगा । अभी तक फांसी दी तो नहीं गई
है, फिर भी सरदार किशानसिंह को सबर तो
कर दू । (बेनीचोन उठाकर) हसो सरदार
किशानसिंह मैं सन्तानम । जेस इम्कनाब
जिदाबाद के नारों से हिस रहा है । न
जाने क्या बात है ? कहीं—कहीं—घाप भा
रहे हैं, घादये ।

(वैश्य में तख्ता बिरने का बड़का होता
है । उसके बाद बेल में जो हाहाकार

मचता है उससे घाकाटा फटने का सा भ्रम
होने लगता है ।)

राज : मामूम पड़ता है जैसा खरम होगया ।

सप्तताम : बरूर । बेभारा बूढ़ा किदानसिंह ।

राज : बेभारा नहीं । सारे भारत के पिता उसने
मान्य से ईर्ष्या करते हैं ।

(सरदार किदानसिंह बहुराजा से प्रवेद
करते हैं ।)

किदानसिंह : पांडित जी हाय मेरा भगत ! उसने कोई

सप्तताम : (फटकर सहारा देते हुए) मुझे दुःख है
मुझे दुःख है सरदारजी ! नहीं मुझे गर्व है ।
सारे साहौर को उस पर गर्व है । सारे
भारत को उस पर गर्व है ।

राज : दाहीद ने पिता की घागों में घांसू का क्या
नाम । देखता उसके रास्ते में पुत्र बिद्वाने
हैं ।

किदानसिंह : भगत भगत ! मेरे भगत ! तेरा प्रभागा
पिता ।

(बैल के बाहर घोर भीतर दोनों घोर
भरती घोर घाकाटा को हिलानेवाले नारे

सपते हैं मयतसिंह जिवाबाब' 'मुखदेव
 जिवाबाब' 'राजगुप्त जिवाबाब' । मंच पर
 एक बम प्रवेरा कर दिया जाता है । फिर
 भी नारे बराबर सपते रहते हैं । बराबर
 लगते रहते हैं । सन्तानम और रास सरबार
 क्रिशनसिंह को बोलों और से सम्भालते हैं ।)

(धीरे धीरे पर्व गिरता है)

नाटक के आधार पर

यशपाल : सिंहाबसोकन भाग १, २ ३

पतुवेंबी बनारसीबास : यश की धरोहर

” रामप्रसाद विस्मिस की आत्मरूपा

गुप्त मन्मथनाथ भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का
इतिहास

बंसल रतनसास मृत्युञ्जय सरदार भगतसिंह
बन्धोखर आज़ाद

पयिक : सरदार भगतसिंह

महद जवाहरसास मेरी कहानी

पट्टामि सोतारमैया : कांग्रेस का इतिहास

मासिक साप्ताहिक दैनिक पत्र-पत्रिकाएं और रिपोर्टें

